



KĀVYĀDARŚA

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

202 81.1

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A.

CALCUTTA UNIVERSITY



080
c.u.
151/4

PUBLISHED BY THE

UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939



BCU 735

1.18.300

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.



HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.



CONTENTS

Preface	xvii
---------	-----	-----	-----	-----	------

CHAPTER I

	Sloka
मङ्गलाचरण (वग्नाः शैलः वहेद्दः)	...
वाक्प्रशंसा (केन वसुधासः)	...
काव्यप्रशंसा (श्रुतः दणः वसुधासः)	...
दुष्टकाव्यनिन्दा (श्रुतः श्रुतः दणः श्रुतः)	...
काव्यलक्षण (श्रुतः दणः श्रीः सत्तः)	...
काव्यभेद (श्रुतः दणः श्रीः दणः)	...
महाकाव्यलक्षण (श्रुतः दणः केनः सत्तः)	...
गद्यकाव्यभेद (श्रुतः दणः श्रीः दणः)	...
मिश्रकाव्यभेद (श्रुतः दणः श्रीः दणः)	...
श्लेषगुण (श्रुतः दणः श्रीः दणः)	...
श्लेषगुणलक्षण (श्रुतः दणः श्रीः दणः श्रीः सत्तः)	...
प्रसादगुणलक्षण (दणः दणः श्रुतः दणः श्रीः सत्तः)	...
समतागुणलक्षण (सत्तः दणः श्रीः दणः श्रीः सत्तः)	...



	Sloka
माधुर्यगुणलक्षण (ལྷན་པ་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	51
अनुमास (རྗེས་སུ་ཁྲིད་)	55
यमक (རུང་དང་ལྔན་པ)	61
सौकुमार्यगुणलक्षण (འིན་དུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	69
अर्थव्यक्तिगुणलक्षण (རོན་གསལ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	72
उदारत्वगुणलक्षण (རྒྱ་ཆེར་ཉིད་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	76
ओजोगुणलक्षण (བརྗོད་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	80
कान्तिगुणलक्षण (མཛེས་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	85
समाधिगुणलक्षण (ཉིང་ངེ་འཛིན་ཡོན་ཏན་གྱི་ མཚན་མ)	93
काव्यकारण (ལྷན་ངག་གི་ རྒྱ)	103

CHAPTER II

अलङ्कारलक्षण (རྒྱན་གྱི་ མཚན་མ)	1
सभावोक्ति (རང་བཞིན་བརྗོད་པ)	8
उपमालक्षण (དཔེའི་ མཚན་མ)	14
धर्मोपमा (ཆོས་ཀྱི་ དཔེ)	15
वस्तूपमा (དངོས་པོའི་ དཔེ)	16
विपर्यासोपमा (བརྗོད་པོའི་ དཔེ)	17



CONTENTS

vii

Sloka

अन्योन्योपमा (चरु-कुसुम-द्वय)	...	18
निधमोपमा (दैत्य-च-कुसुम-द्वय)	...	19
अनियमोपमा (दैत्य-कुसुम-द्वय)	...	20
समुच्चयोपमा (चरु-कुसुम-द्वय)	...	21
अतिशयोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	22
उत्प्रेक्षितोपमा (चरु-कुसुम-द्वय)	...	23
अद्भुतोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	24
मोहोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	25
संशयोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	26
निर्णयोपमा (दैत्य-चरु-द्वय)	...	27
इलोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	28
समानोपमा (कुसुम-कुसुम-द्वय)	...	29
निन्दोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	30
प्रशंसोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	31
आच्छिद्योपमा (कुसुम-कुसुम-द्वय)	...	32
विरोधोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	33
प्रतिषेधोपमा (कुसुम-चरु-द्वय)	...	34



	Sloka
चटुपमा (सटस'पदि' दपे)	35
तत्त्वाख्यानोपमा (दे'छेद'चङ्गेद'पदि' दपे)	36
असाधारणोपमा (घड'सोद'सिड'पदि' दपे)	37
अभूतोपमा (घुद'सिड'दपे)	58
असम्भावितोपमा (छेद'प'सिड'पदि' दपे)	39
षट्पमा (सट'पदि' दपे)	40
विक्रियोपमा (णस'दगुद'दपे)	41
मालोपमा (घुद'पदि' दपे)	42
वाक्यार्थोपमा (दण'देड'दपे)	43
प्रतिवस्तूपमा (छे'प'ददेस'पदि' दपे)	46
मुल्ययोगोपमा (सटुदस'प'दण'सुद'पदि' दपे)	48
हेतूपमा (कु'दपे)	50
उपमादोषविचार (दपे'पि' सुड'पु' वदण'प)	51
उपमाबोधकशब्द (दपे'पि' देड'प'ददुण'पदि' केण)	57
रूपकलक्षण (गटुणस'पु' सड'ड'स)	65
समस्तरूपक (गटुणस'उड'प'सुस'प)	65
व्यस्तरूपक (गटुणस'उड'स'प'सुस'प)	66



CONTENTS

ix

Sloka

समस्तव्यस्यरूपक (गज्जुगस'उर'वसुस'दर'स'वसुस'व) ...	67
सकलरूपक (सप्रर'दग'गज्जुगस'उर) ...	69
अवयवरूपक (उ'गस'गज्जुगस'उर) ...	71
अवयविरूपक (उ'गस'उर'ग्री' गज्जुगस'उर) ...	72
एकाङ्गरूपक (यर'यग'गज्जुगस'उर) ...	74
युक्तरूपक (रग्रीगस'वस'यर'यर' गज्जुगस'उर) ...	76
अयुक्तरूपक (रस'सि'र'ग्री'यर' गज्जुगस'उर) ...	77
विषमरूपक (सि'स'र'य'ग्री'यर' गज्जुगस'उर) ...	78
सविशेषणरूपक (रुर'यर'दर' वर'गज्जुगस'उर) ...	80
विरुद्धरूपक (रग'य'य'ग्री'यर' गज्जुगस'उर) ...	82
हेतुरूपक (ग्री' गज्जुगस'उर) ...	84
विशेषरूपक (रुर'यर' गज्जुगस'उर) ...	86
उपमाव्यतिरेकरूपक (रुर'दर'र'ग'य'उर'ग्री'यर' गज्जुगस'उर) ...	87
आक्षेपरूपक (रुर'यर' गज्जुगस'उर) ...	90
समाधानरूपक (स'र'र'ग'गज्जुगस'उर) ...	91
रूपकरूपक (गज्जुगस'उर'ग्री' गज्जुगस'उर) ...	92
तत्त्वापह्नवरूपक (र'र'र'ग'गज्जुगस'उर) ...	93



	Sloka
दीपक (गणन्य-प्रेर)	96
मालादीपक (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	106
विरुद्धार्थदीपक (गणन्य-प्रेर रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	108
एकार्थदीपक (रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	110
त्रिरुद्धार्थदीपक (प्रेर-प्रेर रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	112
आवृत्तिभेद (प्रेर-प्रेर प्रेर-प्रेर)	115
आक्षेपभेद (गणन्य-प्रेर प्रेर-प्रेर)	119
धर्माक्षेप (रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	127
धर्म्यक्षेप (रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	128
कारणाक्षेप (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	130
कार्यक्षेप (गणन्य-प्रेर गणन्य-प्रेर)	133
अनुशाक्षेप (रङ्ग-प्रेर गणन्य-प्रेर)	134
प्रभुत्वाक्षेप (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	136
अनादराक्षेप (गणन्य-प्रेर गणन्य-प्रेर)	138
आशीर्वचनाक्षेप (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	140
परुषाक्षेप (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	142
सावित्र्याक्षेप (प्रेर-प्रेर गणन्य-प्रेर)	144



CONTENTS

xi

	Sloka
यत्नाक्षेप (འབད་པས་ འགོག་པ)	146
परवशाक्षेप (གཞན་དབང་ འགོག་པ)	148
उपायाक्षेप (ཐབས་ཀྱིས་ འགོག་པ)	150
रोषाक्षेप (ཁྲོ་བས་ འགོག་པ)	152
अनुकोशाक्षेप (མྱིང་རྩེས་ འགོག་པ)	154
अनुरायाक्षेप (འགྱེད་པས་ འགོག་པ)	156
संशयाक्षेप (ཐེ་ཚོས་ འགོག་པ)	158
मिष्टाक्षेप (སྤྱར་བས་ འགོག་པ)	160
अर्थान्तराक्षेप (རོན་གཞན་ འགོག་པ)	162
हेत्वाक्षेप (ཐུས་ འགོག་པ)	164
अर्थान्तरन्यास (རོན་གཞན་བཀོད་པ)	166
अर्थान्तरन्यासभेद (རོན་གཞན་བཀོད་པའི་ དབྱེ་བ)	167
व्यतिरेक (ཁྲོག་པ་ཅན)	177
एकव्यतिरेक (གཅིག་གི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	178
उभयव्यतिरेक (གཉི་གའི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	180
सहलेखव्यतिरेक (སྤྱར་བ་ཅན་གྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (འགོག་པ་ཅན་དང་གཏན་ཚིགས་ ཀྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	183



	Sloka
प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक ($\text{द्वेयस्य च स एव सत्त्वस्य च द्वेयस्य च}$)	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	189
विभावना (द्वेयस्य च)	196
समासोक्ति ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च}$)	202
समासोक्तिभेद ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	205
अपूर्वसमासोक्ति ($\text{द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	210
अतिशयोक्ति ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	217
उत्प्रेक्षा ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च}$)	218
उत्प्रेक्षालयप्रकाश ($\text{सत्त्वस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	231
हेतुभेद ($\text{द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	232
सूक्ष्म (द्वेयस्य च)	257
लेश (द्वेयस्य च)	262
कम (द्वेयस्य च)	270
मेयरसनदुर्जस्विलक्षण ($\text{द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	272
पर्यायोक्त ($\text{द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च द्वेयस्य च}$)	292



CONTENTS

xi

Sloka

समाहित (गुरुद्वयव्यवस्था)	...	295
उदात्त (सुखे)	..	297
अपहृति (वस्तुनिरूपण)	.	301
शेष (सुखव्यवस्था)	..	306
शेषभेद (सुखव्यवस्था निरूपण)		311
विशेषोक्ति (सुखव्यवस्था निरूपण)	.	320
मुख्ययोगिता (सुखव्यवस्था निरूपण)		327
विरोध (सुखव्यवस्था)	...	330
अप्रस्तुतप्रमाण (सुखव्यवस्था निरूपण)	...	337
व्याजस्तुति (सुखव्यवस्था निरूपण)	.	340
निर्वाण (सुखव्यवस्था निरूपण)	...	345
सहोक्ति (सुखव्यवस्था निरूपण)	.	348
परिवृत्ति (सुखव्यवस्था निरूपण)	...	348
आश्रित (सुखव्यवस्था निरूपण)		354
संस्तुति (सुखव्यवस्था निरूपण)	...	356
संस्तुतिभेद (सुखव्यवस्था निरूपण)	.	357



	Śloka
भाषिक (རྟོག་ངས་པ་ཅན)	360
भाषिकभेद (རྟོག་ངས་པ་ཅན་གྱི་ རྟེན་པ)	361
CHAPTER III	
यमक (རྟེན་པ་ཅན)	1
गोमुत्रिका (བ་ལང་གཅིན)	78
अर्द्धभ्रम (ཕྱིད་འཁོར་པ)	80
सघंतोभद्र (ཀྱན་དུ་བཟང་པོ)	80
स्वरस्वानवर्णनियम (རྟེན་ངས་དང་གནས་དང་ ཡི་གེ་རྣམས་ ཀྱི་ ཇེས་པ)	83
प्रहेलिका (གཤ་ཚིག)	96
प्रहेलिकास्थान (གཤ་ཚིག་གི་ གནས་པ)	97
समागता प्रहेलिका (ཀྱན་དུ་ཚིག་ས་པའི་ གཤ་ཚིག)	91
वञ्चिता प्रहेलिका (བསྐྱ་པའི་ གཤ་ཚིག)	91
व्युत्क्रान्ता, (ཇེས་པ་ བྱལ་པ)	99
प्रमुचिता (རབ་བཅོས)	99
समानरूपा (མཐུན་པའི་གཞུགས)	100
एकता (ཅུབ་མོ)	100
संख्याना (གྲངས་ཉིད)	101



CONTENTS

xx

Sloka

•प्रकल्पिता (रघु-वन्दना-श्रुति)	..	101
नामान्तरिता (श्रुति-दु-दुष्ट-व-श्रुति)		102
निवृत्ता (वृत्ति-व-व)	...	102
समानशब्द (शब्द-व-व)		103
संमूह (श्रुति-व-व)	.	103
परिहारिका (श्रुति-व-व)		104
एकच्छा (वृत्ति-व-व)	...	104
उभयच्छा (वृत्ति-व-व)	.	105
संकीर्णा (श्रुति-व-व)	..	105
शेषविभाग (श्रुति-व-व)	...	125
अपार्थ (श्रुति-व-व)	...	128
व्यर्थ (श्रुति-व-व)	...	131
एकार्थ (श्रुति-व-व)	..	135
ससंशय (श्रुति-व-व)		139
अपकम (श्रुति-व-व)	...	144
शब्दहीन (श्रुति-व-व)	...	148
यतिभ्रष्ट (श्रुति-व-व)	...	152

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyādarśa* of D a n ḍ i n . It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late R a i S a r a t C h a n d r a D a s Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize D a s ' s manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyādarśa* was translated into Tibetan by Ś r i l a k ṣ m i k a r a and S o ṇ . s t o n . L o . t s ā . b a and others in the great Sa skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition, C o r d i e r , III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by M i . p h a m . d g e . l e g s . r n a m r g y a ṁ . As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyādarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand, so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.



In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled, e.g., I. 95 उद्गण्णं ; 103 मार्गः, II. 9 वण्णं, 10 धूरिण्णतेज्जणः ; etc. Though such doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides there are several inaccuracies that have been corrected by me, e.g.

Chap. I. 30^a श्रुि for श्रुैश , 42^c एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^a बध्नन्त्योजस्विनीगिरः ; for बध्नन्त्योजस्विनीगिरः 90^a ° पातधौत for °पातधौत.

Chap II. 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो ; 6^a व्याज for व्यज ; 11^a बध्नन्त्रेणु for बध्नन्त्रेणु ; 14^a प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं ; 20^a पद्यन्तावत् for पद्यन्तावत् ; 24^a ° पक्षं सुभ्रु for पक्षमुद्रु ; 27^a निर्णयोपमा for निर्णयोपमा ; 28^a सञ्ज for सञ्जस्य ; 38^a प्रभासारः for प्रभासारं . 47^a पारिजातस्य for परिजातः ; 49^a रक्षायै for राक्षायै ; 49^a सावलेषा for सावलेया ; 54^a सौभाग्यं for सौभाग्यः ; 58^a संवादि for सम्वादि ; 81^a सुद-सु for सुद-स्य ; 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं ; 100^a देवतार्थयः for देवतार्थयः ; 120^a पुण्येः for पौण्यः ; 152^a अयतापि for अयातापि ; 156^a सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^a किंवा for किम्वा ; 155^a °संवादि for °सम्वादि ; 165^a दिशान्येपि for दिशान्येपि , 188^a रे-दृणस्य for रे-दृणस्य ; 234^a उद्दिष्टं for दृष्टं , 274^a वृत्तिः for वृत्तिः ; 281^a स-व्य for स-व्यस्य ; 302^a श्रुणस्य for श्रुण ; 329^a मृगाक्षीणां for मृगाक्षीणान्.

Chap. III 8^a किन्निन्दं for कीन्निदं ; 23^a दशां for देशां ; 118 कलमायिणि for कलमायिणि ; 134^a श्रुि for श्रुैश ; 174^a ° संस्कृतामत्रः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभर्तुं सत्येन च चित्ताहर्षं ; 176^a ° गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमस्य— which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text, 176°- 'अथागमविरोधस्य प्रवेश उददिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः— which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दार्ष for नित्यं ; 2° उपलक्ष्य for उपलब्ध , 10° अलंकारः for अलंकाराः , 12° त्रिविद्युणा for त्रितार्पुणा ; 13° अंश for अंग . 15° आयत्तं for अपेतं ; 19° सर्गान्ते. for वृत्तान्तेः ; 19° रञ्जनं for रञ्जकं ; 20° वर्ज्यते for दुष्यति , 22° कथनं for वर्णनं ; 25° कारणं for लक्षणं , 26° साध्यासत्त्वं for सोऽङ्गुमासत्त्वं , 27° आश्रयः for उच्छ्रयः ; 29° न ते for नेते . 32° ग्रामाः for आर्या . 36° स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37° स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आगारादीनि . 38° कथादि for कथाहि , 38° पठ्यते for वध्यते , 38° स्वाहुः for प्राहुः ; 39° शाम्यादि for शल्यादि ; 42° लक्ष्यते for दृश्यते ; 49° आननं for मुखं ; 50° वर्तते for वर्धते ; 51° स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि . 53° तदा for ततः ; 54° ईप्सितं for इष्यते ; 57° कर्तुं for हन्तुं , 63° वैरम्यायैव कल्पते for वैरम्याय प्रकल्पते ; 67° परं for स्वरं ; 67° हि for तु ; 71° मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः 78° अन्यच्च for अन्यत् , 85° विद्यते for दृश्यते ; 89° यथा for जनाः ; 97° सती for स्मृतौ ; 99° इह for इमे , 99° अन्यत् for अप्यत् .

Chap. II. 2° प्रतिमस्कर्तुम् for परिमस्कर्तुम् ; 3° अथ for अन्यत् ; 6° श्लिष्ट for श्लेष ; 7° संसृष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिक्षिप्य for परिभ्रम्य ; 14° प्रदर्श्यते



for निदर्शयते : 15° प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् : 17° त्वद् for तव , 28° मता for स्मृता ; 30° मता for स्मृता ; 31° इष्यते for उच्यते ; 33° उदिता for मता ; 40° प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42° एव सा for मता ; 48° समाहृत्य for समीकृत्य ; 50° स्मृता for मता ; 54° इत्येवमादि for इत्येवमादी ; 54° च for एव ; 56° त्वत् for तव ; 60° अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः , 62° संहन्धे for सन्धने ; 64° सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः, 65° इष्यते for उच्यते ; 71° धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः, 74° मुग्धे for मुग्धः ; 75° च for अपि ; 82° पश्यति for कल्पते ; 97° भवाय च नताङ्गीनां for स एकावनताङ्गीनां ; 100° देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105° वर्णात्पलं for नीलात्पलं ; 113° अपि for तथा ; 114° अनुगति for अनगति ; 115° इत्यपि for एव च ; 116° कुटजोन्नमाः for कुटजद्रुमाः , 117° वर्गं for वृन्दं ; 117° अथ for एष ; 118° अथ for अतः , 128° तत्त नाधयः for न तदाधयः ; 129° अतः for एव and तद् for यद् ; 132° न्वहं for न्विदं ; 137° प्रत्याचक्षाणया for इत्या-चक्षाणया ; 137° विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137° ईदृशः for उच्यते ; 144° प्रतिबन्धिनः for परिपन्थिनः ; 145° एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या ; 146° मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149° उपसूचनात् for उप-दर्शनात् ; 153° निवार्यते for निषिध्यते ; 154° जीर्णं for नीलं , 161° दर्श-यित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162° तृप्यति for शाम्यति ; 163° अयं निवर्त्यते for यन्निवार्यते , 172° आह्लादयति for आनन्दयति ; 180° च्छुविः for द्युतिः ; 182° इयता for अयन्तु , 182° जलात्मा for जडात्मा ; 186° सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते , 190° लोलदृष्टि for लोलनेत्रं ; 192° वियदम्भगोः for चन्द्र-हंसयोः ; 192° चन्द्रहंसयोः for वियदम्भगोः , 195° अदर्शयत् for अदर्शयत् ; 197° सूक्ष्म for शुद्ध ; 199° हेतुर्कं for हेतुजं ; 207° सच्छायः for शुच्छायः,



PREFACE

xxi

215° अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते , 215° स्थितेः for स्थितिः , 219° उत्सुकः for उद्यतः ; 222° चैवन्तु for चैव्येवं , 222° कथ्यते for वार्यते , 224° जन्यते for जायते ; 226° अनुन्मतो for उन्मतो , 230° उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां , 236° मनोहारोचके for मदनगन्यातुरे ; 240° कृता for स्थिता ; 243° व्याक्रियन्ते for व्याहियन्ते , 245° आश्रये for आश्रमे ; 260° त्वदर्पित for मदर्पित , 266° एव for एष ; 276° अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277° सैवावन्तो for सैषा तन्वी ; 283° देवो for तन्वी ; 291° इति मुरुः for एवमुक्त्वा , 295° दैवबलात् for दैववशात् , 296° तस्याः for अस्याः ; 296° नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300° अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302° शीता किल for मयि शीता ; 304° नाम नो for नामतो ; 311° वा for च ; 323° कुलं for बलं , 325° जगन्नयं for नभस्तलं ; 326° कल्प्यते for कल्पने ; 327° स्मृता for मता ; 329° अपि for यः ; 335° लोचनम् for लोचने ; 337° अप्रकान्तेप्सिता for अप्रकान्तेषु या , 344° प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346° एव for एष ; 348° सह-भावस्य for सहभावेन ; 348° यथा for स्मृता ; 349° पाण्डुराः for पाण्डुराः ; 350° अध्रुभिः for अश्रुभिः ; 352° निष्पत्तं for निदर्शनं ; 353° पाण्डुरं for पाण्डुरं ; 355° कीर्तितं for दर्शितं ; 356° संसृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते ; 360° यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6° साम्प्रतं for मत्पतिं ; 8° किन्निवदं for किनु ते , 21° वा for च ; 38° ईप्सिताः for ईहिताः ; 41° आमोद for आनन्द ; 41° न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55° तापनेन for सायनेन ; 63° पिष्टपस्य for विष्टपस्य , 80° आहुः for प्राहुः ; 111° तायवो for वायवो , 117° जनं for नरं , 119° रुषा for क्रुधा ; 127° च for वा ; 129°-° सोऽस्मद्दमय for देवैरहमस्मि ; 129° ऐरावतः for ऐरावणः ; 132° कुलं for बलं ; 132° न च ते कोपि for तव नैकोऽपि , 137°



अलङ्कृति. for अलङ्कृया . 145° अजाः for अगोः ; 146° न दोषं सूरयो यथा
for सूरयो नैव दूषणं : 153° एष for एवं . 156° यत्र for तत्र ; 158° वियुक्ता
for विमुक्ता . 158° मदनबाणा for स्मरस्य बाणा ; 158° मृगेक्षणा for वामेक्षणा ;
160° अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि . 161° न्यत्रं for न्यस्तं : 165° अस्पृशी
for असर्शः ; 174°-° सुगते' संस्कृतान्तरः [मल्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्य-
मेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176° प्रवेश उपदिश्यते for प्रधानमुपदिश्यते ;
184° सकल' for सफलः and निष्फलः for निष्फलः ; 185° कन्यका for
पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of
Dr. F. W. Thomas (J.R.A.S., 1903, pp 349 354) are noted below
for comparison :—

Chap I. 12° विविक्षणां for नितार्पणां ; 13° अंश for अग . 20° उपात्तेषु
सम्पत्तिः for उप-तार्पणम्पत्तिः ; 60° नियच्छति for निगच्छति . 62° एनं for एतं ;
80° एतद् for तद्.

Chap II. 2° प्रतिगंस्कृन्तुं for परिसंस्कृन्तुं , 10° परिक्षिप्य for परिवर्त्य , 62° संसन्धे
for सन्धने . 64° सूचिनः for सूचकः , 82° पर्यति for यस्यति , 134° यातव्यं for
याहि त्वं , 143° रन्ध्रावेक्षेण for रन्ध्रान्वेषण ; 148° त्वं for ते . 149° अस्त्यार्थस्य
for तत्त्यार्थस्यैव ; 155° सानुकोशमिबोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182° इयता
for अयं तु ; 197° सूक्ष्माम्बु for शुद्धाम्बु , 255° रागबालातपः for रविबालातपः ;
300° अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310° यद् for यत्तु ; 343° संसक्ता for संक्रान्ता ; 350°
अश्रुभिः for अक्षुभिः ; 364° एष for एव.

Chap. III. 38° वक्ष्यन्ते for वक्ष्यन्ते . 41° आमोद for आनन्द ; 70°
तस्यापि for तत्तापि ; 158° मदनबाणा for स्मरस्य बाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones, as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोद्गमाः for कुटजद्रुम. It seems that *ungama* in *Kutajoṅgama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit-*uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *puṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line



in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kaṭyādarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script, it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahamahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mangyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta.

July, 1939.

ANIKUL CHANDRA BANERJEE



KĀVYĀDARŚA



ལྷོ་བོ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པའི་
 ལྷན་ངག་མེ་ལོང་མ་ ཞེས་བྱ་བ་
 ལྷན་གཤིས་ཤན་ལྷན་
 བཞུགས་སོ །

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS



[1b] नम आर्यमञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དབལ་གནོན་རྒྱུ་པ་ལ་ ལུག་འཛལ་ལོ།

चतुर्मुक्तमुक्ताम्भोजवनहंसवधूर्मम ।

मानसे रमतां दीर्घं सख्यंशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་ གདོང་གི་ བད་ཚལ་གྱི།

ངང་པའི་ བྱ་མོ་ ཐམས་ཅད་དཀར།

དབྱངས་ཅན་མ་ རི་ ཁོ་ལོ་ཡི།

ཡིད་ལ་ རིང་དུ་ གནས་པར་མཛོད། ॥ १ ॥

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।

यथासामर्थ्यमस्माभिः कियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྐྱར་བཞོས་སྒྲ་མ་ནམས་ བསྐྱས་ཤིང་།

སྒྲོར་བ་ནམས་ ཀྱང་ ཉེར་མཚོན་ ཏི།



ཇི་ལྟར་རྣམ་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །

སྒྲན་ངག་ དག་གི་ མཛན་ཉིད་བྱ ། ༤

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टाणामपि सर्वथा ।

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་དུ་ མཆོག་རྣམས་ཀྱིས་ །

ཇིས་སྒྲ་བལྟན་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང་ །

ཆོག་རྣམས་ཉིད་ ཀྱི་ ཇིན་གྱིས་ ནི །

འཇིག་རྟེན་ལྷགས་ལ་ འཇུག་པར་བྱིད ། ༥

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवमग्रयं ।

यदि शब्दाह्वयं ज्योनिरासंसारं न क्षीप्यते ॥४॥

གལ་དེ་ ལྷས་པོད་ ལྷང་བ་ཡིས་ །

འཁོར་བ་ གསལ་བར་མ་བྱས་ན །

འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །

སྒྲག་རྣམ་སྒྲན་བཞིན་དུ་འགྱུར ། ༦



आदिगजयशोविम्बमादर्शं प्राप्य बाह्वयं ।
तेरामसत्रिधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥१॥

ཨྲིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ རྒྱགས་པའི་གཟུགས།
ངག་གི་རང་བཞིན་ མེ་ལོང་ ཐོབ།
དེ་དག་ཉེ་བར་མི་གནས་ ཀྱང་།
རང་ཉིད་ ཉམས་པ་མེད་པ་ ལྡོམ་ ॥ १

गीर्गोः कामदुष्टा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ ཡང་དག་ རབ་སྐྱར་བའི།
ངག་ནི་ འདོད་འཇོམ་ བ་ཅུ་ བཤད།
དེ་ཉིད་ ཉམས་པར་སྐྱར་ ན་ སྐྱར།
སྐྱར་པོ་ བ་ཡང་ཉིད་ བཇོད་བྱེད། ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काल्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि त्रिवरेणैकेन दुर्भगं ॥७॥



རེ་ཕྱིར་ སྒྲིན་ངག་ དག་ལ་ སྒྲིན་ ।
 རྒྱང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ནིག་ ལྟར་ ।
 བདང་སྒྲོམས་སྒྲིན་གྱ་ ལུས་སྒྲོམས་ཀྱང་ ।
 སྒྲིན་གཅིག་གིས་ནི་ སྒྲིན་ངག་འགྱར་ ॥ ८ ॥

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विमज्जते जनः ।
 किमन्यस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

སྒྲི་བོ་ བསྐྱར་བཅོས་ སྒྲི་ཤེས་པས་ ।
 ཡོན་དར་ སྒྲིན་དག་ ཇི་ལྟར་དབྱེ་ ।
 གཟུགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་སྒྲིབས་ ।
 ཡོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི་ ॥ -

जनः प्रजानां व्युत्पत्तिमभिमन्याय सूर्यः ।
 वाचां स्थितिप्रमार्गाणां निबन्धुः कियत्रिधिम् ॥९॥

རེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་སྒྲི་དག་རྒྱས་ ।
 བྱི་བྲག་དྲིགས་ལ་ མངོན་དགོངས་རྒྱས་ ।



ནམ་བུ་ལམ་ཐུང་ཆོག་ནམས་ ཀྱི ཉ

བྱ་བའི་ཆོག་ ཇེས་པར་སྤྱར ༥ ༡

तैः शरीरं च काव्यानामलंकाराश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ ཀྱན་ ཡང་ རབ་དུ་བསྟན །

ལུས་ ནི་ རེ་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་ནམ་བཅད་ ཆོག་གི་ སྤྱང་ ༥ ༡

पद्यं गद्यश्च मिश्रश्च तच्चित्रैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तथा वृत्तं आनिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཆོགས་བཅད་ ལྷག་པ་ དང་ །

སྒྲིལ་མ་ རྣམ་གསུམ་ ཉིད་དུ་ ཅན་ས །

ཆོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

ལྷོ་ ལྷོ་ རེ་ ཞེས་ རྣམ་གཉིས ༥ ༡



छन्दोविधित्वां स[2b]कलस्तत्पञ्चो निदर्शितः ।
सा विगा नीर्विविधूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

दे'यी'सु'स'च' स'प्र'२'द'वा'३ ।
सु'व'सु'र' वा'वु'२'५' दे'स'२'२'२'सु'३ ।
३'वा'३' सु'३'२'वा' कु'स'३'३' ।
३'व'३'२' २'दु'वा' २'दे'३' ३'स'२' ३'३' ॥ १२

मुक्तकं कुलकद्वयेः संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वाद्नुक्तः पदविस्तरः ॥१३॥

कु'२'२' ३'२'३' ३'वा'२' ३'२' ३'३'३' ।
२'दु'२'२' ३'२'३' ३'२'३'३' ।
३'वा'२'२'३' कु'३' ३'३'२' ३'३'३' ।
३'२'२' ३'२'३'३' ३'३' ३'२'३'३' ॥ १३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमज्जिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥



སགས་ བཅིངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ །

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཛོད་པར་བྱ །

ཤིས་ བཛོད་ ཡུག་བྱ་ དངོས་པོ་ནི །

ངེས་པར་ བཟུང་པའང་ དེ་ཡི་སྒྲོ་ ॥ ༡༥

इतिहासकथोरूनमितरद्वा सदाश्रयः ।

अनुषंगफलप्राप्तं अनुरोधात्तनायकः ॥१५॥

སྒྲིན་བྱང་གདམ་ ལས་ བྱར་པའམ ॥

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བདེན་པ །

སྡེ་བཞི་ འབྲས་བུ་ནི་ དབང་གུར་ དང་ །

མཁས་ཤིང་ ཀྱ་ཆེན་ འདྲིན་པ་ཅན ॥ ༡༦

नगराण्यशीलतुङ्गद्राकोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलकीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྱིམ་ ཀྱ་མཚོ་ རི་དང་ རྩམ །

ཉི་ལྷ་འཆར་བའི་ བཟུགས་པ་ དང་ །



སྒྲིད་མལ་རྒྱ་ཡི་ རོལ་ཅིན་ དང་ ।

རུང་འབྲུང་ དགའ་བའི་ དགའ་ལྗོན་ དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहेश्च कुमारोदयसङ्गणनैः ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाम्युदयरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་མ་ དང་ ।

གཞིན་ནུ་སྒྲི་ དང་ འཕྲེལ་བ་ དང་ ।

གྲུ་ས་ དང་ རོ་ཉ་ བགྲོད་བ་དང་ ।

གཡུལ་དང་ འཕྲིན་བ་ དར་བས་ ཀྱང་ । १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

समैरनतिविस्तीर्णैः अव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་པར་གྱར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ ।

ཉམས་དང་ འགྱར་བ་ དག་གིས་ གདམ་ ।

སྐྱེ་ཤིན་དུ་ རྒྱ་རྒྱ་ མིན་ ।

མཉན་འཕྲི་ རྒྱུ་ ཡིགས་མཚས་ས་སྐྱར་ ॥ २०



सर्वत्र भिन्नसर्गान्तैः(3a)रूपैर्लोक+रजनं ।

काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१९॥

༡༩་ད་ མཁུ་དག་གི་ མཐུར།

ཐ་དད་ལྡན་པ་ས་ འཛིན་ཏེན་ མཛེས་ །

སྒྲུབ་པ་ དཔ་པའི་ཁྱུང་ལྟ་ནི།

བསྐྱེད་པ་པའི་ བར་ད་ གནས་པར་འགྱུར ॥ ༧

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिद्गैः काव्यं नः वक्ष्यते ।

यद्युपात्तेषु सगणितिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

གང་ཞིག་ ཡན་ལག་ འགས་ དཔན་ ཡང་ །

གལ་ཏེ་ སྤྱིང་ནམས་ བཟ་ཆོགས་ཀྱིས།

དེ་རིག་ མཁུ་བར་བྱེད་པ་ ན །

འདིར་ནི་ ལྷན་ངག་རྩོན་ མ་ཡིན ། ༥༠

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्धिषी ।

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिमुन्वरः ॥२१॥



ཐོག་སར་ འདྲན་པ་ ཡོན་ཏན་ གྱིས།

ཉེ་བར་ བཞེད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི།

དགྲ་ལ་ བཞེད་པ་བྱེད་ ཅེས་པའི།

ལས་འདི་ རང་བཞིན་ མཛེས་པ་ ཡིན། ॥ ११

संशयीर्यधुनादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयाज्जायकोत्कर्षकयनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བཞེད་འགྲུས་ ཐོས་ སྟོགས་གྱིས།

དགྲ་པོ་ལ་ ཡང་ བསྐྱགས་བྱས་ནས།

དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲན་པ་ ནི།

བྱེད་འཕགས་ བཞེད་པ་འང་ བདག་ དགའ་སྦྱིས། ॥ १२

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रमेवौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

ཀླང་པ་མེད་པའི་ ཆོག་རྒྱུ་ ནི།

ལྷག་པ་ བཞེད་པ་ དག་ དང་ བཞུས།



ཞེས་པ་ རི་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས་ །

རི་ཡ་འདྲིན་པ་ ཉིད་གྱིས་ རི ། ༤༢

नायकेनेव वाच्यान्या नायकेनेनरेण वा ।

स्वगुणाविक्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བཛྲོད་པར་བྱ་བ་ བཛྲོད་པ་ལོ་ །

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་འཇམ་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་ །

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱུགས་ སྟོན་ འདིར་ །

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱུགས་ སྟེར་ ཡོད་མེད་ ། ༢༥

अवि स्वनिश्चयो हृष्टस्तत्राप्यन्येरुदीरणत् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृश्या भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང་ ཇེས་པ་ མ་མཐོང་ལྟེ་ །

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བཛྲོད་པའི་སྟེར་ །

གཞན་གྱིས་བཛྲོད་ རི་ རང་གིས་ ཞེས་ །

དབྱེ་བའི་ཁྱུ་ རི་ ཅི་འདྲ་ཞིག་ ། ༢༦



वक्तृञ्चापरवक्तृञ्च साध्वासत्वञ्च भेदकं ।

चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

གཡ་དེ་ གློ་ དང་ གཞན་ གློ་ དང་ །

དབུགས་ མཚམས་ བཅས་ཉིད་ བརྗོད་པ་ཡི །

ཐ་དད་པ་ཡི་ དྲགས་ ཡིད་ ན །

ཞེར་གྱིས་གདམ་ རྟམས་ དག་ལ་ཡང་ ॥ २६

आर्थादिवत्प्रवेशः किं न वक्तृपरवक्तृयोः ।

भेदश्च दृष्टो लभ्याद्विराध्वासो वास्तु किन्तनः ॥२७॥

འཕགས་མ་ སྟོགས་ བཞིན་ གློ་ དང་ནི །

གཞན་གྱི་གློ་ དག་ ཅིས་ མི་འཇུག །

ལས་ སྟོགས་མམ་ ཨ་ཤུ་མའ །
ཏྲ རྒྱ

དབྱེ་བ་ མཐོང་ཡང་དེ་ ལས་ཅི ॥ २७

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाद्भिता ।

तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजानयः ॥२८॥



དེ་ཕྱིར་ གནས་ དང་ བཟོད་པ་ ཞེས།
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོར།
 ལྷག་ས་ བཟོད་པ་རི་ རིགས་ ལྷས་ས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ ནང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༢༠

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।
 सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲེག་ དང་ གཡུ་ལ་ དང་ རི།
 བསྐྱ་བ་ དར་བ་ ལ་མོགས་པ།
 སྐྱེས་བཅིངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ ཟུང་བྱེད་ ཡོན་དན་ མིན། ॥ ༢༡

कविभावकृतं विहमन्यप्रापि न दुष्यति ।
 मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷ་ན་ངག་མཁའ་གྱི་ བསམ་བྱས་ རིགས།
 གཞན་དུ་ དང་ རི་ ལྷན་མི་ འགྱུར།



འདོད་དོན་ གྲུབ་ལ་ མྱོ་ཅུ་ ནི།

མཁས་པ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྱུར། ॥ ༣༠

मिथ्याणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।

गद्यपद्यमयी कापि सम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྤྱི་ལ་ས་ རྒྱུས་གར་ལ་སོགས་དེ།

དེ་དག་ རྣམས་ནི་ གཞན་ན་ རྒྱས།

རྒྱག་པ་ རྒྱུས་པཅད་རང་བཞིན་ ཡང་།

ཅིས་ ཞིས་པར་ མངོན་པར་ བཟོད། ॥ ༣༡

तदेतद्व्याख्यान्यः संस्कृतस्याकृतन्तथा ।

[4a]अपद्यशश्च मिथ्यायादुगमाभ्यनुविधं ॥३२॥

ངག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ ཀྱང་།

ཡིགས་སྤྱར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ དང་།

རྒྱར་ཆག་ འདྲིས་ས་ ཞིས་བྱ་བ།

རྣམ་པ་བཞི་ཅུ་ མཁས་པས་ གསུངས། ॥ ༣༢



संस्कृतं नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

वेणसःसुखं वेणःसुं ह्यःपीं रे ।
क्षदःदुं दुदःसुदं केरःवेसः वसुदसः ।
देःसुसः देःसुसुदसः पुथःउरः वेसः ।
दुःसः रुदःवरेरः दणःकीं रीसः ॥ ३२

महाराष्ट्राश्रयाम्मायां प्रकृष्टग्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

पुथःवरेरःकेरःवेः वः वरेरः क्षदः ।
वेणसःवरेरः रीरःकेरः दणःकीं सके ।
सोःदुसः वरेरःसुसः रुदःवरेरः वदः ।
रुदःवरेरः सकेवःदुं सुदःवदः रीवः ॥ ३७

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।
याति प्राकृतमित्येष व्यवहारेषु सन्निधिः ॥ ३५॥



ས་ར་སོ་ནུ་ བོ་ར་ དང་ ।

ལ་ར་ གཞན་ཡང་ རི་འདྲ་ཡི་ ।

སྒྲན་ རི་ རང་བཞིན་ཉིད་ ཅེས་བྱའི་ ।

ཐ་སྒྲན་ རྣམས་ ལ་ ཉི་བར་འགྱུར་ ॥ ༢༥

आभीरादिगिरः काव्येष्वपञ्चश इति स्थितिः ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपञ्चशतयोदितं ॥३६॥

བ་ཡང་ཇི་ ལ་སྒྲིགས་པའི་ རིག་ ।

སྒྲན་ངག་ལ་ ཟུར་ཆག་ ཅེས་ གཞན་ ।

བསྒྲན་བཅོས་ རྣམས་ ལས་ རིགས་སྒྱུར་ ལས་ ।

གཞན་པ་ ཟུར་ཆག་ཉིད་དུ་ བཞིན་ ॥ ༢༦

संस्कृतं सगन्ध्यादि प्राकृतं स्कन्धकादि यत् ।

ओसरादीन्यपञ्चशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལེགས་སྒྱུར་ སྒྲིགས་བཅོངས་ ལ་སྒྲིགས་ ।

རང་བཞིན་ སྒྲན་ག་ སྒྲིགས་དང་ ।

ན



ཐུར་ཀླ་ ཨེ་ས་ར་ སེགས་དེ །

ཐྱེས་གར་ ལ་སེགས་ འདྲིས་པའོ ॥ ༢༩

कथादि सर्वभाषाभिः संस्कृतेन च व्युत्पद्यते ।

भूनमायामयीं त्वाद्गुणद्वयार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གདས་ སེགས་ སྒད་ རྣས་ས་ གསས་ཅད་དང་ །

ལེགས་སྒྲར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་པ་ལྟེ །

སྒད་བྱང་ དོན་ཅན་ ཀྱ་ཆེན་གདས་ །

འབྱང་པའི་སྒད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བཟོད་ ॥ ༣༠

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्षयाथमितरत्नपुनः ।

अव्यमेवेति सैषापि द्वयी मतिरुदाहृता ॥३९॥

སྒྲིག་ དང་ རེ་ལ་ དང་ སྒྲུབས་ ལ་སེགས་ །

ལྟ་བའི་དོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤེས་ ཀྱང་ །

སྒྲན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ རེས་བ་ །

འདི་ཡང་ ལྷགས་གཉིས་ དག་དུ་ བཟོད་ ॥ ༣༡



अस्त्यनेको गिरां मार्गः सूक्ष्मभेदः परस्परं ।
तत्र वेदभंगौडीयौ वण्येते प्रस्फुटान्तरी ॥४०॥

यङ्कुङ् ५३५ ५३५ ५३५ ।
किंवा ५३५ ५३५ ५३५ ।
५३५ ५३५ ५३५ ।
५३५ ५३५ ५३५ ॥ ८०

श्लेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिकृदारत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

श्लेषः ५३५ ५३५ ५३५ ।
श्लेषः ५३५ ५३५ ५३५ ।
५३५ ५३५ ५३५ ।
५३५ ५३५ ५३५ ५३५ ॥ ८१

इति वेदभंगस्य प्रज्ञा दशगुणाः *स्मृताः ।
एषां विपर्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्मनि ॥४२॥



ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བེ་དཀྱིའི།
 ལས་གྱི་ སློག་དུ་ བཤད་པ་ ཡིན།
 འདི་དག་ ཕ་ལ་ཆེར་ བརྒྱུག་བས་ ནི།
 བོ་ཏའི་ལས་ དག་ མཚོན་པ་ ཡིན། ॥ ༧༢

त्रिष्टुमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणासुरोत्तरं ।
 शिथिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྤྱར་པ་ རྩོད་བས་ མ་ རེག་པའོ།
 སློག་རུང་ ཡི་གེ་ མང་པ་ ནི།
 རྩོད་པ་ མ་ལ་དྲི་ མ་ལ།
 ལ་ལ་ལི་ཀ་ལི་ལ་ འདོད། ॥ ༧༣

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्टं बन्धगोरवात् ।
 घेदमैमालतीदाम लघितं स्रभरैरिति ॥४४॥

བོ་ཏ་པ་ ཡིས་ རྩིས་བྱིད་བྱོས།
 དེ་ འདོད་ མ་ལ་དྲི་ དུ་ས།

ལྟོ་གྲོ་ལྷ་མ་རེ་ཞེས།

བེ་དུ་ཡིས་སྤྲོ་ཕྱེ་བྱེད། ༧༧

प्रमादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरगुति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྷན་པ་གྲགས་རོ་ཅན།

སྤྲོ་ཕྱེ་མཚན་མ་ཡུལ་གྱི།

འདྲ་གྱིས་མཛེས་པ་ཀླས་ཅེས་པ།

དྲོགས་པའི་སྤྲོ་བཟང་ལྷན་པའི་ཆོག། ༧༨

अनुत्पन्नमिति गौडोयं नानिरुद्धमपीप्यते ।

यथानत्यर्जुनस्त्रजन्मस[5a]दृष्टाद्गो बलश्रुतः ॥४६॥

ངེས་ཆོག་འདྲ་ལྷན་གྱིས་གོ་པ་པ།

ཤིན་དུ་གྲགས་པ་མིན་ལང་འདྲོད་།

ཤིན་དུ་དཀར་མིན་ཅུ་ལས་སྤྱིས།

དེ་འདྲས་མཚན་པ་འདྲ་དཀར་ཅན། ༧༩



समं बन्धेष्वविशमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिधवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

मृदुम'व' सु'र'व' सी'मृदुम' ३५ ।

दे'रि' र'म' सु'व' व'र'म' ३६ ।

सु'र'व' र'म' सु'व' व'र'म' ३७ ।

यी'मो'वर्णे'र'व'रि'सु'म'र'म' ३८ ॥ ८७

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्कराभःकणोक्षितः ॥४८॥

म'म'म' उ'उ'र'सु'म' ३९ ।

म'म'म'सु'म' व'र'म' ४० ।

मृदु'म' र'म'र'म' र'म'र'म' ४१ ।

सु'सु'र'सु'म'म'म' ४२ ॥ ८८

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमाकृतः ।

स्पर्शते हृदमर्दयौ वररामाननानिलैः ॥४९॥



ཅན་གྱིས་ བསྐྱོས་ རི་ རྩང་ རིང་ །

འཇམ་པ་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྩུང་ །

བདག་གི་ བདྲན་ འགྲོག་ དགའ་མ་ རི་ །

མཆོག་གི་ ཁ་ཡི་ རྩུང་ དང་ འགྲན་ ॥ ༥༠

इत्यनालोक्य वेगम्यमर्थालंकारदम्बरी ।

अपेक्षमाणा *ववृते पीरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་པ་ མི་མཉམ་ མ་བདག་མ་པར་ །

དོན་གྱི་ རྩུང་ དང་ ཆོག་མ་ དག་ ལ་ །

རྩེས་ནས་ ཤར་ཕྱོགས་པ་ དག་ ལ་ །

སྒྲན་ངག་ ལས་ རི་ རྩུང་བར་གྱུར་ ॥ ༥༠

मधुरं रसवद्भावि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।

येन भावयन्ति धीमत्सो मधुनेव मधुवताः ॥५१॥

སྒྲན་པ་ ཉམས་ལྡན་ ཆོག་ དང་ རི་ །

དངོས་པོ་ ལ་ ལང་ ཉམས་ གནས་པ་ །



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

གང་གིས་ རྫོང་པ་ དགའ་བྱེད་པོ་ ॥ ༥༡

यथा कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।

॥तद्रूपादिपदासन्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥६२॥

ཡུ་ཨེ་གང་དང་ཅི་ཡིས་བྱང་།

प्राज्ञः श्रेष्ठः सुप्रसन्नः सुखी ।

དེ་ཡི་ གཞུགས་ མེགས་ ཆོག་ཉི་པ །

ཁྲིམ་སྤྱི་ ཁྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྔ་པ་ ॥ ༥༩

एव राजा यदा लक्ष्मीम्यासवान् ॥ ह्यणप्रियः ।

तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཉི་ ལ་མ་མེ་ དགའ་བ་ཡི།

ལྷུ་ལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དཔལ་ཐོབ་གུར།

[illegible]

དགའ་ཕྱོད་ རྒྱུ་རྩེ་ རེ་ཅུ་ བུ་ ॥ ༥༢



ཕྱིན་མཚན་ དབྱ་གྱུན་ རྒྱ་བ་ ཅི།

ཀུན་འོ་ ཐོན་ཐོར་ འབྱུལ་བ་ ལ།

མཚན་མ་ ཡིན་ནི་ལ་ མཚུངས།

བྱང་བའི་ དབལ་ ཅི་ ཡང་དག་ འཛིན། ॥ ५५

आह आन्त्रमत्तं श्रीर विम्बमण्येदमम्यरे ।

मम्मनो मन्मथाकान्तं निर्दयं *कस्तुमुद्यतं ॥५७॥

མཛེས་མ་ མཁའ་ལ་ རྒྱ་བ་ཡི།

དགྱིལ་འཁོར་ མཛེས་པས་ བདག་གི་ཡིད།

ཡིད་སྐྱབ་ ཀྱིས་ མནན་ བརྟེ་མེད་དུ།

འཛེམས་པར་ བརྟེན་པ་ འདི་ ལ་ རྩིས། ॥ ५८

इत्यनुमासमिच्छन्ति नातिदूरान्तरश्रुनिम् ।

न तु रामामुखाम्मोजसदृशमन्त्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་པ་ ཤིན་དུ་ མི་རིང་བར།

ཐོས་པ་ དག་ ཅི་ ཅེས་ཁྲིད་ འདོད།





དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཚུ་སྤྱེས་ དང་ །

མཚུངས་པ་ ལྷ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད་ ༥ ༥༠

स्मरः स्मरः स्मरः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।

अनुतो मानोधको रागो मोहो जानोसषोगताः ॥६६॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྲོ་བ་ ལྷ་ །

འདོད་པ་ ཚུ་བ་ ཅིང་ མཇེའ་བོ་ངར་ །

ཁིངས་པ་ཉམས་ ཤིང་ རྒྱལ་པ་རྒྱས་ །

མེངས་པ་ སྤྱེས་དེ་ སྤྱིག་ རྣམས་ མིང་ ༥ ༥༡

इत्यादि बन्धवारुध्यं शीघ्रित्वञ्च नियच्छति ।

अतो नैव(6a)अनुप्रासं दाक्षिणात्याः प्रयुञ्जते ॥६७॥

ཅེས་སྤྱིགས་ སྤྱིང་པ་ ཚུ་བ་པ་ དང་ །

གྲོ་ལ་པ་ ཡང་ནི་ སྤྱིང་པར་བྱེད་ །

དེ་ཕྱིར་ དེ་ལྟའི་ ཇེས་ཁྲིད་ ནི་ །

སྤྱི་སྤྱིགས་པ་ དག་ མི་སྤྱིང་རོ་ ༥ ༥༢



भावृत्तिमेव सघातगोचरं यमकम्बुदुः ।

तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कै०स०चरि० सु०र०पु०च० व०रु०च०रे ।

मि०र०तु०द०द० द०र०च०र० री० ।

रे०प०च०उ०र०द० सु०स०च० री० ।

रे०पु०र० सु०र०स० व०रु०च०र० ॥ ६०

कामं सर्वोपलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।

तथाप्यप्राप्यतेवेनम्भारम्वहति भूयसा ॥६२॥

रे०स०च०र० सु०र०र०स०स० पु०र०च० प०च० ।

रे०र० सु०र०स०स० र०च० सु०र०च०र० ॥ ६३

रे०र०र० प०च० सु०र०च० री० ।

रे०र०च०स० र०च० र०रे०च०र० र०रे० ॥ ६४

कन्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।

इति ग्राम्योपमर्थात्मा वरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥



འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞོན་ནུ་མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་ནོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད། ॥ ༤༢

कामं कन्दर्पचण्डाला मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो दिष्टयेत्यग्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གདམ་པོ་ནི།
 ཅེས་པར་ བདག་ལ་ བརྟེ་བ་མེད།
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ།
 གྲོང་པའི་ ནོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན་ ॥ ༤༣

शम्भेपि ग्राम्यलास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྤྱ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ།
 དེ་ནི་ ལོགས་པའི་ ཅིག་ཤིས་ གྲགས།



དགའ་བའི་དགའ་ཕྱིན་བཟོས་པ་ལ །

ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སྟོགས་བཞིན ། 54

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।

कुप्यतीतिकरं ग्राम्यं यथा या मदनः प्रिया ॥६६॥

ཆོག་གི་མཚས་ས་སྟུང་གིས་ ཁྱགས་ དང་ །

སྟུང་ཡང་ ངག་ཅོན་དག་གིས་ ཀྱང་ །

ཉེས་པར་ཉོགས་བྱེད་ གྲོང་པ་མེ །

ཡ་ ལྟ་བ་དེ་ གྱི་ཡ་ བཞིན ། 55

परं ग्रहृत्य विभ्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।

एष[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྟུན་ནས་ སྟེས་བུ་ ནི །

གྲིད་ལྟ་བའི་ གི་ལྟ་དེ་ །

དེ་ལྟ་བུ་ སྟོགས་ ལས་དག་ ནི །

གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྟུགས་ས་ཡིན ། 56

कलापिनः प्रवृत्त्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥



སྒྲིན་གྱི་བྱེང་བ་ཐུན་ ཏུས་སུ །
 སྒྲིན་པར་སྒྲིགས་པའི་སྒྲིན་ཐུན་པ །
 མ་བྱ་ཡི་ནི་ མཐུག་མ་དག །
 རྒྱུས་པོར་བྱས་ནས་ གར་བྱེད་དོ ༥ །

इत्यनूर्जित पदार्थो नालङ्कारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवेतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་ཀྱས་ཉིད་མ་ཡིན །
 ཀྱན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ འདྲ་མིན་དེ །
 ཤིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དས་པ་རྣམས་ཀྱི་ ཁ་ ན་ གནས ༥ ༥

दीप्तमित्यपरैर्भूजा कच्छोद्यमपि बध्यते ।
 म्यक्षेण वद्भः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

གསལ་ སྒྱིར་ གཞན་དག་ གལ་ཆེར་ ནི །
 བཞེད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྒྱིར །



ཀྱུ་ལ་རིགས་རྣམས་ཀྱི་ རྩོགས་མཐའ་དག །

སྒྲིབ་ཅིག་གིས་ རི་ རྩམས་པར་བྱས ། ॥ ११

अथल्यत्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः कुरभ्रुण्णनागासृग्लोहितादुद्धेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །

འཕྲོག་བྱེད་ཀྱིས་ རི་ ས་གཞི་དག །

མིག་པས་ བཅད་པའི་སྒྲ་ཁྲག་གིས །

དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏེར་ ལས་ཕྱང་ ། ॥ १२

मही महाबराहेण लोहितादुद्धृतोद्धेः ।

इतीयत्ये[7a]ष निर्विष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

པག་པ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །

རྩ་གཏེར་དམར་པོ་དག་ལས་ཕྱང་ །

ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བཟུན་པ་ནི །

བྱང་འགྲོའི་ཁྲག་ རི་ བདག་དགོས་ཉིད ། ॥ १ॢ

नेटशब्दबहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥



ལས་ནི་གཉིས་ཀ་དག་ལ་ཡང་།
 དྲོགས་པའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྟ་བུ་ཞིང་།
 སྒྲ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གུར་པ་།
 འདི་འདྲ་པལ་ཆེར་བཞེད་མ་ཡིན་༥ ༥༥

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्तं यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराहृत्य तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་འགའ་ཞིག་བཛྲོད་པ་ལ།
 བྱད་འཕགས་ལྟ་བུའི་ཡོན་ཏན་དྲོགས་།
 དེ་ནི་ཁྱ་ཆེར་བཛྲོད་དེ་དེས་།
 སྒྲ་ངག་ལས་གུན་མགོན་དང་བཅས་༥ ༥༦

अर्थिनां कृपणा वृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्वेष नान्यस्य मुक्तमीक्षते ॥७७॥

སྤོང་བ་ནམས་ཀྱི་བཀྲོན་པའི་མིག་།
 ལན་ཅིག་ཁྱོད་གསོང་ལ་ལྟོང་བ་།



ལྷ་ཅིག་གནས་སྐབས་དེ་ཡིས་སྤྱར།
གནད་གྱི་གདོང་ལ་ལྷ་ས་ཡིན། ॥ ११ ॥

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूच्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ ཉིད་གྱི་ ཅིག་ རྟོན་ལ།
གདོང་པ་ བྱད་འཕགས་ ལེགས་པ་ མཆོད།
ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ གནད་དག་ ཀྱང་།
རིགས་པ་ མཚུངས་པས་ དཔག་པར་བྱ། ॥ १२ ॥

अप्येवैवोपनिषुक्तमुदाहरं केचिद्विध्यते ।
यथा लीलाम्बुजकीडासरोहोमाङ्गदादयः ॥७९॥

བཤམས་པར་འོས་པའི་ བྱད་པར་ དང་།
ལྷ་པ་ གྱ་ཆེར་ འབར་ཞིག་ འདོད།
རོལ་པའི་ཚུ་སྤྱིས་ ཅེ་དགའི་མཆོ།
གསེར་གྱི་གྱན་ ལ་སྤྲོས་པ་ བཞིན། ॥ १३ ॥



धोजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य ज्ञापितम् ।
पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकप्रत्ययणम् ॥८०॥

चङ्द'य' क्ति'य' ह्य'य' म'य' ३'य' ।
अ'य' ३'य' ह्य'य' द'य' ३'य' म'य' ।
क्ति'य' च'य' ३'य' ३'य' ह्य'य' ३'य' ।
म'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ॥ ८०

तद्गुणानां लघु[7b]नाञ्च बाहुल्याल्यन्वमिधजैः ।
उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ।
म'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ।
म'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ।
चङ्द'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ३'य' ॥ ८१

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्काशुसंस्तरा ।
धीनस्तनखिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥



རྒྱལ་གྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི །
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་ལྷན་ཅན །
 མཁྱེན་པ་པའི་ན་མ་ ལ་ གནས་པའི །
 བོས་ དམར་ མཛེས་ བཞིན་ རྩ་ལྡན་མ ༥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्या बध्नन्त्योजसिनीगिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥

ཅེས་པ་ བཛིན་དང་ལྡན་པའི་ཚིག །
 ཚིགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ ལྷུང་ །
 གནན་དག་ རྒྱུགས་མིན་ མཛེས་པ་ཡི །
 ཚིག་རྣམས་ བཛིན་པར་ འཛིན་དེ་ དཔེར ༥ ༤༣

पयोधग्मतोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामानुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ॥८४॥

རྩ་འཛིན་ཅོས་གྱི་ བཅད་ ན་ གནས །
 མཚམས་གྱི་ ཉི་འོད་ བོས་དང་ལྡན །



ཐུ་ལྷན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཞིར་བར་བྱེད་མི་འགུར། ॥ ༥༧

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमान् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཛེས་པ་ འཛིག་དེན་ དོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཛེས་པའོ།

དེ་ཡང་ གདམ་གྱི་མངོན་བཛྲིད་ དང་།

བསྐྱབས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལའང་ *སྦྱར། ॥ ༥༨

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिप्रवाहशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनेः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀར་ཕུབ་པ་པོ་ ཁྱོད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྒྱལ་ བྱི་ གཙང་མ་ དག།

ཡང་དག་ བདབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁོ་ན་ ངེས་པར་ ཁྲིམ། ॥ ༥༩



अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोर्जृम्भमाणयोः ।

अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

ह्रिन्'सिन्'सुस'उन्' सिन्'त्ति' र्हे ।

अण'परि'रसि'सिन्'पर'दण'दु ।

द'स'रव' कृस' र्दि'दण' वीस ।

गो'नवस' ह्रिन्'पर' र्गु'र'स'यीन् ॥ ८७

इति [8a]संभाव्यमेवेतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।

कान्तं भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

हेस'प' सु'द'पर' वहे'द'प' यीस ।

अणस'सु'र' र्दि'दण' सिन्'प' ह्रिन् ।

रर्दिण'हे'द'सु'णस'त्ति'हेस'सु'र्हे ।

रर्गुण'प' वसस'उन्' सहे'स'पर' र्गु'र' ॥ ८८

लोकानीन इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।

योर्थस्तेनानितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥



འཛིག་དེད་ འདས་ བཞིན་ བཟླ་ འདོད་ ཀྱིས །

དོན་གང་ ཤིན་དུ་ བཞིན་ གྱུར་པ །

དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཤིན་དུ་ རི །

ཆོས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ༥ ༤༠

देवधिष्ण्ययमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।

शुष्मत्पादरजःपातधीतनिःशेषकित्विषम् ॥६०॥

དེང་ནས་བཟུང་མྱེ་ བདག་གི་བྱིས །

ལྷ་ཡི་བྱིས་ བཞིན་ བཟླ་བར་ འོས །

བྱིད་ཀྱི་ འབས་རྒྱལ་ ལྷུང་བ་ ཡིས །

ཉིས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྱས ༥ ༤༠

अल्पस्निर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।

इदमेवंविधम्भावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥६१॥

བྱིད་ཀྱི་ རྒྱ་མ་ འདི་ལྷ་བྱར །

རྒྱས་བར་རྒྱས་བར་འགྱུར་བ་འདི །

ངེས་པར་མ་བདགས་ བྱིད་པོ་ ཡིས །

ནས་མཁའ་ དག་ནི་ ལྷུང་ལྷུར་ ལྷུལ ༥ ༤༡



इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालिन ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ॥ ६२

अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लोकसीमानुराधिना ।

सम्यगाधोयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ।

ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ठ॒ ॠ॒दि॒र्दि॒ ५॒ ॠ॒दि॒ ॥ ६३

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाह्वया [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥



ཀུ་མ་ད་ རི་ མིག་འཇུག་ རིང་ །
 བརྩ་དག་ ཀུང་ མིག་འབྱེད་ ཅེས་ །
 མིག་གི་བྱ་བ་ བཀོད་པ་ ལས་ །
 དེ་ཡི་ བཛོད་བྱེད་ ལྷ་དག་ ཐོབ་ ༥ ༩༩

निःकृतोद्गीर्णान्तरादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयः ।
 अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

རིཾ་ད་ དང་ ཡུའི་རྩི་ །
 རྩི་ རྩི་
 ལྷགས་ མིགས་ བདགས་པའི་ འཇུག་ བདེན་པ་ །
 ཤིན་དུ་ མཛོས་དེ་ བཀོད་དུ་ རི་ །
 བྲོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ རྩས་པ་ བདེན་ ༥ ༩༩

पद्यान्तर्यैः शुनिःकृताः पीत्वा पावकविग्रहः ।
 भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

བརྩས་ཉི་ཟེར་ ལྷགས་པ་ རྩསས་ །
 འཇུངས་ནས་ རྩལ་ དསར་ ལྷགས་པ་ཡི་ །



ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ཟེར་ས་དག །

ལྷན་དུ་སྐྱབས་པར་བྱེད་པ་བཞིན ། ༡༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठोयति बभूविनि ।

युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་སྟེ་ས་ཟེར་ས་པ་ །

ཁྱེད་ས་སྐྱབས་པར་བྱེད་ཅེས་པ་ལོ །

ཅིག་ཅར་ཉིད་དུ་རྟོག་དུ་ས །

བཞིན་པ་དག་ཀྱང་འདོད་དེ་དཔེར ། ༢༠

गुरुगर्भभराक्लान्ताः स्तन त्वोर्मेषपङ्क्तयः ।

अचलामित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिरोत्ते ॥६८॥

སྐྱེ་བའི་སང་ལ་ཁྱེད་གྱིས་ངལ་ནིང་ །

འཁྱེད་པར་བྱེད་པ་སྐྱེན་གྱི་བྱེང་ །

འདི་དག་གཞི་མེད་སྤྱིང་གི་ནི །

སང་བ་དག་དུ་ཡང་དག་ཉལ ། ༢༡



उत्संगशयनं सख्याः स्नानं गौरवकृतम् ।

इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दक्षिणाः ॥६२॥

ལྷོ་གས་མེའི་ བང་བར་ ཉལ་བ་ དང་ །

འཁར་ དང་ རྩ་བ་ཉིད་ དང་ རལ།

ཅེས་པ་ འདིར་ རྟེན་ མངལ་ལྟར་མཐོ་ །

ཆོས་ཏེ་ མང་པོ་ གནས་དུ་ བཞུགས། ॥ ༣༣

तदेतत्काल्यसर्वस्य समाधिर्नाम यो गुणः ।

कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

དིང་འཛིན་ ཞེས་པའི་ ཡོན་ཏན་ གང་།

འདི་ནི་ ལྷན་ངག་ བདེག་ ཀུན་དེ །

སྒྲིན་པ་ག་ མཁའ་ན་པོ་ དོན་མཐུན་གྱི།

ཚུགས་ གུང་ འདི་ཡི་ རྩ་ལྷན་འབྲངས་ ॥ ༡༠༠

इति मार्गद्वयं भिन्नं तत्त्वरूपनिरूपणात् ।

तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्तुम्[9a]निकवि लिताः ॥१०१॥

དེ་ལྟར་ རང་བཞིན་ བདག་པ་ ལས །

ལས་ན་ རི་གཉིས་ རྣམ་པར་སྤྱི།



རེ་དག་ དབྱི་བ་ ལྷན་ངག་མཁའ་ །
 སོ་སོ་ལ་ གནས་ བཞེད་ མི་ནས ༥ ༡༠༡

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।
 तथापि न तदाख्यातुं सरसत्वापि शक्यते ॥१०२॥

བྱར་ཤིང་འོ་མ་ བྱར་སོགས་ ཀྱི །
 མངར་བ་ཉིད་ ནི་ བྱད་བར་ཆེ །
 རེ་ལྷ་མེད་ཀྱི་ རེ་བཞེད་པར །
 དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ རྒྱས་མཁྱིན ༥ ༡༠༢

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
 अमन्दस्वाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ གྲིས་གྲུབ་ སྒྲོབས་པ་ དང་ །
 མང་དུ་སྒྲིས་པ་ ཅི་མེད་ དང་ །
 མའོན་པར་ སྒྱུར་བ་མི་དམན་པ་ །
 ལྷན་ངག་ ཡན་སྤྱོད་ཆོགས་བའི་ལྷ ༥ ༡༠༣



न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतं ।
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्कुगेत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

ण'थ'दे' ह्ये'र'ग्री' वण'कण'स' य'र'द'र' ग्री'स' ।
ह्ये'स'अ'व्रे'थ' ह्ये'व'स'थ' स'र'स'र' स'र'थ'थ'अ'र' ।
ह्ये'स' र'र' अ'व'र'थ' र'ग'गी'स' र'ग' व'दे'र' र' ।
ह्ये'र'ग'थ'र' य'र' र'स'थ'र' ह्ये'स'अ'ह्ये'र'थ'र' ॥ १०८

तदस्मत्तन्दैरनिशं सरस्वती कमादुपास्या सन्तु कीर्त्तिमोप्सुभिः ।
कुरो कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

दे'ग्री'र' वण'स'अ'दे'र'र'थ'स' ग्री'स' र'ग'र' र' ।
ह्ये'स'स'थ'स' स'र'थ'र' र'स'थ'स' र'र'र'स'अ'र' व'दे'र' ।
ह्ये'r'र'ग' र'r'र'थ' य'r' r'थ'व'स'थ' र' ।
थ'r's'थ'र'अ'र'r's'थ'r' r'r'g'थ' r'v'r' ॥ १०५

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

र'g'g'थ'अ'अ'r'ग्री's' g'g'थ'थ'r' h'g'r'r'g'थ'थ'थ'r' s's' r'g'थ'r'
g'g'थ'r' r'g'थ'r'v'अ'अ'g'थ' h' r'r'g'g' ॥



CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रवक्षते ।

ते वाचापि विकल्प्यन्ते कस्तान् काश्चन्येन [9b]षक्ष्यति ॥१॥

शुद्धं च सहेसं च सुदं च यी ।

हेसं च यसं च सुदं च यी च सुदं ।

देवैः च सुदं च यसं च सुदं च यी ।

देवैः च सयसं सुसं च सुदं च सुदं ॥ १

किन्तु वोजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कृतमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

देवैः च सुदं च यसं च सुदं च यी ।

देवैः च सुदं च यसं च सुदं च यी च सुदं ।

देवैः च सुदं च यसं च सुदं च यी च सुदं ।

देवैः च सुदं च यसं च सुदं च यी च सुदं ॥ २

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रामाण्यलंकिताः ।

साधारणमलंकारज्ञातमयं प्रदर्श्यते ॥३॥



དགའ་ དང་ ཉམས་ལྡན་ གཞི་བཞིན་ཅན།
 རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ དང་ ཀྱུན་དུ་ བན ॥ ༥

उदात्तापह्नुतिस्त्रिष्टयिशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतहतोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

གྱུ་ཆེ་ བསྐྱོད་དོར་ སྤྱར་བ་ དང་།
 ཁྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ སྤྱར་བ་ དང་།
 འགལ་ དང་ རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ བཞིན་ དང་།
 རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ བཞིན་ བཞིན་ དང་ ॥ ༦

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संयुष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वस्मृतिभिः ॥७॥

ལྡན་ཅིག་ བཞིན་ དང་ ཡངས་བཞིན་ ཤིས།
 རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ ཅན།
 འདི་དག་ ཆོག་རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ ཤི།
 ལྡན་དུ་ རྒྱུ་ལྡངས་ བཞིན་ བཞིན་ ॥ ༧



नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विबृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

ददेष'धे'कुसल'ग्री' दद'म'नै'र' दद' ।

न'र'स'स'व'स' शू'के'न'स' ददेष'न'स'य'ग्रे'र' ।

दे' री' दद'म'नै'र'म'हे'र'य' दद' ।

द'न'स' ले'स' दद'धे'रि'कु'र' धी'र' द'ये'र ॥ ८

तुण्डेराताम्रकुटिलैः पक्षीहंरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

स'कु' री' द'स'र' त्रि'द' न'न'य' दद' ।

न'ने'न'य' मू'द' त्रि'द' म'ने'र'य' दद' ।

स'नै'र'य' म'दे'न' न'सु'स'म'ये'र'उ'र' ।

दे'उ' म'दे'न' के'न'म'म'म'य' ॥ ९

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुधुम्बति प्रियाम् ॥१०॥



མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ སྐར་སྒྲོགས་ ཡིང་ །
 སིག་ རི་ ཀུན་དུ་ འབྲུལ་བ་ ཡི།
 དུག་རིན་ ཅེ་འདོད་ དགའ་ས་ལ།
 ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་ནས་ མཆུ་དག་སྦྱོར་ ॥ २०

वध्नमङ्गेषु रोमाञ्च' कुर्वन्मनसि निर्वृति ।
 नेत्रे आसीलयन्नेव प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་ས་ཡི་ རི་ རིག་པ་ འདི།
 ལུས་ལ་ སྦྱ་ཡོང་ རྒྱས་པ་དང་།
 ཡིད་ རི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང་།
 སིག་དག་ རྩལ་པར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག་ ॥ २१

कण्ठे कालः करस्येन कपालेनेन्दुशेखरः ।
 जटाभिः सिग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྒྲིན་ ལག་ན་གྲོད་པ་རི།
 གསལ་པ་རྒྱ་བའི་ཅོད་པར་དང་།



ལྷ་མ་ འིང་ དམར་བའི་ རལ་པ་ཅན།
 བྱ་མཆོག་ རྒྱལ་མཆོན་ བསལ་བར་གྱུར། ॥ ༧

जानिकियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं काल्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཅན་ རིས།
 རང་བཞིན་ བཟོད་པ་ འདི་འདྲ་ འདི།
 བསྐྱར་བཅོས་རྣམས་ལ་ རྒྱལ་མྱིན་ཅིད།
 ལྷ་མ་ཅག་རྣམས་ལ་ རྒྱལ་མྱིན་ཅིད། ॥ ༨

यथा कयंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतमतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं प्रदर्शयते ॥१४॥

རི་ལྡར་ཅི་ རིག་ལྡར་ མཚུངས་པར།
 བསལ་བ་ གང་དུ་ རིགས་བྱེད་པ།
 དེ་ རི་ དབྱེ་ ཞེས་བྱ་ ལྷ་ དེའི།
 ལྷ་མ་པ་ འདི་ནི་ རབ་བཤད་བྱ། ॥ ༩



अम्भोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।

इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

མཚེས་ལ་ ཁྱིེ་གྱི་ ལག་མགྲིལ་ རི །

ཁུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ ཅང་ཟད་དཔར །

ཅེས་པ་ ཚེས་དགེ་ དངོས་སུ་ རི །

མཚུངས་པ་རི་ཚེས་དག་བཟུང་ ཕྱིར་རེ ॥ १५

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले एव ।

इति प्रतीयमानंकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

ཁྱིེ་གྱི་གདོང་ བརྩ་ རི་ བཞིན །

སིག་དག་ ལྷན་པ་ ཁྱིེ་གྱི་ བཞིན །

ཞེས་པ་ ཚེས་གཅིག་ རྟོགས་ཕྱིར་པ །

དེ་ རི་ དངོས་པོ་རི་དགེ་ཉིད་ རི ॥ १६

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति ।

सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेव्यते ॥१७॥



ཁྱིཾ་གྱི་གདོང་བཞིན་པདྨ་ནི།
 རྣམ་པར་གྱས་པར་གུར་ཞེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྗོག་པའི་ཡིང་།
 བརྗོག་པའི་དཔེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ ༧ ॥

तवाननमिवाग्भोजमग्भोजमिष ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱིཾ་གྱི་གདོང་བཞིན་ཅུ་མྱེས་དེ།
 ཅུ་མྱེས་བཞིན་དུ་ཁྱིཾ་གྱི་ཞལ།
 ཞེས་པ་པར་ཅན་ཁྱད་འབགས་ནི།
 བརྗོད་པར་བྱེད་འདི་པར་ཅན་དཔེ། ॥ ༨ ॥

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यध्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱིཾ་ཞལ་པདྨ་ཉིད་དང་མཚུངས།
 གཞན་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།



ནེས་པ་ སུངས་པ་ གན་ བརྒྱུ་ ཅིར །
འདི་ རི་ རེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ ། ༢༠

यद्यन्तावत्तवान्वेति मुख्यमन्यथ तादृशं ।
अस्ति चेदस्तु तत्कारीत्यसाधनियमोपमा ॥२०॥

རི་ཞིག་ བྱིད་ གདོང་ བཟུངས་ །
རྗེས་འགྲོ་ གན་ཡང་ རི་འདྲ་བ་ །
གཡ་དེ་ ཡོད་ན་ རི་ བྱིད་འགྲུར་ །
ནེས་པ་ འདི་རི་ རེས་མེད་དཔེ ། ༢༠

समुद्ययोपमाप्यस्ति न कान्त्येव मुख्यन्तव ।
हादनाल्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमितीदृशो ॥२१॥

བྱིད་ གདོང་ སེམས་པ་ ཁོ་ན་ཡིས་ །
རྒྱ་བའི་ རྗེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ རི་ །
དགའ་སྐྱོད་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ རེས་པ་ །
འདི་འདྲ་ བཟུས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད ། ༢༡



त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इयत्येव मिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

ཁྱེད་ཀྱི་ཁལ་ རི་ ཁྱེད་ཉིད་ལ།
མཐོང་གི་ ཟླ་བ་ མཁའ་ལ་ མཐོང་།
འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ བ་དད་ དེ།
གཞན་མེད་ ཅེས་ འདི་ ཁྱད་བར་དཔེ ༥ २२

मय्येवास्या मुखधिरित्यलमिन्दोर्विकल्पनेः ।
एषोपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

དེ་ལྟེ་ བཞིན་དཔལ་ ང་ཉིད་ལ།
ཡོད་ ཅེས་ ཟླ་བ་ རྟེན་ས་ མི་དགོས།
བདུ་ལ་ ཡང་ དེ་ ཡོད་ གྱིར།
ཞེས་བ་ འདི་ རི་ རབ་བདག་ས་དཔེ ༥ २३

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्यं सुभ्रु विभ्रान्तलोचनं ।
तर्त्तं मुखत्रियन्धसामित्यसावद्भ्रुतोपमा ॥२४॥



གཡ་དེ་ བརྒྱ་ འགའ་ཞིག་ ལ །

སྒྲིན་ལེགས་ རྣམ་འབྲུལ་ སྒྲིག་ལྷན་ ན །

བྱོད་གྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ་ འཛིན་ དེ །

ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ མཛད་བྱང་དཔེ ༥ ༢༥

शशीत्युत्तमैक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखन्त्वन्मुखाशया ।

इन्दुमप्यनुधावामोत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་ལྷ་ བྱོད་ གདོང་ རི་བོང་ཅན །

ཞེས་ བདགས་ བྱོད་ གདོང་ བསམ་པ་ ཡིས །

རྒྱ་བ་ཡི་ ཡང་ ཇེས་སུ་བསྟེནས །

ཞེས་ འདི་ མཛད་པའི་དཔེ་རུ་ བཤད ༥ ༢༥

किम्पद्ममन्तम्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुखं ।

मम दोलायते चित्तमितीथ संशयोपमा ॥२६॥

པད་ནང་ བྱང་བ་ འཛིན་རམ་ ཅི །

བྱོད་ གདོང་ ལ་ སྒྲིག་ གཡོ་ འམ་ ཅི །



བདག་གི་སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཤོ་།
 ཞེས་པ་འདི་ནི་གྲེ་ཚེས་དཔེ་॥ ੨੫

न पद्मस्येन्दुनिग्राहस्येन्दुलज्जाकरी प्लुतिः ।
 अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

རྒྱ་པ་སྤྲངས་བྱེད་སེམས་པ་འདི་།
 རྒྱ་བས་ཚར་གཙོད་བདུ་མིན་།
 དེ་བྱིར་ཁྱིད་ཀྱི་གདོང་ཉིད་དོ།
 ཞེས་པ་འདི་ནི་ངེས་པའི་དཔེ་॥ ੨੭

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि भीमत्सुरभिगन्धि स ।
 अम्भोजमिव ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསེལ་ཟེར་ཅན་གྱི་དགུ་རྒྱ་དང་།
 དཔལ་དང་ལྡན་དང་དྲི་བཟང་གིས་།
 ཁྱིད་ཀྱི་གདོང་ནི་ཅུ་སྤྲེས་བཞིན་།
 ཞེས་པ་སྤྲང་བའི་དཔེ་ཅུ་བཤད་॥ ੨੮



सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

མཚུངས་པ་འདི་སྒྲི་ཡིས་ བཟོད་ཀྱི་ ལྷིར།

མཉམ་ཉིད་དཔེ་ ལྷི་ ཇི་ལྟར་ ན།

སྒྲིད་ཚལ་བྱེང་ འདི་ ལུ་སྟ་ བཞིན།

མཇོས་ལྟར་ སྒྲི་ལ་གྲི་ན་ན། ॥ २७

यद्य बहुरजश्चन्द्रः क्षयी साम्यान्तवाननम् ।

समानमपि सोत्सेकमिति निन्दोपमा मता ॥२७॥

པདྨ་ རྒྱལ་ མང་ རྒྱ་བ་ འཇོད།

དེ་དག་ ལས་ ནི་ བྱོད་གྱི་བཞིན།

མཚུངས་པ་ ལ་ ལ་ ཡང་ བྱོད་པར་བཅས།

ནིས་པ་ སྒྲིད་པའི་ དཔེ་རུ་ འཇོད། ॥ २८

ग्रहाणोप्युद्धवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमेय्यते ॥२९॥



སྒྲུ་མ་ རྒྱུ་མ་པ་དག་ཀྱང་སྒྲིང་།
 རྒྱ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཛིན་།
 དེ་དག་ བྱིད་གདོང་ སུའུ་མ་ ཞེས་པ་།
 དེ་ནི་ བསྐྱུགས་པའི་དབེར་ བཛོལ་ རོ ॥ ༣༡

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡིན་པ་ལྟ་ན་ རམ་ སྒྲིང་ འབྱུང་ ཡང་།
 བྱིད་གདོང་ རྒྱ་བ་ སུའུ་མ་ ཞེས་པ་།
 བཛོལ་འབྱུང་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡིད་།
 ཅེས་པ་ བཛོལ་འབྱུང་དབེར་ ཞེས་ རིག་ ॥ ༣༢

शतपथं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བརྒྱ་བ་ དང་ སྒྲིང་རྒྱ་ དང་།
 བྱིད་ཀྱི་ བདོང་ དང་ བསྐྱུས་པའི་ ནི་།



པན་ཚན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ།
 རི་ནི་ འགལ་པའི་དབེར་ བཟོད་དོ། ॥ ३२

न जातु शक्तिरिन्दोस्ते सुखेन प्रतिगर्जितम् ।
 कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

ཇི་མ་ལྟར་ ཞིང་ རྒྱན་གྱར་པ།
 རྒྱ་བ་ལ་ རི་ བྱིད་ གཤོང་ དང་།
 འགྲན་པའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ མེད།
 ཅེས་པ་ དགག་པའི་དབེར་ ཉིད་དོ། ॥ ३ॣ

मृगेक्षणादुन्तवद्वनमृगेणैवांकितः शशी ।
 तथापि सम पद्मासौ मोत्कर्षोति चद्रूपमा ॥३५॥

བྱིད་ གཤོང་ རི་དྲགས་མིག་གིས་མཚན།
 རྒྱ་བ་ རི་དྲགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན།
 རི་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད།
 བྱིད་འཕགས་ མིག་ ཞེས་ མཐོས་པའི་དབེར་ ॥ ३॥



न पद्यं मुलमेवेदं न भृङ्गो वञ्चुरी [12a] इमे ।
इति विसृष्टसादृश्यात्तत्वाध्यानोपमेव सा ॥३६॥

अदि'दि' वदि'दि' छि'दि' वद्ध' छि'दि ।
अदि'द्व' वृ'द'व' स'यि'दि' छि'दि ।
छे'स'व' रू'स'म'स'य' स'रु'द'स'व' व'स ।
दे'दि' दे'छि'दि'व'दे'दि'व'दि'द'वे ॥ ३५

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य सुखन्तव ।
आत्मनेशमवस्तुल्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

क्षि'व' वद्ध' द'व'दी' दि' ।
स'दे'स'व' व'स' अ'द'स' छि'दि'छि'दि' व'दि'द' ।
व'द'व'र'द'छि'दि' द'द' स'रु'द'स'व'र'गु'द' ।
वे'स'व' वृ'द'स'दे'दि'व'दि'द'वे ॥ ३७

सर्वपद्यमभासारः समाहृत इव कचिन् ।
त्वदाननं विभातोनि तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥



བདྲ་མཛེས་པའི་སྒྲིང་པོ་ཀྱན།
 འགའ་རྒྱུ་དག་དུ་བཟུས་པ་བཞིན།
 ཁྱེད་ཀྱི་གདོང་ནི་ནམ་མཛེས་ཞེས།
 དེ་ནི་བྱང་མིན་དཔེ་ཞེས་རིག༥ 34

इन्दुविम्बादिव विषं बभूवादिव पावकः ।
 परया वागितो बभूवादित्यसम्भावितोपमा ॥३३॥

རྩ་བའི་གཟུགས་ལས་དུག་བཞིན་དང་།
 ཅན་ལས་ནི་མེ་བཞིན་དུ།
 ཉམ་འདི་ལས་ནི་ཅུབ་མེའི་ཆིག།
 ཅས་པ་སྤྱད་པ་མིན་པའི་དཔེ༥

चन्द्रनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशोभितः ।
 स्फुटस्तवेत्यनिशयः प्रथयन्ती बहूपमा ॥३४॥

ཅན་ཅན་ཅུ་དང་རྩ་འོད་དང་།
 རྩ་ཤེལ་སྒྲིགས་བཞིན་ཁྱེད་ཀྱི་ནི།



རིག་པ་ བསེལ་ ཞེས་ ཁྱད་པར་ དག །

གསལ་བར་བྱེད་པ་ མང་བའི་དཔེ ། ༡༠

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धतम् ।

तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལུས་ལྷ་ ཁྱེད་ གཞིང་ བཞིན་རས་ རི

ཟླ་བའི་ དཀྱིལ་འཁྱིམ་ ལས་ བཏོན་ བཞིན་ །

མཐུངི་ རང་ནས་ ཡུང་བ་ བཞིན་ །

ཞེས་པ་ འདི་ རི་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ ། ༡༡

पुष्पयातप इवाहोव धूपा ज्योत्स्नोव वासरः ।

विक्रमस्त्वप्यधालुस्त्वमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་གྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས་ །

ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན་ །

རྣམ་པར་གཞིན་པས་ ཁྱེད་ལ་ དཔལ་ །

འཛིན་ ཞེས་ དེ་ནི་ ཡུང་བའི་དཔེ ། ༡༢



वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।

एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

गदःपदः दगःदेरुं छेदःगुणः किं ।

गदःदेरुं दगःदेरुं छेदःददः किं ।

दगःदेरुंदयेः छेदः ददःददः किं ।

गदःगदः ददः ददःदेरुंददःगदः ॥ ८३

स्ववाननमधीराक्षमाविर्दशनदीधिति ।

अमद्गुणमिवालक्ष्यकेसरं भाति पद्मजं ॥४४॥

सिद्धः गदःदः ददःदः किं ददःददः किं ।

सिद्धःददःददः ददःददःददः ।

ददःददःददः ददःददः ददःददः किं ।

गदःददः ददःददः ददःददःददःददः ॥ ८४

नलिन्या इव तन्वद्गुणास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।

मया मधुवतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥



བརྒྱ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་སྤྲ་མ།
 བརྒྱ་ བཞིན་དུ་ རི་ཡི་ བཞིང་།
 སྤང་ཅི་ སྤྱོད་བས་ བཞིན་དུ་ བྱི།
 བདག་གེས་ འབྲུངས་ཤིང་ འབྲུངས་ཤིང་ཅེས ॥ ༧༥

षस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
 साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिषस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉིང་བཞོད་ནས།
 རི་ཡི་ཆོས་ མཐུན་ རབ་བཞོད་པ།
 མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་པ་ཅན།
 གྲི་བོ་ དངོས་པོའི་དབེ་ ཡིན་ དབེར ॥ ༧༦

नैकोपि त्वादृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
 ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

གྲུ་ལ་བོ་རྣམས་ བྱི་ སྤྱོས་གྲུར་ ཀྱང་།
 ད་ལྟ་ བྱིད་ འདྲ་ བཞིག་ ཀྱང་ མེད།



ཡོངས་འདུ་དག་གི་རང་འབྱུང་ རྟོ །

གཉིས་པ་ ཇེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན ། ༧༡

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।

यद्वद्भवन्ति स्मृता सेयन्तुत्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །

ཆོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱུས་ནས །

གང་ སྐྱུས་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །

སྦྱོར་བའི་དཔེ་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ། ༧༢

दिवो जागति रक्षायि पुलोमारिर्भुवो भवान् ।

असुरास्तेन हन्यन्ते सायलेषा नृपास्त्यया ॥४९॥

སུ་ལོ་མའི་དགུ་ མཐོ་རིས་ དང་ །

ཁྱོད་ནི་ ས་སྐྱུང་ མེལ་ཆོ་བྱེད །

དེ་ཡིས་ ཇིགས་ལྡན་ ལྷ་མིན་ དང་ །

ཁྱོད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛོམས ། ༧༣



कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धात्रा सूर्यन्धेर्येण खार्जवम् ।
राजशत्रुकरोतीति सैया हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

རྒྱལ་པོ་ མཛེས་པས་ རྒྱ་བ་ ༥༨ །
 བཟེ་བྱིན་གྱིས་ རི་ ཉི་མ་ ༥༩ །
 བདན་པས་ རྒྱ་མཚོ་རི་ རིས་སུ་བྱེད །
 རིས་པ་ རའི་ རི་ རྒྱ་དཔེར་ ༦༠ ॥ ༥༠

न लिङ्गव्यञ्जने भिन्ने न होनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्धेगो न धीमता ॥५१॥

མེ་ལྷན་ མི་དབྱེས་མེད་ གང་ལ།
 ཇིས་པར་ དཔེ་ཡི་སྒྲིན་ དག་ རི།
 མ་དད་ དགས་ དང་ ཚོག་ལ་མེད།
 དམན་ དང་ ལྷག་པ་ ཉིད་ལ་འད་མེད། ॥ ༡༡

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तव्यया स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या भ्रनमिवार्जिता ॥५२॥



མ་ནིང་ འདི་འགྲོ་ བྱད་མེད་ བཞིན། །
 བྱད་མེད་ འདི་ ལྷ་ རྒྱུ་ལ་ བཞིན། །
 བདག་གི་ ལྷོགས་ འདི་ ལྷོག་རྣམས་ བཞིན། །
 རིག་ལ་ རྣམས་ བསྐྱབས་ རྩེ་བཞིན་ནོ། ॥ ༥༢

भवानिष महोपाल देवराजो विराजते ।
 बलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གནི་སྤྱོད་ བ་ རྩོད་ བཞིན་དུ། །
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་ལོ་ རྣམ་པར་མཛེས། །
 རྩེ་བེད་ཅན་གྱི་ རྣམ་ལ་ལ། །
 ལི་བདག་གཞི་ཡིས་ འགྲོང་བར་རྣམ། ॥ ༥༣

हत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येष जातुचिन् ।
 अस्ति च कचिदुद्वेगः प्रयोगे चाग्विदा यथा ॥५४॥

ཞེས་ལ་ རི་ལྷ་བྱ་ ལ་སྤོགས། །
 ལྷ་ལ་བཟང་ རྣམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད། །



ལྷོང་བ་ རག་ལ་ རག་རྩ་ན་ རྣམས་ ।
མི་དགུས་ལ་ ཡོད་ རི་ལྷོང་ན་ ॥ ༡༥

हंसीव धवलचन्द्रः सरांसीवामलं नमः ।
भर्तृभक्तो मटः श्वेत्त सद्योनो भाति भानुवत् ॥५६॥

ངང་མོ་ བཞིན་དུ་ རྒྱ་བ་ དཀར་ ।
མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁར་རྩི་མེད་ ।
བྱི་ བཞིན་ དཔར་མོ་ རི་ལ་ གུས་ ।
ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མི་བྱིར་ གསལ་ ॥ ༡༦

ईदृशं घर्त्यते सद्भिः कारणं त्वत्तु चिन्त्यताम् ।
श्ववह्नायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་འདྲ་ སྤྲོས་ཏེ་ མཁར་རྣམས་ གྱིས་ ।
ཁྱུ་ ཡང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་པར་བྱེས་ ।
བཞིན་ལྷོང་ལྷོ་བུ་རི་ལྷོང་ལྷོ་ ।
མཐུན་མཚུངས་ཡང་དག་མཚུངས་ དང་ མཉམ་ ॥ ༡༧



तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।

प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་པར་གསལ།

རབ་གསལ་གཟུགས་ཀྱི་ལྷ་ལོ་དང་།

གཉིན་ལོ་དང་ནི་དག་ལྷ་དང་།

སྐྱོ་སྐྱོར་དྲི་ག་དང་འགལ་དང་འདྲ། ॥ ५७

सदृकसदृशमंवादिसज्जालायानुवादिनः ।

प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्भिन्नाः ॥५८॥

བཟླ་བཅས་དང་ནི་བསྐྱེ་བ་དང་།

རིགས་མཐུན་རྗེས་སུ་སྐྱེ་བ་དང་།

གཟུགས་བརྒྱན་དང་ནི་སྐྱོ་སྐྱོར་ལྟེ་བ།

གཟུགས་སུ་རྒྱུ་མཐུན་མཐུས་དང་ཡང་དག་འདྲལ། ॥ ५८

सलक्षणसदृशाभसपक्षोपमितोपमाः ।

कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधौ अपि ॥५९॥



མཚན་ཉིད་མཐུན་པར་སུངས་པ་དང་།

མཐུན་ཕྱོགས་དངོས་བྱས་དཔེ་དང་དྲིལ།

དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སྟོགས་དང་།

རབ་དུ་སྒྲི་དང་སྒྲི་སྒྲི་བརྒྱུག ༥ ༡༦

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये नान्यूनार्थवाचिनः ।

समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥

རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྒྲི་དག་དང་།

གང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་རྟོག།

འབྲུ་མང་པོ་ཡི་རྟོག་སྒྲི་དང་།

རི་པོང་མཚན་མཐོ་གཤོང་ཅན་སྟོགས ༥ ༤༠

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।

आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འབྲན་དང་ཀྱུ་དང་སྒྲི་བ་དང་།

འཁྱུ་དང་མི་མཐུན་སྟོགས་པ་དང་།



འབྲས་པ་ ཏང་ མི་ རྒྱུ་པ་ ཏང་ །

སྒྲ་འཁོབས་བྱེད་ དང་ མྱོད་པ་ དང་ ॥ ༤༧

त्रिडम्बयति संरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसृयति ।

तस्य मुष्णानि सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुप्यति ॥६२॥

ཅོ་འདྲི་པ་ ༥༨་ འགྲོག་པ་ ༥༨་ །

མེད་ རང་ ཡག་དོག་ མི་ཡོད་ རང་ །

དེ་ཡི་ ལྷ་ལ་བཟང་ རུལ་གྱི་ཕྱི་ ༥༨ །

དེ་ཡི་ མཆོམ་པ་ རྒྱལ་ཁྱིལ་ རྩ་ ། ༤༥

तेन स्वार्थं विगृह्णाति तुलान्तेना]। 4a] धिरोहति ।

नत्पद्व्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहने ॥६३॥

དེ་དང་ འགྲན་ ལས་ རྩ་གཙོ་ དང་ །

ཀེ་དྲཱ་མེད་པ་ ལམ་ རྒྱལ་པོར་འཇགས།

རེ་ཡི་རྒྱུ་ལྟ་ ཀྱང་འཛོལ་ དང་ །

དེ་ཡི་རྣམ་པ་ལ་ རེ་གྲག་ དྲུག་ ॥ ༦༢



तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तस्त्रिषेधति ।

तस्य आनुकरोतीति शब्दाः सादृश्यमृचिनः ॥६४॥

दे'यी'हेस'अर्णो' हेस'सु'अर्ह' ।

दे'यी'ए'ह'थ' दे'अर्णो' ५८' ।

दे'यी'हेस'सु'ग्रे' ५९' ६०' ।

सु' ६१' ६२' ६३' ६४' ६५' ६६' ६७' ६८' ६९' ७०' ७१' ७२' ७३' ७४' ७५' ७६' ७७' ७८' ७९' ८०' ८१' ८२' ८३' ८४' ८५' ८६' ८७' ८८' ८९' ९०' ९१' ९२' ९३' ९४' ९५' ९६' ९७' ९८' ९९' १००' ॥ ८८

उपमैव तिरोभूतमेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्यञ्चरणपङ्क्तवम् ॥६५॥

५८' ५९' ६०' ६१' ६२' ६३' ६४' ६५' ६६' ६७' ६८' ६९' ७०' ७१' ७२' ७३' ७४' ७५' ७६' ७७' ७८' ७९' ८०' ८१' ८२' ८३' ८४' ८५' ८६' ८७' ८८' ८९' ९०' ९१' ९२' ९३' ९४' ९५' ९६' ९७' ९८' ९९' १००' ॥ ८९

५८' ५९' ६०' ६१' ६२' ६३' ६४' ६५' ६६' ६७' ६८' ६९' ७०' ७१' ७२' ७३' ७४' ७५' ७६' ७७' ७८' ७९' ८०' ८१' ८२' ८३' ८४' ८५' ८६' ८७' ८८' ८९' ९०' ९१' ९२' ९३' ९४' ९५' ९६' ९७' ९८' ९९' १००' ॥ ९०

५८' ५९' ६०' ६१' ६२' ६३' ६४' ६५' ६६' ६७' ६८' ६९' ७०' ७१' ७२' ७३' ७४' ७५' ७६' ७७' ७८' ७९' ८०' ८१' ८२' ८३' ८४' ८५' ८६' ८७' ८८' ८९' ९०' ९१' ९२' ९३' ९४' ९५' ९६' ९७' ९८' ९९' १००' ॥ ९१

५८' ५९' ६०' ६१' ६२' ६३' ६४' ६५' ६६' ६७' ६८' ६९' ७०' ७१' ७२' ७३' ७४' ७५' ७६' ७७' ७८' ७९' ८०' ८१' ८२' ८३' ८४' ८५' ८६' ८७' ८८' ८९' ९०' ९१' ९२' ९३' ९४' ९५' ९६' ९७' ९८' ९९' १००' ॥ ९२

अंगुल्यः पङ्क्तवान्यासन् कुसुमानि नखाचिपः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वजः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥



ལག་པ་འཁྱི་ཤིང་ སེང་མོ་ རྣམས་ །
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་འོད་ཟེང་ རི་ །
 མི་དོག་དུ་གྱུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དབལ་ །
 ཁྱིད་ནི་ འོད་ལ་ མའོན་སྤྲུལ་གྱི་ ॥ 55

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुने. दोज्योत्सनेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥६॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བཟུགས་དེ་ །
 སྤྲུལ་ བཟུས་པ་འཁྱི་གཟུགས་ཅན་ནོ་ །
 བཞིན་ ཟླ་ འཇུས་པ་འཁྱི་འོད་ཅས་ །
 གཟུགས་ཅན་ བཟུས་ དང་ མ་བཟུས་པ་འོ་ ॥ 56

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखद्विधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्मवधारणपङ्कजं ॥६८॥

སྔོང་སྔོང་དཔར་བའི་ འདབ་ཤིང་དང་ །
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན་ །



ཁྱིེ་ཀྱེ་ ལམས་ཀྱི་ རྒྱ་སྒྲིམ་ནི།

ས་སྒྲིེང་རྣམས་ཀྱི་ རྒྱི་བོར་ འཛིན། ॥ ༤༧

अंगुल्यादौ कलादित्वं पादे चारोप्य पद्यताम् ।

तद्योग्यत्वात्तद्वित्यासादेनत्मकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་ སོགས་ དང་།

ཀྱང་པས་ བརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས།

དེ་འོས་ བཀས་སུ་ རྣམ་བཞེད་པ།

འདི་ནི་ མཐའ་དག་ བརྒྱགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༤༨

[14b] अकस्मादेव ते खलिह स्फुग्निधस्पर्शवम् ।

मुखं मुकारवो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरीः ॥७०॥

གདུས་མོ་ སྒོ་བུར་ ཉིད་དུ་ནི།

ཁྱིེ་བའོང་ མརྒྱ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བའོ།

རྒྱ་གྱི་རྒྱ་ཡི་ཐིག་པ་ཡི།

དོག་པ་ སུ་དིག་ འོད་ཅན་ འཛིན། ॥ ༧༠



मञ्जरीकृत्य घर्मांस्तु पल्लवीकृत्य साधरं ।

नान्यथा कृतमत्रास्यमतोवयवरूपकं ॥७१॥

ॠद्वि०३० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

वलिमश्रु गलद्वर्मजलमालोहितेक्षणम् ।

विकृणोति मदावध्यामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

अविकृत्य मुक्ताङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।

आसीद्गमितमत्रेदमतोवयविरूपकम् ॥७३॥



འདིར་ནི་ གདོང་པ་རི་ཆ་གས་དག །
 རྣམ་འགྱུར་ ས་བྱས་ གདོང་པ་ཉིད །
 བསྐྱར་ བཞེད་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
 ཆ་གས་ཅན་གྱི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ७३

मद्पाटलगण्डेन रक्तलोत्रोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुग्धे सोप्येन जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཛེས་ས་ སྟེ་ས་པ་རི་ འཁྱུར་རྩེས་དཔར །
 མིག་གི་ ལྷུང་ལ་ དཔར་པོ་ཅན །
 བྱིད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ སྟེ་བོ་ནི །
 འདི་ཡང་ དཔར་པ་རི་ རང་བཞིན་ བྱས ༥ ७४

एकाङ्गरूपकञ्चैनदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगी मिदाकरो ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ སྟོགས་ཀྱི །
 ཡན་ཡག་ རྣམས་ ཀྱང་ གསལ་བྱེད་པ །



འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན།

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དང་བྱེད། ॥ ८१

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७८॥

གཤོང་ འདི་ འཇུག་པ་ནི་ མི་དོག་འབར།

གཡོ་བའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན།

ནེས་པ་ མི་དོག་ བྱང་བ་ དག།

འགྲོགས་པས་ལྷན་པ་ནི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८२

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं क्षिप्रनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तसाम रूपकम् ॥७९॥

གཤོང་ འདི་ འཇུག་ གཤོང་ རྒྱ་འོད་དང་།

སྐྱ་པ་པ་ནི་ མིག་གི་ རྒྱ་ལ་ཅན།

རྒྱ་འོད་ རྒྱ་ལ་ མི་འཇུག་པས།

འཇུག་པ་ནི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८३



रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयान् ।

रूपकं विषयं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས་ ཡན་ལག་ རྣམས་ ।

གཟུགས་བྱས་ གཟུགས་སུ་སྤྱོད་པ་ །

བདེན་པ་ མི་མཉམ་པ་ ཞིས་པའི་ །

གཟུགས་ཅན་ མཛེས་པ་ ཡིན་དེ་ དཔེར་ ॥ ११८

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।

नतिते धूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

སྤྱིས་པའི་ སཁར་རྩོམ་རབ་ དཔར་ཞིང་ །

སྤྱིན་པའི་འཁྲི་ཤིང་ བར་བྱེད་པ་ །

ཁྲིད་ བཛོད་ ལྷ་བས་ ཡིད་སྤྱོད་ཀྱིས་ །

འཛིག་དེན་ གསུམ་པོ་ བཞིས་པར་དུས་ ॥ ११९

हरिपादः शिरोलम्बजङ्घ्रुकृत्याञ्जलांशुकः ।

जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवञ्चजः ॥८०॥



ཇི་རྒྱུ་ལྟ་བུ་མེད་ཅུ་གོས་ ནི།

འབྲེག་བྱེད་ ཀང་པ་འུ་ཅེར་ལྡན་པ།

ལྷ་མིན་ རོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི།

དགའ་ལྷོད་རྒྱལ་མཆན་ རྒྱལ་གུར་ཅིག ༥ ༥༠

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।

पादे तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥

གང་ནིག་ ཁྱད་པར་ཚོགས་པ་ཡི།

གཟུགས་ཀྱི་རྒྱལ་མཆན་ འདི་འདྲ་བ།

དེ་ནི་ ཀང་པ་ ལ་ བཞོད་ དེ།

ཁྱད་པར་དང་བཅས་གཟུགས་ཅན་ནི༥ ༥༡

न मीलयति पद्यानि न नमोप्यवगाहते ।

त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणार्थेव य [15b] श्यति ॥८२॥

པར་སྐྱེས་མེད་ མི་རྒྱལ་ ཉིང་།

ནས་སྐུའ་ལ་ ཡང་ མི་འགྲོ་བ།



ཁྱེད་གདོང་ཐུ་བས་ བདག་གི་ནི །

སྒྲིག་རྣམས་ འཕྲིག་པ་ ཉིད་དུ་ བཟུ ། ༥༤

अक्रिया सन्दर्शनामन्यकार्यस्य च क्रिया ।

अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धमाम रूपकं ॥८३॥

ཐུ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །

གཞན་ གྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིར །

ཡང་དག་ བཟུད་ ཉེ་ ཉེ་ ཡི་ ཕྱིར །

འགལ་བ་ ཉེས་ཕྱིར་ གཞུགས་ཅན་ནི ། ༥༥

गाम्भीर्येण समुद्रोति गौरवेणासि पर्यतः ।

कामदत्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पवादपः ॥८४॥

ཁྱེད་ནི་ ཟབ་བས་ཀྱི་སེལ་དང་ །

བརྗེད་པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ ཇི་ལོ་ ཡིན །

འཇིག་དེར་ རྣམས་ལ་ འདོད་པ་ནི །

ཕྱིར་ ཕྱིར་ དཔག་ བསམ་ཀྱང་འབྱུང་ངོ་ ། ༥༦



गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।

कल्पद्रुमश्च कियते तद्विदं हेतुरूपक ॥८५॥

ॐ ईर ईर ॐ वर वर ॐ वर वर ॐ वर वर ।

कुं कुं ससं दवा वीसं कुं ससं ई ।

दवा वर वर वर वर वर वर वर वर ।

ॐ ईर ईर कुं वी वर वर वर वर ॥ ८५ ॥

राजहसापभोगाहं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।

सखि धत्ताभ्युजमिदन्तघेति त्रिष्टुपरूपकं ॥८६॥

वृत्तवत् ॐ वर वर वर वर वर वर ।

ॐ वर वर वर वर वर वर वर वर ।

ॐ वर वर वर वर वर वर वर वर ।

वर वर वर वर वर वर वर वर ॥ ८६ ॥

इष्टं साधर्म्यं वैधर्म्यं दर्शनादौ न मुख्ययोः ।

उपमाव्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥



གཙོ་བོ་དང་ནི་སལ་བ་ལ།

ཆོས་སྤྱད་ཆོས་ལི་སྤྱད་སྤོང་བས།

དཔེ་དང་ཐེག་པ་ཅན་ནེས་པ་འི།

གཟུགས་ཅན་རྣམ་པ་གཉིས་པོ་དོན་དཔེར། ॥ ८७

अथमालोहितच्छायो मदेन मुग्धचन्द्रमाः ।

सप्तहोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

ལྷོས་པས་ཀུན་དུ་དཔར་བ་ཡིས།

བཀབ་པ་བཞིན་གྱི་རྒྱ་བ་འདི།

འཆར་གཞི་དཔར་བ་པར་ཆོགས་པ་འི།

རྒྱ་བ་ལ་ནི་རབ་དུ་འགྱུར། ॥ ८८

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।

असमप्रोष्यतौ [16a] शम्भुदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་ནི་རྒྱ་བ་འགྱུརས།

བདག་གིས་ཁྱོད་གཞིང་རྒྱ་བ་འགྱུརས།



འདི་ནི་གང་ག་མ་ཡིན་ཡང་།

འདི་ནི་དག་དུ་དགེ་ལ་འཁོར་ཆོག་སྟེ། ॥ २०

मुखसुन्दरस्य चन्द्रत्वमित्यमन्योपतापिनः ।

न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

མཛོལ་མ་ ཁྱིེད་ གདོང་ རྒྱ་བ་ནི།

འདི་ལྟར་ ག་ནས་ དག་ གདུང་ཁྱིེད་པས།

རྒྱ་བ་ཉིད་དུ་ བཛོལ་མིན་ ཉེས།

དེ་ནི་ སྤང་བའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ २०

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।

भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

གུང་ས་མོ་ ཁྱིེད་ གདོང་ རྒྱ་བས་ ཀྱང་།

བརྟེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྤྲེག་པ།

བདག་ཉིད་ སྒྲ་ལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ ཁྱོེན།

ཉེས་འདི་ སུམ་འཛོག་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ २१



मुक्तापङ्कजरङ्गेस्मिन् मूलतानर्तकी तव ।

लीलानृत्यं करोतीति रम्यं रूपकरूपकं ॥६२॥

ཁྱེད་གདོང་ འདས་སྒྲིམ་ ར་ར་ འདིར །

སྒྲིན་སའི་ འབྲི་ཤིང་ གར་སྒྲུན་ས །

རེལ་སྒྲིག་ དགའ་བས་ གར་བྱེད་དོ །

ཞེས་པ་ གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན ༥ ༩༩

नेतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे स्मरारविमौ ।

पतानि केतराण्येव नेता दन्तार्चिषस्तथ ॥६३॥

འདི་ནི་ གདོང་སྒྲིན་ འདི་ བཏུ །

འདི་དག་ སྒྲིག་སྒྲིན་ འདི་ བྱང་བ །

འདི་ རྣམས་ གེ་སར་ ཉིད་ ཡིན་ འདི །

ཁྱེད་གྱི་ སོ་ཡི་ འོད་ཟེར་ སྒྲིན ༥ ༡༠

मुखादिस्थं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।

उद्भासितगुणोत्कर्षन्तस्थापहरूपकं ॥६४॥



གདོང་ ལ་སྟགས་བ་ཉིད་ བསྐྱོག་མེ །

པར་ ལ་སྟགས་ གཞུགས་བྱས་པས །

ཡོན་དར་ ཁྱད་འབགས་ གསལ་བྱེད་པ །

དེ་ཉིད་ བསྐྱོན་དོར་ གཞུགས་ཅན་ཙེ ། ༡༥

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।

दिङ्मात्रं वर्णितं धीरेरनुक्रमनुमीयताम् ॥६५॥

གཞུགས་ཅན་དབེ་ཡི་ རྣམ་རྟོག་ རྣམས་ །

མཐའ་ཡོད་ས་ཡིད་ དེ་ཡི་ལྟར་ །

ཐྱོ་ལྟར་ རྣམས་ཀྱི་ རྟོགས་ཅས་ བསྐྱར་ །

ས་བཟློད་ རྩམ་སུ་དབག་བར་བྱ ། ༡༦

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनेकत्र वर्तिना ।

सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥६६॥

རིགས་ དང་ ལྷ་བ་ ཡོན་དར་ རྩམ་ །

རྟོག་ གཞུག་ ལ་རི་ གནས་པ་ ཡིས་ །



གམ་དེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ སན་ན།

དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བཞུགས་ དཔེར་ ॥ ७६

पवनो दक्षिणः पणं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।

नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ཕྱོ་ཡི་རྒྱུར་ གིས་ འཁྲི་ཤིང་གི།

འདབ་ས་རྫིང་པ་ རྩ་གསལ་པར་བྱེད།

དུད་བའི་ལུས་ཅན་ས་རྣམས་ཀྱི།

ཁིངས་པ་ གསལ་དུ་ འཛོལ་ས་པར་བྱེད་ ॥ ७७

चरन्ति चतुरम्भोधिवेलोद्यानेषु दन्तिनः ।

चक्रघालाद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

ཁྱུ་འོ་ རུ་གཏེར་ བཞི་ རོགས་ཀྱི།

སྤྱིད་སྤྱིས་ཚལ་དུ་ སྤྱི་ཅན་དེ།

ཁིང་ལུག་ རི་བའི་ ཁིངས་སུ་ ཡང་།

ཁྱིད་ཀྱི་ ཡོན་དན་ ཀུན་དེ་ འོད་ ॥ ७८



श्यामलाः प्राचुरेण्याभिर्दिशो जीमूतपङ्क्तिभिः ।

भुवश्च सुकुमाराभिर्नवशाद्वलराजिभिः ॥६६॥

श्रुं च स द स ऋ द रं पुं ण स ऋ स स रं ।

द उ र ऋ स ऋ र ऋ ऋ च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ।

स च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ।

चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ॥ ७०

विष्णुना विक्रमस्येन दानवानां विभूतयः ।

कापि नीता कुतोप्यासन्नानीता दैवतर्धयः ॥१००॥

पु व र ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ।

दु र ऋ च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ।

च च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ।

च च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि च्चि ॥ १००

इत्यादिदीपकान्युक्तान्येषं मध्यान्तयोरपि ।

वाक्ययोर्दर्शयिष्यामः कानिचित्तानि तद्यथा ॥१०१॥



ཞེས་པ་ དང་པོ་ གསལ་བྱེད་ བཟུང་།
 དེ་བཞིན་ བར་ དང་ མཐའ་ ཡི་ ཡང་།
 ཆོག་དག་ བདག་གིས་ བཟུང་པར་བྱ།
 དེ་དག་ འགའ་ཞིག་ འདི་ལྟ་ལྟོ ॥ ༡༠༡

नृत्यन्ति निचुलोत्सङ्गे गायन्ति च कलापिनः ।
 अग्नन्ति च पयोधेषु दूरो हर्षाश्रु 17a] गर्भिणी ॥१०२॥

གར་བྱེད་ རི་ཚུ་ལ་ བར་བྱ།
 གྲུ་ ཡང་ ཡེན་ནི་ མདོངས་མཐའ་ཅན་།
 དགའ་བས་ རྒྱས་པའི་ ཆོག་དག་ ཀྱང་།
 རྩ་འཛིན་ལ་ རི་ གདོད་པར་བྱེད་ ॥ ༡༠༢

मन्दो गन्धवहः क्षारो वह्निरिन्दुश्च जायते ।
 अर्वाचन्दनपातश्च शल्यपातः प्रवासिनां ॥१०३॥

ཇི་བཞིན་ དལ་བྱ་ འགྲུ་བྱེད་དེ།
 རྩ་བ་ དག་ ཀྱང་ མི་རྩ་འགྲུར་།



ཅ་རྩ་གྲག་པ་ རྩུང་བ་ ཡང་།

མཆོན་རྩུང་ རཀྱམས་པ་ རྣམས་ ལའོ། ༥༢

जलं जलधरोद्गीर्णकुलङ्कहशिसण्डिनां ।

बलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

རུ་འཇིན་ གྱིས་ནི་ རབ་གཏོར་རུ།

ཁྱིས་གྱི་ གུའ་ལུང་ལྷན་པའི་ ཆོགས།

སྒྲིག་གི་ ཐག་པ་ གཡོ་བ་ ཡང་།

སེཾྱག་གཞུ་ཅན་དག་གི་ དུང་། ༥༣

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणालं शरासने ।

मयापि मरणे चेतस्यमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

ཁྱིད་གྱིས་ ཡུལ་ལ་ རྩ་བ་ལ།

འདོད་པས་ མདན་ རི་ མདན་ལྷན་ལ།

ངས་ ཀྱང་ སེམས་ནི་ འཆི་བ་ ལ།

གསུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས། ༥༤



शुक्लः श्वेताचिप्यो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूना रत्युत्सवप्रियः ॥१०६॥

द०ग०भु०ग०गु०स० ३० ३०द०द०ग०३० ।

२०३०३०द० ३०३०स० ३०द०३०३० ।

३०स० ३०द० ३०ग०स० ३०द०स० ३०ग०स०३०द०स०३०गु०स० ।

३०३०द० ३०ग०३०३०द० ३०ग०३०३०द०३०३०३० ॥ १०७

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्यपूर्वव्यपेक्षिणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

३०स० ३०ग०स० ३०ग०स०३०द० ३०३० ३०द० ३०द० ।

३०३०३०३०३०३० ३०३०३०३० ।

३०ग०३० ३०द०३० ३०द०३०३० ३०३० ।

३०३० ३०द०३०३०३०३०३०३०३० ॥ १०८

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।

कर्शयन्ति तु धर्मस्य माफलोद्धतशीकराः ॥१०८॥



སྒྲིང་གིས་ གཙུབས་བའི་ཆུ་ཐིགས་ཅན།

སྒྲིན་གྱིས་ ལུས་སེད་དག་གི་ རི།

ཨ་བ་ལེ་བ་ འབྲེལ་བར་བྱེད།

རྒྱལ་གྱི་ དག་རི་ སེལ་བར་བྱེད། ॥ ༡༠༤

अवलेपपदेनात्र बलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་རི་ སྒྲིན་གྱི་ཆིག་དག་ དང་།

ཨ་བ་ལེ་བའི་ ཆིག་དག་གིས།

བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྡན་བ་ རི།

འགལ་བའི་རིར་གྱི་གསལ་བྱེད་པོ་ ॥ ༡༠༥

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཆུ་འཛིན་ དག་གི་ སྒྲིང་བ་ འདིས།

སྒྲིགས་ནས་གྱི་ རི་ གོ་སྐབས་ འཛིན།



སྒར་མ་ ཡི་ རི་ རྩོགས་ རྣམས་ འཛིན་ ।
 དེང་ཡང་ བདག་གི་ལྷོག་ རྣམས་ ཡིན ॥ ११०

अनेकशब्दोपादानाम् क्रियैवैकाग्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

གང་ཕྱིར་རྩ་ འཛིན་ ཐུང་བ་ཡི་ ।
 བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་ཐུང་ འདིར་ ।
 དུ་མའི་ ལྷ་ཡིས་ ཉིར་སྒྲུངས་པ་ ।
 དེ་ཕྱིར་ དོན་གཅིག་གསལ་ཐུང་དོ ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मत्तमजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་བཞུན་པ་ ཡིད་འོང་ མཐོ་ ।
 ལྷོ་བསངས་ ད་སྒྲུ་ལ་ཡི་འོད་ ।
 ལྷིན་ རི་ མཁའ་ལ་ ལྷུ་ཐུང་ དེ་ ।
 ལྷཱ་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ ॥ ११२



अत्र धर्मैरभिधानामध्यानां वृन्तिनामपि ।

अमणेनैव सम्बन्ध इति विदुषां दीपकं ॥११३॥

འདིར་ རི་ ཆས་དག་ བ་དང་ མིར་ །

མྱིར་དང་ སྒང་པོ་ རྣམས་དག་ ཀྱང་ །

རྒྱ་བ་ཉིད་ ཀྱིས་ འབྲེལ་བའི་ སྤྱིར་ །

སྤྱར་བའི་དོན་གྱི་ གསལ་བྱེད་དོ ॥ ११३

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि क्षीपके ।

विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विचक्षणे ॥११४॥

རྣམ་པ་ འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ཡིས་ །

གསལ་བྱེད་ལ་ནི་ རྣམ་ཉོག་པ་ །

རྟོག་མ་ རྣམས་ ཀྱང་ རྗེས་འགྲོ་ཡིས་ །

སྐུམས་པ་ རྣམས་ ཀྱིས་ ཉོག་མ་བར་བྱ ॥ ११४

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

क्षीपकस्यान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥



གསལ་བྱེད་ཀྱི་ རི་ གསལ་ཉིད་དུ །
 རོད་བསྐྱོར་ ནང་ རི་ ཚོག་བསྐྱོར་ ནང་ །
 གཞིས་ཀ་ བསྐྱོར་བ་ རེས་བ་ ཡི །
 རྒྱན་ གསལ་པ་པོ་དག་ འདོད་དེ་ ནལེར ༥ ॥ ११४

धिक्कमन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो वलन्ति ककुमानि च ॥११६॥

ཀ་དམ་ རི་ རྒྱས་པར་རྒྱས །
 ཀུ་ཏ་ཚོ་རྒྱ་ས་ རབ་གསལ །
 ཀར་ལ་རི་ རབ་དུ་ བྱེ །
 ཀ་ཀུ་རྒྱ་ ཡང་ བྱེས་པར་གྱུར ༥ ॥ ११५

उत्करथयति मेघानां माला वनकुलापिनां ।
 यूनां चोत्करथयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྒྲིན་གྱི་ བྱེང་བ་ ནག་གིས་ རི །
 ས་བྱེད་ ཚོགས་ རྒྱས་ས་ སྒྲ་སྒྲིག་བྱེད །



ཁྱེ་ལྷན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ གྲིས་ དེང་ །

ན་རྒྱང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྡན་བྱེད་ ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भयानघ विहरत्यवरोधनेः ।

विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो द्विष गतः ॥११८॥

ཀླན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ ཁྱོད་ །

བརྩམ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ །

ཁྱོད་ཀྱི་དབྱ་ལྗེ་ མཐོ་རིས་ མཛེང་ །

ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ ॥ ११८

प्रतिरेधोकिराक्षेपन्नेकाल्यापेक्षया त्रिधा ।

अथास्य पुनराक्षेप्यमेदानन्त्याद्वनन्तना ॥११९॥

དགག་པ་ བརྗོད་པ་ འགོག་པ་ ལྟེ་ །

དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་པ་ གསུམ་ །

ཅེ་ལྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི་ །

དབྱེ་བ་ མཐའ་ལས་ ཡིར་ མཐའ་ལས་ ॥ ११९



अनङ्गः पञ्चमिः पुण्यैर्विभंज्यजयतेपुमिः ।

इत्यसंभाष्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

पुसः खेदः ग्रीः किं खेदेनः ग्री ।

खेदः पुसः ग्रीः पुसः पुसः पुसः ।

उसः पुः खेदः पुसः पुसः ।

पुसः पुसः पुसः पुसः पुसः ॥ १२० ॥

इत्यनङ्गजयायोगयुसिर्हेतुबलादिह ।

प्रवृत्तैर्ब यदाक्षिता वृत्ताक्षेपस्तद्वीवृताः ॥१२१॥

वृत्ताः पुसः पुसः पुसः पुसः ।

पुसः पुसः पुसः पुसः पुसः ।

पुसः पुसः पुसः पुसः पुसः ।

पुसः पुसः पुसः पुसः पुसः ॥ १२१ ॥

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाणि ।

किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥



ལྷ་ན་ལྷོགས་ས་ དག་ ཅི་ཡི་བྱིར །

ན་བ་ལ་ནི་ ལྷ་དྲམ་ འདྲུག །

ལས་ འདི་ལ་ ནི་ རྩར་མིག་དག །

ཡོངས་རྫོགས་ མིན་པར་ མཐས་སམ་ ཅི ༥ ༡༤༤

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्यत्ये [186] वासितोत्पलं ।

कर्णे काचित्प्रियेणैवं चाटुकारेण कथ्यते ॥१२३॥

འགའ་དིག་ དགར་མིན་ ལྷ་དྲམ །

ན་བར་འདྲུག་ལ་ མཛོར་བོ་ཡིས །

དེ་རྩར་ བསྟེན་པས་ མཛོས་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ མཛོན་གྱར་ འགྲོག་པ་འོ ༥ ༡༤༥

सत्यं प्रयीमि न त्वम्मान्द्रष्टुं वल्लभ लक्ष्यसे ।

अन्यद्युम्यनसंकान्तलाक्षारतेन वक्ष्या ॥१२४॥

ཛོ་བོ་ བདེན་པར་ རྒྱ་འོ་ བདག །

གནན་ དང་ཅུསྲ་ནས་ འཁོས་བའི །



ཀྱི་སྒྲིག་ས་ཀྱི་ས་དཔར་ མིག་གི་ས་ནི །

ཁྱིད་ཀྱི་ས་ མཐོང་བར་འགྱུར་ མ་ལག་ས ༥ १२८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यम् ॥१२५॥

ཡུར་ཉིད་ ཤིན་ཏེ་ཁྱིངས་ཐུན་སས །

ནམ་ནིག་ འདི་ཡིས་ གཞིན་པ་ དག །

འདྲུང་བ་ དེ་ལྟར་ འགྲོག་ཁྱིད་པ་ །

འདི་ནི་ འབྲུང་འགྱུར་ འགྲོག་པའོ ༥ १२९

तत्र तन्वङ्गि मिथैव कदमङ्गेषु मार्दवं ।

यत्रि सत्यम्पृदून्येव किमकारुहे कजन्नि मां ॥१२६॥

ལུས་ལྔ་ ཁྱིད་ཀྱི་ ཡན་ལག་ ནས་ས །

འཇམ་པ་ ཉིད་ཏུ་ གནས་པ་ བརྩུན །

གཡ་དེ་ བདེན་པར་ འཇམ་པ་ན །

སྒྲི་བུར་ཏུ་ བདག་ ཅ་ལ་ གདུང་ ༥ १३०



धर्माक्षेपोयमाक्षिसमङ्गनागात्रमार्द्धवं ।

कामुक्तेन यद्वैश्वं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

གང་ཁྱིར་ རེ་ལྟར་ འདོད་ལྟར་ གྱིས།

རེ་ དང་ འགལ་བའི་ལས་ གྱིས་ རི། ॥ १२७

བྱད་མེད་ ལུས་ འདི་ འཇམ་པ་ དག།

འཁོག་པ་ འདི་ རི་ ཚེས་ འཁོག་པ་འོ།

सुन्दरी सा नवेत्येव विभेकः केन जायते ।

प्रथामात्रं हि सरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

རེ་རི་ མཇེས་ས་འས་ ཡིད་ཤེས།

རྣམ་རིག་ འདི་རི་ ཅི་ལས་སྟེ།

རེར་རི་ འདོད་ཅས་ གཡོ་བ་ ཉིད།

མཐོང་བར་གྱུར་གྱི་ རེད་ས་ཡིད། ॥ १२८

धर्म्याक्षेपोयमाक्षिसो धर्मोऽयमं प्रमाद्वयं ।

अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याख्यं विवक्षता ॥१२९॥



གང་ འདིར་ གཟུགས་ཅན་ས་ རོ་སའོར་ ।
 བཟོད་པར་ འདོད་པས་ འོད་ཅེས་པའི་ ।
 ཆོས་ འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ।
 འགོག་འདི་ ཁས་སྤངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ॥ ༡༩

अधुना [19a] तव रम्येते स्फुरत्यधरपुत्रवः ।
 भुवौ च भुमे न तथाप्यदृष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥

ཁྱེད་ཀྱི་ སྤྱི་ནི་ དཔར་གུར་ ཅིང་ ।
 མཆུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ ।
 སྤྱིན་ས་ འཁྱོག་ལྗེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ ।
 ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས་ ॥ ༡༩

स एव कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोऽत्र यत्त्रियेण पट्टीयसा ॥१३१॥

གང་གྱིར་ མཇེའ་ལོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ ।
 འདི་དག་ འདིར་ནི་ རྒྱ་ འགོག་པའོ་ ।



འཛིགས་པ་ ཡི་ནི་ རྒྱ་ཡི་གཙོ།

རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥ १३१

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।

एषाञ्च पुल्ला निबुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཇེའ་བོ་ དག་ ནི་ རིང་ན་ གནས།

རྒྱ་འཛིན་ བགྲོད་པ་ འདི་ནི་ འཇེས།

ནི་ཚུ་ལ་ ཡང་ རྒྱས་པར་ མགྲོང་།

བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག། ॥ १३३

कायांक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।

तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་རྒྱ་རྒྱ་འཛིན་ བགྲོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བགྲོད་ གནས།

འབྲས་བུ་ འཆི་བ་ བརྗོག་པའི་ཕྱིར།

དེ་ནི་ འབྲས་བུ་ འགོག་པ་འོ། ॥ १३३



न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

གཡ་དེ་ གཤེགས་ན་ གཤེགས་པར་ བཤོད་ །

ཁྱོད་ཀྱི་ བཤོད་པས་ བདག་ལ་ ཅི་ །

གདུང་བ་ ཡུན་རིང་ འགྲུང་མི་འགྲུར་ །

འདི་ལ་ ཁྱོད་ནི་ དགས་མི་འཚལ་ ॥ १३४

इत्यनुष्ठामुत्पेनेव कान्तस्याश्रिष्यते गतिः ।

मरणं सूचयन्त्येव सोऽनुष्ठाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ཞེས་པ་ འཆི་བ་ གསལ་བྱེད་པས་ །

ཆེས་གདང་ ཉིད་ཀྱི་ གློ་ནས་ ཅི་ །

མཇེར་བའི་ བཤོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ །

འདི་ནི་ ཆེས་གདང་ འགོག་པར་ བཤོད་ ॥ १३५

धनञ्जय बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणसं [19b] देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥



རྫོང་ནི་ མང་པོ་ རྫོང་ འགྲུར་ རྫོང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ རྫོང་ དགོ །
 བདག་སྤྱོད་ལ་ ཡང་ བྱེ་རྫོང་མེད །
 འོན་ཀྱང་ མཇེའ་པོ་ འགྲོ་མི་བྱ ༥ ༡༢༩

प्रत्यावक्ष्णया हेतून् प्रिययात्राविबन्धिनः ।
 प्रभुस्येनेव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇེའ་པོ་ འགྲོ་བར་ སྤྱོད་པ་ ཡི །
 རྫོ་ རྣམས་ དག་ རི་ རབ་བཤད་ནས །
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ དེ་ འགྲོག་པ །
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགྲོག་པ་འོ ༥ ༡༣༠

जीविनाशा बलवतो धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा लिप्य वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་རེ་ རྫོབས་དང་ལྔ །
 རྫོང་གྱི་ བསམ་པ་ རྫོབས་ལྔ་ནི་ན །



མཇེ་ལོ་གཤེགས་སམ་བཟུགས་ལགས་སམ།

རང་གི་གནས་སྐབས་སྟོམ་པ་ལགས། ॥ १३८

असावनादराक्षेपो यदनादरचम्रतः ।

प्रियप्रयाणं हन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्त्या ॥१३९॥

གང་ལྟར་འདྲིར་ནི་ཆགས་ལྟར་སམ།

མཇེ་ལོ་ལོ་བཟོད་པ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།

མ་གུས་བཞིན་དུ་ཆོག་སྟེར་བ།

འདྲི་ནི་མ་གུས་པས་འགོག་བཟོ། ॥ १३९

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।

ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवाम् ॥१४०॥

མཇེ་ལོ་གཡ་དེ་གཤེགས་ན་བཟུད།

ཁྱོད་གྱི་ལས་ནི་ཤིས་གུར་ཅིག།

གང་དུ་ཁྱོད་ནི་གཤེགས་པ་དེར།

བདག་གུང་སྟེ་བ་ཉིད་གུར་ཅིག། ॥ १४०



इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वावधर्मना ।

स्थावस्थां सूचयन्त्येव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे'ङ्ग'र' शै'स'वङ्गे'द'ल'स' ग्री'स' ग'द' ।

र'द'ग'ी' ग'र'स'स'ल'स' ग'स'ल'ग्री'द'स'स' ।

स'ह'र'व'र'ी' व'ग्री'द'स' र'ग्री'ग'ग्री'द'स' ।

र'द'र'ी' शै'स'वङ्गे'द' ग्री'स' र'ग्री'ग'स'र' ॥ १८१

यदि सत्यैव यात्रा ते काव्यन्या मृग्यतां त्वया ।

अहमद्यैव कृष्णास्मि रन्त्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

ग'ल'द' ग्री'द'र'ग्री' व'दे'र'ग्री'द' र' ।

ग्री'द'ग्री'स' ग'र'र'स' र'ग'र'ग्री'ग' क'ल' ।

व'द'ग'र'ी' ग्री'ग'क'ल' र'र'ी'व'र'ी'स' ।

दे'र'ी'द' र'ी'द'द' र'ग्री'ग'स'र'र'ग्री'द' ॥ १८२

इत्येव [20a] परयाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याश्लिष्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥



གང་གྱིར་ མཇེར་བའི་ དབང་གུར་མས །
 མཇེར་བའི་ བཞུད་པ་འགོག་བྱེད་པ །
 ཆོག་རྩལ་ ཡི་གེ་ སྤྲོད་འགྲོ་ཅན །
 འདི་ནི་ རྩལ་ མོས་ འགོག་པ་འོ ༥ ༡༦༡

गन्ता खेद्गच्छ तूर्णन्ते कणं यान्ति पुरा रथाः ।
 आर्तबन्धुमुखोद्गोर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གཡ་དེ་ གཤེགས་ན་ སྤར་དུ་ བཟུད །
 སྤྱི་ནས་ གཉེན་ འདུན་ འབྲུགས་པའི་ཁས །
 བསྐྱགས་པའི་ཆེ་ངེ་ འགྲོ་བ་ ཡི །
 གོགས་གུར་ ཁྱེད་ཀྱི་ ར་བར་ འོང་ ༥ ༡༦༢

साचिन्द्राक्षेप एवेव यत्र प्रतिनिध्यते ।
 प्रियप्रयाणं साचिन्द्रं कुर्वत्येकान्तरतया ॥१४५॥

གང་གྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཅིག་དུ །
 ཆགས་མས་ ཁྲིས་ཉིད་ བྱེད་པ་ ཡིས །

མཇེལ་བོའི་ བཞུད་པ་ འགོག་པ་ འདི།
བྱེས་ཉིད་ ཀྱིས་ནི་ འགོག་པ་ལོ། ༢༧

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणो ।
निर्गच्छति मुखाद्वाणी या ना इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ ཁྱོད་དགེས་ བཞུད་ འདོད་ཀྱང་ །
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཆོག་ །
ས་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི་ །
བྱང་བར་ གྱུར་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད་ ॥ ༡༠༩

यत्ताक्षेपस्त यज्ञस्य ह्यस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४५॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས །
འབྲས་བུ་ གྱིན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས །
དོན་མེད་ ཉེ་བར་ བཟུང་པའི་ གྱིར །
དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པའོ ॥ ༡༥༥



क्षणदशानविघ्नाय पक्षमस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्त्वं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

སྒྲིང་ཅིག་ལྷ་པོ་ལྷོ་གཤམ་བྱིད་པོ་ །

ཇི་མ་ བསྐྱོད་པ་ལ་ ཁྱོ་བ །

ཁྱོད་ཀྱིས་ མཇེའ་བར་ འགྲོ་བ་ སྤྱོས །

བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་པ་ འདོད ॥ ༡༤༨

अथ परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तथा निविध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपलूचनात् ॥१४९॥

གང་གྱིར་ མཇེའ་བོའི་ གནད་དབང་མ །

དེ་ཡིས་ བགྲོད་པ་ འགྲོག་བྱིད་ཅིང་ །

དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱིད་ གྱིར །

འདི་ནི་ གནད་དབང་ འགྲོག་པ་ལོ ॥ ༡༤༩

सहित्ये विरहं नाथ देहावृत्त्याञ्जनं मम ।

यदतनेत्राद्बुन्दपः प्रहन्तु मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲུལ་བ་ བཟོད་པར་ བགྱི།
 གང་གེས་ མིག་ བཞེས་ བདག་ལ་ནི།
 འདོད་པས་ བསྐྱར་དུ་ མི་མཐོང་བའི།
 མཐོང་མིན་ མིག་སྐྱར་ བདག་ལ་ ལྟོལ། ॥ ༡༣༠

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपकथ्यते ।
 पत्न्युः प्रस्थानमित्वाहुरुपायास्तेपमीदृशं ॥१५१॥

འཚོ་བའི་ཐབས་ ནི་ དཀའ་བ་དག།
 ཉི་བར་བཀོད་ནས་ བདག་ལ་ནི།
 འགྲོ་བ་ འཁོག་པར་བྱེད་པའི་ ཕྱིར།
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འཁོག་པར་བཟོད། ॥ ༡༣༡

प्रवृत्तं व प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखान् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा समास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ ཁྱེད་ཀྱི་ རྣལ་ནས་ ཚོག།
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་བ་ ཇེས་པར་བྱང་།



མཛེའ་བ་ ནམན་བ་ ཁྱིད་ཀྱིས་ ན །

མ་ཕྱིན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ༥ ༡༠༩

रोषक्षेपोयमुद्रिकस्नेहनिर्यस्तृणात्मया ।

संरक्षया प्रियारब्धं प्रयाणं यन्निवायते ॥१५३॥

མཛེའ་བ་ ཀྱིས་བས་ མ་བསྐྱམས་བའི །

བདག་ཉིད་ ཁྱི་བས་ མཛེའ་བོ་ཡི །

འགྲོ་བ་ ཅེས་བ་ བསྐྱོག་བ་ བང་ །

འདི་ནི་ ཁྱི་བས་ འགྲོག་བ་འོ ༥ ༡༠༩

माघातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।

त्वद्भिर्वा वीर्यिकास्त्वेव विशीर्णं शीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྐྱམས་ བུ་མེད་ན་བ་ལ །

མ་བུས་ རང་ལ་ མ་བདབ་བར །

ཁྱིད་ཀྱི་ ནག་ཡི་ རིང་ ཉིད་དུ །

ཡུལ་ སྤོན་པ་ རྒྱུ་མ་པར་གྱུར ༥ ༡༠༩

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।

व्याचर्त्य कमं तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

झुंङ्ङेस् वडस् वङ्ङिस् ङुङ्ङल् ।

ङ् टेस् लस् ङिस् वङ्ङिस् वुस् ङस् ।

सुङ्ङस् लस् वङ्ङिस् ल्वस् लुङ्ङिस् ।

लङ्ङिस् झुंङ्ङेस् लङ्ङिस् वङ्ङिस् ॥ १५५

अर्थो न संभूतः कश्चिन्न वि[2।a]द्या काचिदजिन्ता ।

न तपः संचितं किंचिद्रुतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

ङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् ।

ङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् ।

ङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् ।

ङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् लङ्ङिस् ॥ १५६

असावनुशयाक्षेपो यस्मानुशयोत्तरं ।

अर्थाज्जुनादेव्यवृत्तिर्दृशिन्नेह गतायुग ॥१५७॥



གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སྒྲིང་བས །
 རྟོན་སྒྲུབ་ ལ་སྒྲིགས་ འགྲོག་པ་ནི །
 འགྲོད་པ་ གཙོ་བོར་ སྟོན་བྱེད་པ །
 འདི་ནི་ འགྲོད་པས་ འགྲོག་པ་འོ ༥ ༩༡

किमयं शब्दंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतद्रूपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयद् ॥१५८॥

ནི་འདི་ སྟོན་གྱི་ཅུ་འཛིན་ ནས །
 ལང་ན་ ངང་པ་འོ་ཆོགས་སས་ཅི །
 སྒྲི་ནི་ ཀང་གདུབ་གྱི་ འདྲ་བ །
 བྲོས་པས་ དེ་ནི་ ཅུ་འཛིན་ མིན ༥ ༩༢

इत्ययं संशयाश्लेषः संशयो यन्नित्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टमनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་པ་ལ་ ཡོད་ཅིང་ །
 སྒྲི་ན་གྱི་ རིགས་ལ་ མ་རིག་པས །



གང་ནིག་ གེ་ཚེས་ རྫོག་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ གེ་ཚེས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༥༠

अमृतात्मनि पद्मानां ह्येष्टरि शिष्यनारके ।

मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་ཅིན་ བདག་ ཅིད་ བསྐྱ་ཡ།

ཡང་ ཁིང་ སྐྱུ་མ་པའི་ ཏུ་ར་གི།

ཁྱིད་ གདོང་ རྫོག་ འདི་ ཡོད་ བཞེན།

རྫོག་ གནད་གིས་ ཅི་ནིག་ བྱ། ॥ ༡༥༠

इति मुख्येन्दुराक्षिमो गुणान्मौणेन्दुवर्त्तिनः ।

तत्समान्दर्शयित्वेति स्मिष्टाक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

པལ་པའི་རྫོག་པ་ཡ་ བཞེན་པ།

དེ་ མཚུངས་ ཡོད་ཏན་ བཟུན་བྱས་ནས།

གཙོ་པོའི་རྫོག་ འགོག་བྱེད་པ།

ནས་པ་ དེ་ལྟར་ སྐྱར་བས་ འགོག། ॥ ༡༥༡



चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरदीर्णस्य हविर्मु[21b]जः ॥१६२॥

ཐམས་ཅད་མཉན་ ཡང་ ཁྱོད་ཀྱི་ནི ॥

ནམ་གཤོན་ ཆོས་པ་ མེད་པ་ མཚར་ ।

ཡང་ན་ བསྐྱེག་ཟ་ འབར་བ་ལ།

ཆོས་པ་དག་ ནི་ ནམ་ཞིག་ མཐོང་ ॥ १६२

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रकान्तोयं निषर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ རོན་ གཞན་དག་ ।

དེ་ཡི་ ཆོས་ མཚུངས་ བཟུན་བྱས་ནས་ ।

ཡ་མཚན་ ཆོས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥

འདི་ནི་ རོན་ གཞན་ འགོག་པ་ལྟེ་ ॥ १६३

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं वदासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्भनमर्थिनः ॥१६४॥



སྒྲིན་པ་བོ་ ཞེས་ རྣམ་ཡང་ རི །
 མི་དབང་ བྱོད་ལ་ མི་བཟོད་དེ །
 གང་ཕྱིར་ སྒྲོང་བས་ བྱོད་ཀྱི་མོར །
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་རྣམ་ ཡིན ༥ ༡༥༦

इत्येषमादिगक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयेव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སྒྲོགས་ འགྲོག་པ་ནི །
 རྒྱས་ འགྲོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་མྱེ །
 སྒྲོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ རྣམ་པར་ཉིག །
 གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་རྣམ ༥ ༡༥༧

शेषः सौर्यान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः ॥१६६॥

གང་ནིག་ དངོས་ འགར་ རབ་བཞོད་རྣམ །
 དེ་ཡི་ སྒྲུབ་བྱེད་ རྣམ་པ་ཅན །



དངོས་པོ་གནས་དག་ འགོད་པ་དེ །

དོན་གནས་ འགོད་པར་ ཤེས་པར་བྱ ། ༡༩༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः स्तोत्राविदो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །

སྤྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འོས་བྱེད་ དང་ འོས་པའི་བདག །

འོས་དང་ མི་འོས་ བརྒྱུག་པ་འོ ། ༡༩༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिणाः ।

उदाहरणमालिङ्गा रूपव्यक्तये निदर्शयते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྟོན་ །

སྟེར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཚོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་ལྟར །

དཔེར་ བཟོད་ སྟོང་བ་ བཞུན་པར་བྱ ། ༡༩༡



अगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घयते ॥१६६॥

ཨེགས་ལྷན་ འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་མིག་ ।

ཉི་མ་ དང་ནི་ རྒྱ་བ་ ཡང་ ।

རྣམ་པར་གྱུར་བ་ ཉིད་ལ་ ཁྱོས་ ।

ངེས་བ་ལ་ རི་ སུ་ཡིས་ འགྲོངས་ ॥ १६०

पयोमुचः परीतापं हरस्येते शरीरिणां ।

मम्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

རུ་འཛིན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ ཀྱི་ ।

ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ འཕྲོག་པར་བྱེད་ ।

ཆེན་པོ་རྣམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས་ ।

གཞན་ ཀྱི་ སྤྱད་བསྐྱེད་ རི་ སྤྲོད་དུ་འོ ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

ས་ལ་ཡ་ཡི་ རྒྱང་གིས་ ཅི།

འཛིག་རྟེན་ དགའ་བ་ སྤྱོད་པར་བྱེད།

དུ་གྲི་ཏུ་ དང་ ཡང་དག་ལྡན།

ཀུན་གྱི་ སྤྱིང་སྤྱུག་ ས་ཡིན་ནས། ॥ १७१

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निराकरः ।

अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥

སཆན་མོང་བྱེད་ འདི་ ཅི་ས་ དང་།

ལྡན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་ སྤྱོད།

གཉིས་སྤྱིས་དབང་པོ་ སྤྱོད་ལྡན་ ཡང་།

གཞན་དག་ ཅིས་སུ་འཛིན་པར་ནས། ॥ १७२

मधुपानकलात्कण्ठाभिर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।

कटुर्भवेति कणस्य कामिनां वापमीदृशम् ॥१७३॥

རྒྱང་རྩི་ འཕྱངས་པའི་ མགྲིན་ སྤྱོད་ ལས།

ཡུང་བ་ རྒྱང་བའི་ སྤྱོད་དག་ ཀུང་།



ན་བར་ རྩ་བ་ ཉིད་ འགྱུར་བ་ །
འདོད་ལྟར་ རྣམས་ཀྱི་ སྒྲིག་ འདི་འདྲ་ ॥ ༡༧༢

अयं मम बह्व्यङ्गमम्भोजमलसंस्तरः ।
हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཅུ་སྒྲིམ་འདབ་སའི་སལ་སྒྲན་ འདིས་ །
བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གདུང་བར་བྱེད་ །
སྒྲིག་བའི་ བདག་ ཉིད་ བསྒྲིག་ཟ་ དང་ །
འདྲ་བས་ རིགས་པ་ ས་ཡིན་ ནས་ ॥ ༡༧༣

श्लिणोतु कामं शीतांशुः किं वसन्नो तुनोति मां ।
मलिनाचरितं कर्म सुरभेर्नन्वसाम्यतम् ॥१७५॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ རྣམས་བྱེད་ མེད་ །
དབྱིད་ ཀྱིས་ བདག་ནི་ ཅི་ལ་ གདུང་ །
དི་ས་ཅན་གྱིས་ སྒྲིད་བའི་ ལས་ །
དག་པས་ མི་འོས་པ་མིན་ནས་ ॥ ༡༧༤



कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।
न हीन्दुगृहेषूप्रेषु सूर्यगृहो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गु'सुद'अ' अ' स्ये'वे'र ।
ए'र'ए'ए'ए'ए' र'र'र'र' ।
सु'व'स' ए'ए'र'र'र' र'र'र'र' ।
र'र'र' ए'ए'र'र' र'र'र'र' ॥ १७६ ॥

शब्दोपास्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोद्बोधोः ।
तत्र यस्मैदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥१७७॥

सु'र'र'र'र'र' र'र'र'र' ।
र'र'र'र' ए'र'र'र' र'र'र'र' ।
र'र' र'र'र' र'र'र'र' ।
र'र' र'र'र'र' र'र'र'र' ॥ १७७ ॥

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।
गुणैस्तुल्योसि मेदस्तु वपुर्वैवेदशेन ते ॥१७८॥



བདན་ ནང་ རྟེན་གྱི་ བདག་ཉིད་དང་ །

ལ་བ་རྒྱ་ སྐྱེས་ ཡོན་ཏན་གྱིས་ །

ཁྱེད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ མཚེངས་ བ་དད་ །

ཁྱེད་ལུས་ འདི་འདྲ་ ཉིད་ གྱིས་སོ ༥ ༡༧

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मैकत्र वर्तिना ।

प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्तिनः ॥१७६॥

གཅིག་ལ་ གནས་པའི་ཆོས་ གྱིས་ནི་ །

གཉི་ག་ལ་ གནས་ བ་དད་ དག་ །

དྲི་གས་པའི་ ལུ་ལ་དུ་གུར་པའི་ ལྷོར་ །

འདི་ནི་ གཅིག་གི་ ཁྲོག་པ་ཅན་ ༥ ༡༡༠

अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।

असावजनसङ्काशस्त्वन्तु वामीकरच्छत्रिः ॥१८०॥

རྒྱ་ཡི་ཡང་ཕོ་དག་ ནང་ ཁྱེད་ །

མཚམས་ ལས་ མི་འདྲ་ ཟབ་པ་སྟེ་ །



འདི་ནི་ མིག་སྒྲུབ་ དང་ མཐུངས་ལ།

ཁྱིད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནི༥ ॥ १८०

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।

काण्यं पिशंगता चोभौ यन्पृथादर्शिताविह ॥१८१॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི།

འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ བག་ཤོ་ དང་།

སེར་ཤོ་དག་ནི་ བ་དད་ བལྟན།

འདི་ནི་ གཉི་གའི་ རྒྱུག་པ་ཅན༥ ॥ १८१

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महामत्स्वसतेजसौ ।

इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्मवान् ॥१८२॥

ཁྱིད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ ཏུ་རྒྱ་ལོ།

མཐུ་སྒྲུ་ ཏི་ཇོ་ བཅས།

འདི་ཡིས་ ཁྱིད་ གཉིས་ བ་དད་དེ།

དེ་ནི་ རྒྱ་བདག་ ཁྱིད་མཁས་སོ༥ ॥ १८२



स एव श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दृश्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

ॠ३३३३३ ॥ १८३ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८४ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८५ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८६ ॥

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षां न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

ॠ३३३३३ ॥ १८५ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८६ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८७ ॥
ॠ३३३३३ ॥ १८८ ॥

यदपि महौ कृत्वां सशैलद्वीपसागराम् ।
मृतंभावाद्भुजंगानां शेषस्त्वत्तो निरुप्यते ॥१८५॥



རི་སྒྲིང་གྲུ་མཚོར་ བཅས་བ་ཡི།
 ས་གནི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མེད་ཀྱང་།
 ལག་འགྲོ་ནམས་ ཀྱི་ རྩེར་ གྱུར་ སྤྱིར།
 ལྷག་ས་ཅན་ནི་ ཁྱོད་བས་དམན། ॥ ༡༧

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योऽप्यस्ति सोऽनुविधीयते ॥१८६॥

ལྷ་དག་ འཇུག་བར་ མཚུངས་བ་ཡི།
 རྩོག་བ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་ལྟེ།
 རྟོགས་བར་གྱུར་བ་ མཚུངས་བ་ ཡང་།
 ཡོད་བ་ དེ་ནི་ རྩེས་སུ་སྒྲུབ། ॥ ༡༨

त्वन्मुखकमलं चेति द्वयोरप्यनयोर्भिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ ལ་རྩོང་དང་ བརྩེ་ལྟེ།
 འདི་ ལ་རྩེས་ཀྱི་ ནི་ ཁྱོད་བར་ ཡང་།



པདྨ་ཅུ་ལས་ རྩེས་པ་ དང་ །

ཁྱིེ་ གཞིང་ ཁྱིེ་ལ་ བདེན་པ་ལོ ༥ ༡༤༧

अमूल्यिलासमस्पृष्टमदरागम् मृगेक्षणं ।

इदन्तु नयनद्वयं तव मद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་དྲགས་ སྒྲིག་ལ་ རྩེན་ རྩེག་ དང་ །

རྩེས་པའི་དཔར་བས་ རིག་པ་མེད་ །

ཁྱིེ་གྱི་ སྒྲིག་ནི་ གཞིས་པ་ ལོའི་ །

ཡོན་དན་ རི་དག་ རྩེད་གྱིས་ བརྒྱན་ ༥ ༡༤༨

पूर्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।

समदृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྒྲིག་པར་ དབྱེ་བ་ཅས་ ཞིག་ བཟུན་ །

ལོའི་རི་ནི་ རྩེག་པ་ རྩེད་ བཟུན་དོ་ །

སྒྲིག་ཡང་ མཚུངས་པའི་ རྩེག་པ་ཅན་ །

གཞན་དག་ རབ་དུ་བཟུན་པར་བྱ་ ༥ ༡༤༩



त्वन्मुखपुण्डरीकञ्च फुल्ले सुरभिपन्धिनौ ।
भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टि मुसन्तु ते ॥१६०॥

सिद्धं ग्रे नर्दे ५८ वद्धं ५७८ ।
कुसं ग्रे नैव ५७८ ५७८ ५७८ ।
वद्धं ५७८ ५७८ ५७८ ।
सिद्धं ग्रे नर्दे ५७८ ५७८ ५७८ ॥ १७०

चन्द्रोयमम्भरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।
नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

वद्धं ५७८ ५७८ ५७८ ५७८ ।
वद्धं ५७८ ५७८ ५७८ ५७८ ।
वद्धं ५७८ ५७८ ५७८ ५७८ ।
वद्धं ५७८ ५७८ ५७८ ५७८ ॥ १७०

प्रतीयमानशैक्यादिसाम्ययोर्विद्यदम्भसोः ।
कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिंश्चन्द्रहंसयोः ॥१६२॥



འདིར་ནི་རྒྱ་བ་ཡང་བ་དག །
 དགར་བ་ཉིད་མེགས་རྟོགས་བ་དང་།
 མཁའ་དང་རྩ་ནི་དག་པར་ཡང་།
 རྟོགས་པར་མཚུངས་པའི་དབྱེ་བ་བྱས ༥ ༡༠༩

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृशव्यतिरेकता ॥१६३॥

ལྷ་མ་ལ་ནི་ལྷ་པོར་མཚུངས་།
 གཉི་ག་ལ་ཡང་ག་དད་དབྱེ།
 བྱང་བ་མེག་ལ་མེགས་པ་མཚུངས་།
 རི་ཕྱིར་མཚུངས་པའི་རྟོག་པ་ཅན ༥ ༡༠༩

अरक्षालोकसहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोचकरं यूनां यौवनप्रमथन्तमः ॥१६४॥

རིན་ཆེན་སྤང་བས་མི་འཕྲོག་ཅིང་།
 ཉི་མའི་འདྲ་ཀྱིས་མི་རྒྱོག་པ།



ལང་ཚོ་ལས་ བྱང་ན་ རྒྱང་གི།

སྐྱོན་པས་ ལྷ་པ་འགྲོག་པར་བྱེད། ॥ 100

सज्जानिव्यतिरेकोयन्तमोज्जातेरिदन्तमः ।

दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैर्दर्शयन् ॥१६५॥

སྐྱོན་པའི་རིགས་ལས་ མ་ན་པ་ འདི།

ལྷ་པ་འགྲོག་པ་ ཉིད་ གྲིས་ མཚུངས།

གཞན་དག་གིས་ མི་ བྱ་དད་ བསྐྱར།

འདི་ནི་ རིགས་མཐུན་ལྷོག་པ་ཅད། ॥ 101

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]र ।

यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाष्यं सा विभावना ॥१६६॥

རབ་དྲ་གྲགས་པའི་ རྒྱ་བརྒྱའི་ནས།

གང་གིས་ རྒྱ་ གཞན་ རྒྱང་ཟད་དམ།

གང་དུ་ རང་གི་ ངོ་མོ་ ཉིད།

ལྷོན་པ་ དེ་ནི་ ལྷོད་པ་ཅད། ॥ 102



अपीतक्षीयकादम्बमसंभृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१६७॥

स'असु'स' सु'स'च'रि' ॥ १६८ ॥

स'सु'स'रि' स'सु'स'च'रि' स'सु'स' ॥

सु'स'च'रि' स'सु'स' सु'स'च'रि' ॥

असु'स'रि' अ'सु'स'रि' असु'स'च'रि' ॥ १६९ ॥

अनजितासिता दृष्टिभ्रून्नावर्जिता नता ।

अरजितारुणधायमधरस्तव सुन्दरि ॥१७०॥

अ'र'ज'स'अ'स'स'च'रि' ॥ १७१ ॥

अ'र'ज'स' अ'स'स'च'रि' अ'र'ज'स' ॥

अ'र'ज'स'अ'स'स'च'रि' ॥ १७२ ॥

अ'र'ज'स' अ'स'स'च'रि' अ'र'ज'स' ॥ १७३ ॥

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१७४॥



གང་ཕྱིར་ མ་འཕྱངས་ ལ་སྟགས་ སྟེས་ ।

སྟེས་པ་ཉིད་ སྟགས་ སྟེ་གནད་ཅན་ ।

སྟེ་མེད་ དག་ཀྱང་ བཟོད་ འདོད་པ་ ।

དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༠༠

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजमुन्मत्तं ।

अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुदृढस्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ སྟེས་ནི་ ཁ་ ཁྱི་ཞིས་ ।

ཐོལ་མེད་པར་ཡང་ ལྷ་ས་པོ་ མཛེས་ ।

སྟེ་མེད་ དག་ཏུ་ རྒྱ་བ་ དགྲ་ ।

སྟེ་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ སྟེ་གས་ ॥ ༡༠༠

निसर्गादिपदैरेव हेतुः साक्षाद्विचक्षितः ।

उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་སྟེ་སྟགས་ རྟོག་གིས་ འདིར་ ।

སྟེ་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བརྒྱུག་ ཅིང་ ।



རྩི་ཞིས་ ཉིད་ སྐྱེས་ འབྲས་བུ་ བཟློད་ །

དེ་གྱིར་ དེ་ནི་ སྤྲིད་པ་ཅན་ ༥ ༤༠།

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उत्तिसंक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགྲ་ལ་ བསམས་བུས་ནས་ །

དེ་དང་ མཐུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ །

བསྐྱེས་པའི་ཚལ་གྱིས་ བཟློད་བྱེད་པ་ །

དེ་ནི་ བསྐྱེས་པ་ བཟློད་པར་ འདོད་ ༥ ༤༠༤

[24b]पिबन्मधु यथाकामं समरः कुलपङ्कजे ।

अप्यसङ्गसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

བྱང་བ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་ །

བདུ་ ཀྱས་པ་ སྤྲང་ཚི་ འབྲུངས་ །

རྩི་ཞིས་ ཀྱས་པ་ས་ཡིན་ ཡང་ །

སེ་དྲོག་ཁ་ས་བྱེ་ སྤྲིར་ ཉེས་ ༥ ༤༠༥



इति प्रौढाङ्गनावद्धरतिलालस्य रागिणः ।

कस्याञ्चिदिह बालाशामिच्छा-वृत्तिविभाव्यते ॥२०४॥

ऊणस'भू' सु'सि' द'स'स' ।

द'ग'स'स' सु'द'ग'स' स'स'स'स' द'ग' ।

सु'स' द'ग'स'स' द'ग'स' स'स' ।

द'स'स' द'स'स' सु'स'स'स' ॥ २०८

विशेष्यमात्रमिहोपि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्यैवावयवप्यस्ति भिन्नाभिन्नविशेषणा ॥२०५॥

सु'स'स'स' स'स' स'स'स' स'स' ।

सु'स'स' स'स'स' स'स'स'स'स' स'स' ।

सु'स'स' स'स'स' स'स'स' स'स' ।

द'स'स' स'स'स'स' द'ग'स' स'स' । २०९

रुद्धमूलः फलभरैः पुष्पान्ननिशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥



ཅ་བདུན་ འབྲས་བུའི་ ཁྲུང་གིས་ རི །
 སྤྲོང་རྣམས་ དྲག་དུ་ རྒྱས་པར་བྱེད །
 གྲིབ་ས་ རྒྱས་པའི་ རྩོན་པ་རེ །
 འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ གྲོལ ༥ ༤༥

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 ससृष्टायः सूर्ययान्देवादेव लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

ཡལ་གའི་ རྩོན་ནི་ མི་རྒྱང་ཞིང་ །
 མེ་དྲག་ འབྲས་བུ་ བུད་ཐུས་རོགས །
 དཔ་པའི་ གྲིབ་བསིལ་ བདུན་ལྔ་པའི །
 གྲིང་འདི་ བདག་གིས་ རྒྱལ་པས་ རྩད ༥ ༤༦

उभयत्र पुमान्कश्चिद्वृक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा घर्माः पूर्वग्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ རྒྱས་བུ་འགར །
 རྩོན་པ་ཉིད་ གྲིས་ ཉེ་བར་བསྡུགས །



རྩོམ་རྣམས་ བསམ་ཅད་ ལྟ་ས་ལ །

ཐུན་མེད་ གནད་ལ་ རྣམ་པ་ གཞིས་ ॥ ४०

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।

अयमम्भोनिधिः कष्टद्वालेन परिशोष्यते ॥२०६॥

སྤྱལ་ངན་ འགྲོགས་པ་ དང་ བལ་ནིང་ །

རང་བཞིན་གྱིས་ རི་ སངས་བའི་གནི །

ཀྲི་ས་ རུ་ ཡི་ གདེར་ འདི་ རི །

དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པར་འགྱུར་ ॥ ४०

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।

समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

གྲི་ས་མོ་ ལ་ རི་ དེ་ སརྩུངས་པ་ །

སྤྱིས་བུའི་ རྩོག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་ །

སྤྱ་སའི་ཆོས་ རི་ བརྒྱུག་པའི་ ཕྱིར་ །

འདི་རི་ ཐུན་མེད་ བསྐྱབ་པར་ བརྒྱེད་ ॥ ४०



विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्तिनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

ཁུད་པར་ གྱི་ རི་ བཟློད་ འདྲོད་ གང་ ।

འཇིག་རྟེན་ མཚམས་ ལས་ ཀླུ་གུར་པ་ ।

ཕུལ་དུ་བྱང་བར་ བཟློད་པ་ འདི་ ।

ཁྱེད་གྱི་ དམ་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར་ ॥ ४११

मल्लिकामालभारिण्यः सख्याङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

སྐྱེ་ཀྱ་ཡི་ བྱང་ རྟེན་མ་ཅན་ ।

ཕུལ་ ཀླུ་གུར་པ་རི་ རྟེན་ གཤེར་ ।

དཀར་པ་རི་ གཤེར་ཅན་ མཇོན་འགྲོ་མ་ ।

བྱ་བ་རི་འདྲོད་ལ་ མཚོན་པ་ཡིན་ ॥ ४१२

चन्द्रानपस्य बाहुल्यमुत्तमुत्कर्षवतया ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदृश्यते ॥२१३॥



རྒྱ་བའི་ འོད་ནི་ རྩལ་པ་ ཉིད།
 ཁྱད་འཕགས་ལྔ་ན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 གེ་ཚེས་ ལུ་ལ་བྱང་ ལ་མོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ གྱིར་ རྩང་ཟད་ བལྟན་པར་བྱ། ॥ ४१३

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ རུ་མ་ དང་།
 དབྱི་ཡི་ བར་ན་ སྒྲིང་པ་ ནི།
 ཡོད་ དང་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ནི།
 གེ་ཚེས་ ད་དུང་ རྒྱུག་ས་གྱུར། ॥ ४१४

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

ནི་དབྱི་ནི་ ཁྱོད་ ལ་ ནི།
 སྒྲིང་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ཇེས་པར་བྱས།



འོ་ས་འཛིན་པའི་བྱུང་བ་གནས་པ་ །

ནས་པ་ གནད་དུ་ སྤྲིན་པ་ཡིན་ ༥ ༢༡༥

अहो विनालभूपालभुवनत्रितयोदरं ।

माति मानुमशक्नोपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱིེན་གྱི་ བྱ་གས་པའི་ བྱུང་པ་ རི་ །

དབང་ རས་ སྤྲིན་ ཡང་ འཛིང་ འོང་པ་ །

ས་སྤྱིང་ སྤྲིན་པ་ གསུམ་ གྱི་ རི་ །

འོངས་ དག་ ཨོ་ས་ འོན་དུ་ ཡངས་ ༥ ༢༡༦

अलंकारान्तराणा[25b]मप्यादुरेकं परायणं ।

यागोशमहितामुक्तिमिमामतिशयाङ्गयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་པོས་ མཚན་བྱུང་པ་ །

བྱུལ་བྱུང་ རིས་བྱ་ བཟློན་པ་ འཛིན་ །

བྱུན་རི་ གནད་པ་ རསས་ གྱི་ ཡང་ །

གཞིག་ཕུ་ དབྱང་གཉིས་ ཉིད་དུ་ བཟློན་ ༥ ༢༡༧



अन्यथेव खिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।

अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

स्यस्य'द्वय' द्वा'वा'स' उवा'ज्य'स' ग्य'स ।

द्वय'स' वा'द्वय'द्वय' वा'द्वय'स'द्वय'द्वय' ।

वा'द्वय' द्वय'वा'द्वय' द्वय'द्वय'स' ।

द्वय'द्वय' द्वय'द्वय'द्वय' द्वय'द्वय' ॥ ४१८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।

मन्ये मार्तण्डगृहाणि पद्मान्मुदन्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

द्वय'वा'द्वय' द्वय'स' वा'द्वय'स'द्वय' ।

वा'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय' ।

द्वय'स'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय' ।

वा'द्वय'स'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय'द्वय' ॥ ४१९

ज्ञातुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।

तद्वरनिष्कथायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्ण्यते ॥२२०॥



ཁྲམ་དང་བདང་དང་བད་རྩ་དྲག་ ।

བཟའ་ཕྱིར་ལག་པར་རྩར་འཇུག་པ་ ।

དེ་ནི་ཁོ་ལྟ་བུར་སྒྲན་ཕྱིར་ནེས་ ।

སྒྲན་ངག་མཁའ་དྲག་གྲིས་རབ་བདག་ས་བཞེད་ ॥ ११०

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।

इति कर्णोत्पलं प्रायस्नव दृष्ट्वा विलङ्घयते ॥२२१॥

འདི་ནི་བདག་གི་རིང་བ་དག་ ।

འགོག་བྱེད་ན་བའི་ཀླན་ནེས་དེ་ ।

བྱིད་ཀྱི་སྒྲིག་གིས་ན་བ་ཡི་ ।

ཡུའྲལ་དག་ལ་འགོངས་པ་འདྲ་ ॥ १११

अथाङ्गभाग्यातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलं ।

दृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

སྒྲིག་རྩར་རར་དེ་རྩྱང་གྱུར་པ་ ।

སྒྲིག་གི་འོད་གྲིས་ཡུའྲལ་ལ་ ।



རེག་གས་ མིན་ ཡང་ སྒྲ་ངག་སྒྲུབ་ །

དེ་ལྟར་ རབ་དུ་བདག་ས་དེ་ བཟོད་ ॥ १११

लिम्पतीव तमोद्भानि धरंतीषांजनं नमः ।

इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणाश्रितं ॥२२३॥

སྒྲ་བ་ ལུས་ ལ་ འབྲུག་བ་ བཟོད་ །

སྒྲུབ་དེ་ མིག་སྒྲུབ་ རབ་འབྲུག་ བཟོད་ །

ཞེས་འདི་ ཡང་ ང་ རབ་དེག་གི་ །

མཚན་ཉིད་ལྟར་བ་ འིད་དུ་ མང་ ॥ ११२

केवांचिदुपमाश्रान्ति[26a]रिवश्रुत्येह जन्यते ।

नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तमाश्रित ॥२२४॥

འདིར་དེ་ བཟོད་གྱི་སྒྲ་ཡིས་ འགྲུབ་ །

དེང་ ཡི་ མཐུན་ ཡིས་ དབེ་ མ་ ཡིན་ །

ཞེས་བ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས་ །

དབེ་ཉིད་དུ་ རི་ འབྲུག་བ་ སྒྲེ་ ॥ ११ॣ



उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासी धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दघे॑ दद॑ दघे॒र॑घु॒र्द॑ दघा॑रि ।

सकु॒दस॑घ॒दि॒र्क॑स॒ ल॒ङ्कु॑स॒घस॑ २ ।

रु॒घु॒वा॒घ॑ दद॑ दि॒ स॒र॒घ॑ ल॒ङ् ।

क॑स॒ र॒दि॒ स॒दि॒र॒घ॒र॒घु॒र॑ दस॑ ठि ॥ २२५

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपः ।

स एव धर्मो धर्मो चेत्यनुक्तस्तो न भाषते ॥२२६॥

वा॒घ॒दे॑ रु॒घु॒वा॒घ॑र्द॑ र॒दि॒र॑ २ ।

रु॒घु॒वा॒ उ॒स॒घु॒वा॑ वा॒र॒घ॑ ठि ।

दे॒र्द॑ क॑स॒ दद॑ क॑स॒उ॒र॑ ल॒ङ् ।

वे॒स॒घ॑ स॒ङ्कु॑स॒ र॒क॒द॑ स॒ र्दि॒ ॥ २२६

कर्ता यद्युपमानं स्थान्न्यगमूतोऽसी क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यमे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥



गद्य'दे' सुदे'य' दये' यैर' १ ।
 सु'किं'य' य' अदे' दयद'य' अयु' ।
 दद'य' सु' सु'य' य'र'य' ॥ १४१ ॥
 ग'र'य' सु' सु'य' सु'य' सु'य' ॥ १४२ ॥

यो लिप्यत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसनः ।
 अङ्गानीति न सम्यङ्गं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

गद्य'यै'य' अयु'य'य' अदे' दद' १ ।
 सु'य'य' सु'य'य' सु'य' सु' १ ।
 सु'य'य' सु'य'य' सु'य'य' १ ।
 दे' यद' यै'र'य' सु'य'य' सु'य'य' १ ॥ १४३ ॥

ययेन्द्रुरिव ते वक्रमिति कालिः प्रतीयते ।
 न तथा लिप्यतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

दये'र'य' सु'दे' ग'दे' सु'य' सु'य' १ ।
 सु'य'य' सु'य'य' सु'य'य' सु'य'य' १ ।



देवदेवः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

तदुपश्लेषणार्थं लिख्यतिः ।

अक्षयः च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

देवदेवः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

मन्ये श[26b]द्धे ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०

अक्षयः अक्षयः अक्षयः ॥ ११०



हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।

कारकशायकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

क्रुं दन् घ्रं षं ऋं दणं णि ।

रिं णं ऋषं दणं णिं क्रुं णिं स्रं णिं ।

क्रुं णिं णिं णिं णिं णिं णिं ।

णिं णिं णिं णिं णिं णिं ॥ २३३ ॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।

उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३४॥

सं णं णं णं णं णं णं ।

रं णं णं णं णं णं णं ।

णं णं णं णं णं णं णं ।

णं णं णं णं णं णं णं ॥ २३५ ॥

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपबृंहणं ।

अलंकारतयोद्भूतं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३६॥



དགའ་བ་ སྒྲིང་པར་ རེས་པ་ ཡི།
 རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྦྱར་བ་ འདི།
 རྒྱན་ ཉིད་ གྱིས་ རི་ རབ་བཅུན་དེ།
 རྒྱུག་པ་ དག་ གྲུང་ རི་དང་སུངས། ॥ १२८

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्ज्वरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोद्यमुपस्थितः ॥२३५॥

ས་ལ་ཡ་ ཡི་ རྒྱ་རྒྱན་ ལ།
 རིག་ རིང་ རྒྱན་ རགས་ བསྒྲིང་ནས།
 རྒྱང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ རསས་ དག་ རི།
 རསས་པར་བྱ་བྱིང་ ཉེ་བར་གནས། ॥ १२९

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मातुः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोहारोचके जने ॥२३६॥

རི་ལྟར་ བྱང་བའི་ རྒྱང་ གྱིས་ རི།
 འབྲུལ་བའི་ རིསས་ ལས་ བྱང་བྱུང་པ།



སྒྲིབ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྒྲིབ་ བ །

ཉམས་པ་ སྒྲིབ་པ་བྱེད་པར་ནས ། २२५

निर्वर्त्य च यिकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ ཉམས་འགྲུར་ ལ །

རི་ཉིད་ ལ་ ལྷོས་ ཀྱ་ཉིད་རི །

འཁྲིབ་པའི་ ལས་ ལ་ བལ་རྟེན་ ནི །

བྱ་བ་ ལ་ ལྷོས་ ཀྱ་ཉིད་དོ ། २२॥

हेतुनिर्वर्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

वस्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ ཀྱ་ དག་ ནི །

བསྐྱར་དེ་ ལྷག་ས་ གཉིས་པོ་ ཡི །

དབེར་ བརྟེན་ གཉིས་ ནི་ བཞེད་བྱས་ནས །

ལེས་པར་བྱེད་པ་ བསྐྱར་པར་བྱ ། २३८



उत्प्रवालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थवृष्टिविण्मृतं ॥२३९॥

ཨོ་འདབ་ གསར་འབྱུངས་ བགས་ཚལ་ དང་ ।

འདབ་བརྟ་ རབ་དུ་ཀྱས་པའི་ རྩོང་ ।

ཐྱི་བ་ ཀྱས་པ་ འདོད་པ་ ཡིས་ ।

འགྲོད་པོ་ ལྷ་བའི་ དུག་དུ་ བྱས་ ॥ २३९

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

काला म्रुभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुग्निधरं ॥२४०॥

ཁྱེངས་པ་ གོ་མས་པར་བྱའི་ ཞེས་ ।

གྲོགས་མོ་ མཇཱ་བོའི་ གནས་བཞེད་ལ་ ।

བྱ་མོ་ སློན་འཁྱིག་ སློག་ཡོད་ ཀྱིས་ ।

མརུ་ རི་ གཡོ་ རྩོང་ ལྷ་བར་བྱེད་ ॥ २४०

गतोस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥



ཉི་མ་ རྒྱ་གར་ ལྷ་བ་ མཛེས་ ।
 འདབ་ཆགས་ རྣམས་ རི་ གནས་སུ་ མཛོ་ ।
 ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ ཏུས་ གྱི་ སྐབས་ ।
 གོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་པ་ ཉིད་ ॥ ༤༦ ॥

*अथयैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभिसाम् ।
 देहोऽमभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

གྲོགས་མོ་ འདོད་པས་ གཞིར་བའི་ ཡིད་ ।
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ གྱིས་ མི་ལྷོག་ རིང་ ।
 ཅ་རྒྱ་ ཅུ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ་ ।
 ལུས་ གྱི་ རྩོད་ གྱིས་ ལེགས་པར་རྟོགས་ ॥ ༤༦ ॥

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्यां ज्ञापकहेतवः ।
 अभावहेतवः केचिद्व्याकियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྤྱིར་བ་ རྣམས་ ལ་ རི་ ।
 ཡིད་འོང་ ཤེས་བྱེད་ གྱི་ རག་ མཚོན་ ।



དངོས་མེད་ ལྷ་ རི་ ཡིད་ འཕྲོག་པ་ །
འགའ་ཞིག་ རབ་དུ་བཟུན་པར་བྱ་ ॥ ༢༧༢

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण घीमतां ।
अनिग्रहेण चाश्वाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ རི་ ས་གོས་ས་ དང་ །
རྩོལ་ན་ རྣམས་ དང་ ས་འགྲོགས་ དང་ །
དབང་པོ་ རྣམས་ རི་ ས་བཟུམས་པས་ །
སི་ རྣམས་ རབ་དུ་གདུང་བར་ བྱུང་ ॥ ༢༧༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनञ्चरः ।
क्षतो मोहहृद्युता नृणां कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་པའི་ གདམ་ གྲིས་ སྦྱིས་པ་ སོང་ །
ལང་ཚོ་ཡི་ རི་ རིས་ས་ དག་ ཉམས་ །
སྦོངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ སྦྲིད་པ་ འཕོས་ །
བསོད་ནམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ བྱས་ ॥ ༢༧༤



वनान्यमूनि न गृहाप्येता नद्यो न थोषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན།

ཅུ་གྲུང་ འདི་དག་ བྱད་མེད་ མིན།

རི་དྲགས་ འདི་དག་ བྱ་ཚ་ མིན།

དེ་ཕྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ २८६

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टिनं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ཡིད་དུ་ མ་བདགས་ སྤོད་པ་ རི།

འཕགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡིད་ མ་ཡིན།

དེ་ཕྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ ཀྱི་ རི།

ཕུན་ཚེགས་ གསལ་ཅད་ དྲག་དུ་ འཕྱེལ། ॥ २८७

उद्यानसहकाराणामनुम्लिखा न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारोणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥



སྒྲིང་ཚལ་ས་ཏ་ཀུ་ར་ནསས།
 སྒྲིམ་ས་འབྲུངས་པ་མེད་ན།
 འགྲོན་པོ་ནསས་ཀྱི་བྱད་མེད་ནི།
 དེལ་བཅས་བྱིར་ཅུ་སྒྲིན་བྱར་འགྱུར། ॥ १८८

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्यरूपस्य कार्यस्योत्पादनमप्रति ॥२४६॥

ཡོད་དང་མེད་པའི་རང་བཞིན་གྱི།
 འབྲས་བུ་སྒྲིང་པ་དག་ལ་འདིར།
 སྒྲིན་མེད་ལ་སྒྲིགས་རང་བཞིན་གྱི།
 དངོས་པོ་ཡི་ནི་གྱུ་ཉིད་དོ། ॥ १८९

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यानिन्नरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चिग्रहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་དེ་དང་ལྡན་ཅིག་སྒྲིས།
 དེ་བཞིན་འབྲས་ས་ཐག་སྒྲིས་དང་།



རིགས་ སིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ།

སུམ་པ་ལྷོ་ ལྷོ་ རྣམས་ གྲངས་མེད་དོ། ॥ ४१०

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।

अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ སྤྱིར་པ་ལས་ རྣམས་ ལ།

པ་ལ་པ་ལི་ འཇུག་པ་ ལ་ བཏེན་པ།

ཤིན་དུ་ མཛེས་པ་ དག་ མཐོང་ལྟེ།

དེ་ཡི་ དབེར་བཞིན་ ཇི་ལྟར་ན། ॥ ४११

त्वदपाङ्गाक्ष्यं जेत्रमङ्गजास्त्री यदंगने ।

मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ ཁྱིད་ སྤྱིག་རྒྱར་ ཅེས་པ།

ལྷན་བྱེད་ ལུས་སྤྱིས་ དག་ གི་ མཚོན།

གང་ དེ་ གཞན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།

དེ་ ཡིས་ བདག་ གི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོས། ॥ ४१२



आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशेषं ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेष्-त्रु- लुष्-श्लेष्- ग्लिष्- श्लिष्-घर्- ।
क्ष-रु-ध्रु-ध- श्ल-कै-ग- श्ल-र-ते-ग- श्लि- ।
त्रु-र-ते-ग- क्ष-र-ध- ध्रु-र-ते-ग- श्लि- ।
श्लि-र-ते-ग- श्ल-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- श्लि- ॥ २५३

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमाडलं ।
प्रागेव हरिणाश्रीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

श्ल-र-ते-ग- श्ल-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- श्लि- ।
क्ष-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- श्ल-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- ।
श्लि-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- श्ल-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- ।
श्लि-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- श्ल-र-ध-ध- श्ल-र-ते-ग- ॥ २५४

राहां हस्तारविन्दानि कुचलीकुक्षौ कुतः ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥



ལྷ་ཅིག་ བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ།
 དམར་པ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རིག་པས།
 རྒྱལ་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི།
 བདུ་ རྩམ་པར་བྱེད་པ་ ཅི། ॥ ༥༡༡

पाणिपद्मानि भूयानां संकोचयितुमोशने ।
 त्वत्पादनसचन्द्राणामर्चयः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

བྱིད་ ཀྱི་ ཞབས་ སེན་རྒྱ་པ་ ཡི།
 འདྲ་ཟེར་ ཀྱུན་ད་ རྒྱ་མེད་ རྣམས།
 ས་སྤྱོད་རྣམས་ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི།
 བདུ་ རྩམ་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ ॥ ༥༡༢

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौहृद्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་ རྒྱ་ ཡི་ རྣམ་རྟོག་ བོ།
 ལྷགས་ ཉི་ འདྲི་འདྲ་ དག་དུ་ བཟུན།



ལྷ་དང་རྣམ་པས་སེམས་པའི་དོན།

ལྷ་ལྷིང་ལྷ་མོ་ཞེས་པར་བཤད། ॥ ४१४

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णं वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्यं न्यमीलयन् ॥२५८॥

རྣམ་ཞེས་ལུ་ཅག་འགྲོགས་འགྱུར་ཞེས།

ཚོགས་སུ་བཞུགས་པ་ས་བཞུགས་པའི།

སེམས་པའི་རིག་རྣམ་བུད་མེད་ཀྱིས།

ཅེ་དགའི་པདྨ་ལྷ་པར་བྱས། ॥ ४१५

वद्यसंमीलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྦྲིས་དག་གིས་གཟིང་བ་ཡི།

སེམས་པའི་དབྱགས་དབྱུང་འདོད་པ་ཡིས།

པདྨ་ལྷ་པར་བྱས་པ་ལས།

འདིར་ནི་སེམས་པའི་འགྲོགས་པར་བཤད། ॥ ४१६



स्वदर्पितद्रुशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

श्रुं यिं सद्गुं सन् त्रिं यं शिवा ।

गद्गं यस्य गद्गं यीं कुं श्लेषं देव ।

रुगस्य यं रवन् र्देव क्रुशं यं यी ।

सर्देसं यं उं यन् सुन् यन् गुर ॥ २६०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वाद्द्रव्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभूदशप्यवस्थितः ॥२६१॥

रदेन् यन् रन् यन् र्देव स्य सर्देन् यन् ।

रगन् यन् रगन् श्लेषं रदेन् यं रग ।

देसं यन् यन् यन् र्देव गुरं य ।

सुं र्देव यन् यन् यन् स्य यन् ॥ २६१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥





ཆ་ནི་ཆ་ ཡིས་ དངོས་པོ་ ཡི།

རང་བཞིན་ ཇིས་པར་གསལ་བ་སྟེན།

དཔེར་བཞིན་ཉིད་ ཀྱིས་ འདི་ ཡི་ ནི།

རང་བཞིན་ ཇིས་པར་གསལ་བར་བྱ། ॥ २६२

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।

अवगच्छेयुरा हातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

ཀྱུ་པ་པོ་འདི་ ལུ་མོ་ ལ་ ཆགས་ བདག།

སྤྱ་ལོང་ ཀྱས་པ་ སྤྱང་པ་པོས།

རིག་པར་གྱུར་ལ་ ཀྱི་ས་ ཚལ།

བསིལ་བའི་རྒྱང་ལྷན་ ཡིན་པར་ ཤེས། ॥ २६३

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं वृष्ट्वैव कन्यकाम् ।

अक्षि [29a] मे पुष्पगजसा घालोद्धूनेन दूषितं ॥२६४॥

ཅི་ལྟར་ ལུ་མོ་ མཐོང་ ཉིད་ ན།

བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་བྱུང་།



ཐུང་གིས་གཙུག་པའི་མེད་ཀྱི་གི།

རྒྱལ་གྱིས་བདག་མིག་སྤྲུང་ངོ་ ॥ १५८

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।

लेशमेकेत्रिदुस्त्रिन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ལ་སྒྲིགས་སྒྲུབས་སུ་ནི།

ཀྱུན་འདི་ཤིན་ཏུ་མཛོས་པ་ཡིན།

ཁ་ཅིག་ཀ་ལས་སྤྲུང་པ་འཇམ།

བསྐྱོད་པ་བྱས་པ་ཆ་ཞེས་བཞེད་ ॥ १५९

युवेव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुज्जितः ।

रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादिषु ॥ २६६ ॥

གང་ཡིད་གཡུལ་གྱི་དགའ་སྟོན་ལ།

འདོད་པའི་དགའ་སྟོན་ངས་ཀྱང་ཆགས།

གཟི་ལྡན་ལང་ཆེ་ཡོད་དྲན་ཅན།

ཀྱལ་འདི་ཁྱོད་གྱི་བདག་པོར་འོས་ ॥ १६०



दोर्योत्कण्ठस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।

कथायाः कल्पते भोगान्निविंविशोर्निरन्तरान् ॥

བཀྲའ་འགྲུས་ རྒྱུ་འགྲུས་ བཟློན་པ་ འདིར།

སྤྲུལ་པ་ ཉིད་ནི་ ལོངས་སྤྱོད་པ།

རྒྱུ་དྲ་ ཟློན་འདྲི་ ཟུ་མོ་ཡི།

བསམ་པ་ དག་ནི་ བཟློག་པར་དུས། ॥ ४३१

अपलो निदयभासो जनः कित्तेन मे सखि ।

भागःप्रमाज्जनायैव चाटयो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གཤོད་པ་ རབ་ གནིལ་ ཉིད་ ཁྱི་ ཟྱིར།

གང་གིས་ ལྷ་ར་པར་ ཟླ་པ་ བརྟུབས།

སྤྱི་མོ་ འདི་ནི་ བཟོ་མེད་ གཡོ།

ཟློགས་མོ་ རི་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི། ॥ ४३२

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।

मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्त्या ॥ २६९ ॥



གྲི་པོ་ གྲོགས་མོས་ རབ་བཟུན་ ཁིངས། །
 རགས་ གྲིང་ གྲིང་པ་ མ་ནུས་ནས། །
 གྲིན་ ལྷར་ ལྷང་ཡང་ ཡོན་དྲན་ གང་། །
 ལྷན་པར་ ལྷ་པ་ ཉིང་ ཀྱང་ བཟུན། ॥ २६०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।
 यथात्मल्यमिति प्रोक्तं संख्यानद्वय इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་དུ་བཟུན་པ་ རམས། །
 རིས་པ་ བཞིན་དུ་ རེས་ལྷོན་པ། །
 གྲངས་ རང་ རིས་པ་ བཞིན་ རེས་པ། །
 གྲངས་ བཞིན་ རེས་པར་ རབ་དུ་བཟུན། ॥ २७०

[296] ध्रुवन्ते चोरिता तन्वि स्मिनेक्षणमुखद्युतिः ।
 क्षातुमम्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

ལྷས་ལ་ ལྷར་ནི་ རབ་ལྷགས་ས། །
 གྲིང་གི་ རུངས་ མིག་གཞིང་ མཛོས་ནི། །



ཀུ་སྤྱད་ ལྷན་ལ་ བུ་ལྷ་ལས།

བཀྲམ་པར་ རེས་མོ་ གཙུགས་ཅན་ས། ॥ ४१७

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवन् रसपेशलं ।

ऊर्जस्वि कटाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तमयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བཟོད།

ཉམས་ལྡན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྡན།

གཟི་བཟོད་ ང་ཀྱལ་ སྤེས་པ་སྟེ།

རི་གསུམ་ བྱད་འཕགས་དག་དང་ལྡན། ॥ ४१४

अथ या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।

कालेनंषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བོ་རྒྱ་ བྱོད་ བྱིས་ འོངས་པ།

དེང་ བདག་ དགའ་བ་ སྤེས་པ་ གང་།

དགའ་བ་ འདི་ནི་ སྤྲར་ཡང་ བྱོད།

དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འགྲུང་བར་ འགྲུར། ॥ ४१३



མངོན་སུམ་ བྱས་པ་ནི་ ལྷ་ལ་ནི།
 ལྷ་ལ་གོ་ དགའ་བའི་གོ་ར་ ཡིས།
 དགའ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ གང་།
 དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་དྲོགས་བྱ། ॥ २१५

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यया मे मरणममृतम् ।
 सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमग्रेव जन्मनि ॥१७७॥

གི་བ་ རྗེས་བྱ་ པ་རོལ་དུ།
 གང་ ཏང་ འགྲོགས་བྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད།
 ལ་བཞི་དེ་ བདག་ གིས་ ནི།
 རྗེ་ འདི་ཉིད་ལ་ རྗེ་ལྷར་ ཐོབ། ॥ २१७

प्राक्प्रातिर्दिशिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्वचः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ ལྷར་ བསྐྱར་ འདིར།
 དགའ་བ་ རྗེས་ལ་ ཉིད་ གུར་པ་ནི།



རང་བཞིན་ རྒྱལ་དང་ལྡན་པས་ན །

འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྡན་པའི་ ཆོག ༥ ༤༧༥

निगृह्य केरोप्याकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।

सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

གང་གིས་ ནག་མོ་ བདག་ མདུན་ནས །

སྒྲ་ནས་ བརྒྱང་ལྟེ་ དངས་གུར་པ །

བལྟན་དཀར་ སྒྲིག་ཅན་ ཐོབ་པ་ འདི །

སྒྲ་ཅིག་ འཆོ་བར་ གུར་རས་ ཅི ༥ ༤༧༦

इत्याह्वय परां कोटीं कोधो रौद्रात्मतां गतः

भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२७७॥

ཅེས་པ་ འཛིགས་ སྒྲེ་ དགྲ་དག་ལ །

ལྷ་པའི་ ཁྲི་བ་ མཆོག་གི་ མཐར་ །

འཛིགས་པ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གུར །

འདི་ ནི་ རོ་དང་ལྡན་པའི་ ཆོག ༥ ༤༧༧



अजित्वा सार्णवामुर्ध्वोमनिष्ठा विविधैर्मखैः ।
अदस्ता चार्थमपिम्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥ २८१ ॥

सर्केरं चउसं स'य' स'क्रुय' वैरं ।
कस'स' स'केर'र'स्रु स'सुस'य ।
स्रु'रं य' वैर'कसस' स'स्रु'र'चर ।
स'स्रु'र'रु' चर'ग' ई'र'र'र'गु'र ॥ २८१

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा निष्ठन्वीररसात्मना ।
इत्यवयवहिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥ २८२ ॥

उस'य' स्रु'र' र'र'र'र'स' चर'ग' ।
र'र'र'र'र' कस'स'गु' चर'ग'र'र' ग'र'स ।
कस'स'र'र' र'र'र' कस'य' य ।
र'र' र'र'र'र'र' र'र'र'र' र'र' ॥ २८२

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्गया रुजाकटी ।
साधिशेने कथं देयी हुताश्लेषतीं चिताम् ॥ २८३ ॥



ལུས་འཇམ་གང་ལ་བརྟེན་ཏེ།

མལ་ལྟར་དག་ཀྱང་ཁུབ་བྱེད་མ།

ལྷ་མོ་དེ་ནི་ཟོ་ཁང་དག།

སྤྱིག་བྲ་ལྟར་པར་ཇི་ལྟར་ཉལ། ॥ १-३

इति कारुण्यमुद्रितमर्ल[30b]कारतया स्मृतम् ।

तथा परेषि भीमत्सहास्याद्रुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅེས་པ་སྟོང་ཇི་ཀྱས་པ་ཡི།

ཀྱན་ཉིད་དུ་ནི་རབ་དུ་བཤད།

དེ་བཞིན་གཞན་ཡང་སྤྲི་ལྷ་ག་དང་།

བཞན་གད་ཚད་བྱང་འཇིགས་རུང་ངོ་། ॥ १-४

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।

कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धिरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

ཀུ་མས་བརྒྱན་པའི་སྤྲི་པོ་རྣམས།

མགོ་མེད་ཇི་དང་ལྷན་ཅིག་དུ།



ལག་པ་ སྐར་བས་ ཁྱིའི་ དགའི་ ཁྱེད་ །
འཕྱང་ཞིང་ འཕྱང་ནིང་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༤༧

रश्मिमानमालाया लग्नं स्तननटे तत्र ।
छाद्यतामुत्तरीयेण नवप्रखण्डं सखि ॥ २८६ ॥

གྲོགས་མོ་ མེ་དྲོག་ མ་རྒྱུངས་མ་ །
ཁྱིའི་ཀྱི་ རྩ་མའི་ རོས་ལ་ནི་ །
མེད་ཆེས་ སར་པ་ ཆགས་པ་ འདི་ །
སྒྲིབ་གཡོགས་ ཀྱིས་ ནི་ སྒྲིབ་པར་མཛོད་ ། ༤༨

अंशुकानि प्रवालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।
शास्त्राश्च मन्दिराण्येषां चित्रप्रन्दनशालिना ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ སྒྲོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི་ །
འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་ །
མེ་དྲོག་ རོ་ཤལ་ ལ་ མོགས་ཅན་ །
ཡལ་འདབ་ ཁང་པར་གྱར་པ་ མཚར་ ॥ ༤༩



इदं मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

कुलिशं धारासं निहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ।

अत्रैतत् २८८ ॥ १५५ ॥

गुह्यं यत् २८८ ॥ १५६ ॥

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दशिनो रसः ।

इह त्वष्टरसायता रसवता स्मृता गिरा ॥ २८९ ॥

गुह्यं यत् २८९ ॥ १५७ ॥

अत्रैतत् २८९ ॥ १५८ ॥

अत्रैतत् २८९ ॥ १५९ ॥

अत्रैतत् २८९ ॥ १६० ॥

अपक्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूदयम् ।

विमुखेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २९० ॥



བདག་ནི་ གནོད་པ་བྱེད་པོ་ ཞེས།
 ཁྱིའ་ཀྱི་ སྤྱིང་པ་ འཛིགས་ མ་བྱང་།
 བདག་གི་ རལ་གེ་ཕྱིར་ ཁྱིགས་ནམས།
 རྣམ་ཡང་ འཛིམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན། ॥ १००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धे निरुद्धो दर्पशान्तिना ।
 पुंसा केनापि तज्जलयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २६१ ॥

ཞེས་པ་ སྤྱིས་བྱ་ ཁྱིགས་ལྡན་ འགས།
 གཡུལ་དུ་ གནོད་ནི་ བཀག་བྱས་ནས།
 གདོང་བ་ རེ་ལྟ་བུ་ ལ་མོགས།
 གཟི་བཞིན་ལྡན་པར་ ཞེས་པར་བྱ། ॥ १०१

अथमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तस्तद्विष्यते ॥ २६२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བཞིན་པར།
 རི་ཉིད་ འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར།



རྣམ་པ་ གནད་དག་ བཟོད་པ་ གང་ ।

དེ་ནི་ རྣམ་གྲངས་ བཟོད་པར་ འདོད་ ॥ ४०१

कृत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।

तमहं धारयिष्यामि गुणाम्यां स्वैरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

ས་དྭ་ཀུ་རའི་ སྟེ་ས་རྣམས་ ।

གནད་གྱིས་གསོལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ བདག་གོས་ བཟོག་པར་བགྱི་ ।

ཁྱེད་ གཅིས་ དལ་གྱིས་ འདུག་པར་མཛོད་ ॥ ४०२

संगमप्य सखीं यूना सकेते तद्वतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

གྲོགས་མོ་ སྟེས་ཕྱར་ ཕྱར་བྱས་ནས་ ।

དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི་ ।

དགའ་སྟོན་ སྟུག་དུ་ གཞུག་ འདོད་པས་ ।

འགའ་ནིག་ དེ་ནས་ མེད་བར་གྱར་ ॥ ४०ॢ



किञ्चिदारम्भमाणस्य कार्यं देवबलात्पुनः ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २६५ ॥

सु० व० २१२ वै० ग० ३०४ च० ५ ।

सु० व० ५० ३० सु० व० ५० १०८ ।

३० ५० सु० व० ३० सु० व० ३० १०८ ।

३० ३० सु० व० ३० ३० ३० ॥ १०८ ॥

मानन्तस्या निराकर्तुं पादयोर्मै नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्टयेदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २६६ ॥

सि० व० १०४ सु० ३० ३० ३० ।

सि० व० ३० ३० सु० ३० ३० ३० ।

सि० व० ३० ३० सु० ३० ३० ३० ।

सि० व० ३० ३० सु० ३० ३० ३० ॥ १०८ ॥

आशयस्य विभूनेर्वा यन्महस्यमनुत्त[31b]रं ।

उदात्तं नाम तस्याहुरलंकारं मनीषिणः ॥ २६७ ॥



བསམ་པ་ འཇམ་ རི་ འབྱོར་པ་ ཡི།

ཆེན་པོ་ ཉིད་རི་ ལྷ་མེད་ གང་།

དེ་ རི་ ཀྱ་ཆེ་ རྟེན་པ་ཡི།

ཀུན་དུ་ མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ བཤྲོད་ ॥ २०१

गुरोः शासनमत्येवं न शशाक स राघवः ।

यो रावणशिरच्छेदकार्यभारेण्यविक्रवः ॥ २६८ ॥

རྒྱ་བ་ཆ་ཡི་ མགོ་གཙོད་པ་འི།

བྱ་བ་འི་ ཁྱེད་ ཡང་ བཤྲོད་པ་ཡི།

རྒྱ་བ་འི་བྱ་ དེས་ ལྷ་མ་ཡི།

བཀའ་ལས་ འདྲ་བར་ རྣམས་ཀྱིས་ བྱུང་ ॥ २०२

रत्नमितिषु संक्रान्तेः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।

ज्ञातो लङ्केश्वरः कृच्छ्रादाब्जनेयेन तत्स्वतः ॥ २६९ ॥

རིན་ཆེན་ རྩིག་པ་ ལ་ འཕྲོས་པ་འི།

གཞུགས་བརྟན་ བརྟ་ཡིས་ བསྐྱོར་བྱུང་པ་།



ལྟོན་དབང་བྱུག་རེ་ཁོ་ན།

ལྟོན་གྱིས་དཀར་བས་ཤེས། ॥ ४००

पूर्वप्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।

मुख्यजितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

སྒྲ་མར་བསམ་པའི་བདག་ཉིད་ཆེ།

འདིར་ནི་མཛོད་པར་འབྱོར་བས་བརྗོད་།

གྱ་ཆེ་གཤིས་པོ་འདི་དག་ཀྱང་།

རབ་ད་གསལ་བར་མཛོད་པ་ཡིན། ॥ ३००

अपह्नुनिःपठ्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བསྐྱོན་དོར་དག་ནི་བསྐྱོན་བྱས་ནས།

དོར་གཤམ་ཅུང་ཟད་བརྗོད་པ་ལྟེ།

འདོད་པ་དག་ནི་མདའ་ལྔ་བ།

མ་ཡིན་སྒྲི་ལྔར་སྒྲིང་བྲག་ཡིན། ॥ ३०१



चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च वृक्षिणः ।
सौमग्निसौमयो सृष्टिप्रसीता किल पगन्प्रति ॥३०२॥

ཅུན་ རྒྱུ་འོད་ དཔ་བུ་ ཡི །
མོ་ རྒྱུགས་ རྩི་ཡི་ བཞོན་པ་ འདི །
མེ་ཡི་ རང་བཞིན་ རྒྱུ་བ་ རྩི །
གཞན་གྱི་ རོང་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ གྲགས ॥ ३०२

शोशिर्यमन्युपेत्यैषं परेष्यात्मनि कामिना ।
झौणप्रदर्शनात्तस्य संपा विषयनिहृतिः ॥३०३॥

འདོད་ལྡན་གྱིས་ ནི་ གཞན་ ལ་ རེ །
བསིལ་བར་ ཁས་བྱངས་ བདག་ཉིད་ལ །
རྩི་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བཞུན་ རྩིར །
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྐྱོན་དོར་རོ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्धात्मा विषयनिष्यन्दिदोषितिः ॥३०४॥



བདུད་ཅི་ ཟག་པ་འི་ འོད་ཟེར་ཅན།
 རྒྱ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
 དོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ ལ་ནན།
 ཏུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྡན་པ་ ཉིད། ॥ ༣༠༥

इति चन्द्रस्वमेधेन्दोरनिघृत्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरान्तनेत्येता स्वरूपापह्नुतिर्मना ॥३०५॥

ཅེས་པ་ རྒྱ་བ་འི་ རྒྱ་ དངོས་ ཉིད།
 བརྒྱུག་ནས་ དོན་ ལ་ནན་ བདག་ཉིད་ ནི།
 འདོད་པས་ ལ་ཟེར་བ་ བརྒྱུད་པ་འི་ སྤྱིར།
 འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བརྒྱུན་དོར་ འདོད། ॥ ༣༠༥

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दर्शिता ।
 इत्यपह्नुतिमेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

དཔེ་ཡི་ བརྒྱུན་དོར་ སྤྱིར་ ཉིད་དུ།
 དཔེ་རྣམས་ ལ་ ནི་ རང་བཞིན་དོ།



འདི་ཡིས་ བརྟུན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས།
མཆོད་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ་ཆེར་ མཆོད་ ॥ ༢༠༩

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदमायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྒྲུབ་བ་ གཞུགས་གཅིག་ལྟར་བའི་ ཆོག་ ।
དུ་མའི་ དོན་ཅན་ མིད་དུ་ འདོད་ ।
དེ་ཆོག་ བྱ་དད་ མིན་པ་ དང་ ।
བྱ་དད་ ཆོག་ འདྲ་ རྣམ་པ་གཉིས་ ॥ ༢༡༠

अस्तावुद्यमाकूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुमिः करैः ॥३०८॥

ཨ་ད་ལ་ གནས་ མཆོས་པ་ཅན་ ।
དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཆགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི་ ।
མི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག་དོན་ གྱི་ ।
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་པར་བྱེད་ ॥ ༢༡༡



दोषाकरेण सम्यग्जनक्षत्रपथवर्तिना ।

राज्ञा प्रदोषो मामित्यमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

क्र०क्ष० ल० ल० र० ल० ल० ल० ल० ल० ।

स०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ।

सु०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ।

द०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ॥ ३०७

उपमारूपकाक्षे[32b]पल्यतिरेकादिगोचराः ।

प्रागेव दर्शिताः श्लेषा दृश्यन्ते केवलापरे ॥३१०॥

द०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ।

सु०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ।

सु०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ।

द०क्ष० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ल० ॥ ३१०

अस्त्यभिप्रायः कश्चिद्विरुद्धक्रियोपरः ।

विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमवानपि ॥३११॥



འགམ་ནིག་ བྱ་བ་ བ་དད་མིན །
 གཞན་པ་ བྱ་བ་ འགམ་མིན་ ཡོད །
 འགམ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན །
 སྤར་བ་ རིས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད ༥ ३११

निथमाक्षेपरूपोक्तिरयिरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेऽप्येव रूपमाविर्भवित्यति ॥३१२॥

རིས་པ་ འགྲོག་པ་ གཟུགས་ བཟློད་ དང་ །
 འགམ་མེད་ འགམ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ །
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་ །
 དཔེབར་ཟློད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར ༥ ३१२

वक्रव्यभावमधुगः शंसन्त्यो रागमुल्लवणम् ।
 दृशो हृत्यस्य कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འབྲིག་ཅིང་ ཡིད་འོང་ རང་བཞིན་ཅན །
 ཆགས་པ་ གསལ་བ་སྟོནར་བྱེད་ས །



མཛེས་མས་ བསྐྱེལ་བའི་ མེག་ དང་ རི །

མོ་མ་མེས་ ཀྱང་ མཛེས་པོ་ འགྲུགས ॥ 312

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलागिरः ।

आकर्ष्यन्ते मदकलाः क्षिप्यन्ते चासितेक्षणाः ॥३१४॥

ཡིད་མེད་ རྒྱལ་པ་འབྲེལ་བར་བྱེད །

འཇམ་ནེང་ མེས་པའི་ གདངས་སྒྲུབ་ཅན །

ཁྱ་བྱལ་སྒྲུ་ནི་ མེས་གྱུར་དེ །

དཀར་མེད་མེག་ཅན་དག་པ་ འབྱུད ॥ 313

रागमादर्शयन्नेव वारुणोयोगवर्धितः ।

पराभवति धर्मांशुरङ्गस्तु विजृम्भने ॥३१५॥

རྒྱ་པ་ དང་ སྒྱུར་ འབྲེལ་བ་ཡི །

དམར་བ་ རབ་དུ་སྒྲོན་བྱེད་ ཅིང་ །

ཚ་ཟེར་ཅན་ འདི་ རྒྱ་གྱུར་དེ །

ལུས་སྒྲེས་ དག་ རི་ རྣམ་པར་ཀུས ॥ 314



निस्त्रिंशत्त्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।

शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्णने ॥३१६॥

र॒त्न॒श्री॒श्रि॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

ग॒ङ्गा॒श्रि॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

श्री॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

स॒द॒श्रि॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ॥ ३१७ ॥

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वपि रक्षति ।

अथवा दृश्यते रागिमिधुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

श्रि॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

श्री॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

श्री॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ।

श्री॒द॒त्त॒वि॒स्मृ॒त् ॥ ३१८ ॥

महीभृद्भूरिकटकस्तेजसो नियतोदयः ।

दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥



ས་འཛིན་ ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ །
 གཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ ཅེས་བར་དར་ །
 ཟླ་དགུའི་བདག་ བྱང་ ཟུར་བ་ལྟེ །
 རྩེ་པོ་ རྣམ་པ་ འཛིན་ ཡང་དེ ॥ 314

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविवितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जगते शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१६॥

ཉམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚེས་གཙོད་མིན་ །
 རྒྱལ་པོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ །
 ལྷ་ཡང་ བོ་བུ་དྲུ་ མིན་ཤེས་ ॥ 315

गुणज्ञानिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

བྱད་བར་ རབ་དུ་ བཟུན་པའི་ཕྱིར་ །
 ཡོན་ཏན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ མོགས་ །



གང་རྟུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།

དེ་ནི་ བྱད་པར་ བརྗེད་པར་ འདོད་ ॥ ३४०

न कठोरं न खातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।

तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ གཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚན།

རྩ་བ་པ་མ་ཡིན་ རྩོམ་བཟང་མིན།

དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།

ས་གསུམ་དག་ལས་ གྲུ་ལ་བར་གྱུར་ ॥ ३४१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।

तथाप्येषा सपोभङ्गं विधातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བུ་མོ་ མིན།

དྲི་ཟའི་ རིགས་ལས་ བྱུང་བཟང་ མིན།

དེ་ལྟ་ རྗེད་གྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།

དཀར་བྱུང་ གཞིས་པ་ ལྷུང་པར་ རྩས་ ॥ ३४२



न वद्धा भुक्नु[33b]दिनापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न ख रक्ताभवदृष्टिर्बलस्तञ्च द्विपतां कुलं ॥३२३॥

मि०ग०रे० द०ग०रे० स०म०सु०स० मी० ।
स०मि० ग०मि०ग०स० ग०म० स०म०सु०द०म० ।
सि०ग०ग०म० द०स०म०सु०म० स०ग०म०सु०म० ।
द०ग०मि० मी०ग०स० रे० सु०म०स०म०सु०म० ॥ ३२३

न रथा न ख मातंगा न हया न ख पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्टयेव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

मी०द० मी०द० मी०द० मी०द०मि०द० मी०द० ।
द०मी०द० मी०द०मि०द०मि०द०मि०द० मी०द० ।
मि०द०मि०द०मि०द० मी०द० मी०द०मि०द०मि०द० ।
मि०द०मि०द०मि०द०मि०द०मि०द०मि०द० ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विद्यमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयं ॥३२५॥



ཤིང་དྲ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་ག་དང་ ।

ཁ་ལོ་ག་ ཉམས་ དྲ་མི་མཉམ་ ।

དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན་ ।

ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མནན་ ॥ २१४

सैवा हेतुविशेषोक्तिस्तोजस्वीतिविशेषणम् ।

अयमेव कमोन्येषां मेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ ཁྱད་པར་ལས་ ।

འདི་ནི་ རྒྱ་ཡི་ ཁྱད་པར་ བཟོད་ ।

རིས་པ་ འདི་ཡིས་ གནན་གྱི་ ནི་ ।

དབྱེ་བ་ནམས་ ཀྱང་ བདག་པར་བྱ་ ॥ २१५

विषक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।

कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ འདོད་ ཡོན་དན་ ཁྱད་འཕགས་ དང་ ।

མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི་ ।

ཡུལ་དང་སྤོང་རྒྱུ་དང་བཟུགས་པ་གང་།

དེ་ནི་ མཚུངས་པར་ ཡུལ་པར་ བཤད ༥ ༢༤

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भस्मानपि ।

विभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ ལུས་ངན་ ཅུ་ཕྱེད་དང་།

མིག་སྤྱོད་པ་ དང་ ཁྱེད་ཉིད་ ཀྱང་ །

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ རྣམ་པར་འཛིན་ ॥ ༢༤

संगतानि मृगाक्षीणां तडिहिलसितम्यपि ।

क्षणद्वयस्य लिपुं [34a]ति धनरजधान्यपि स्वयं ॥३२६॥

རི་དགས་ སྒྲིག་ ནང་ འགྲོགས་པ་ ནང་ །

ཐོག་གི་ ཅེ་དགའ་དག་ དང་ མི།

ལྷན་གྱི་ ཚུལ་ལུང་ རང་བཞིན་གྱིས།

མྱེད་ཅིག་ བཞིས་པར་ མི་ བཀའ་སློལ་ ༥ ༢༢༩



विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

अण्यत्तु क्षुब्धेन क्षुब्धेन ।
णत्तु दत्तस्यैव अण्यत्तु क्षुब्धेन ।
अण्यत्तु अण्यत्तु क्षुब्धेन ।
क्षुब्धेन अण्यत्तु क्षुब्धेन ॥ ३३०

कृजितं राजहंसानां वर्धते महामञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां कृतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

अण्यत्तु क्षुब्धेन क्षुब्धेन ।
क्षुब्धेन अण्यत्तु क्षुब्धेन ।
क्षुब्धेन अण्यत्तु क्षुब्धेन ।
क्षुब्धेन अण्यत्तु क्षुब्धेन ॥ ३३१

प्राचुर्येणैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
रामेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥



དབྱར་ལྷོས་ རྩ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
 རྣམ་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྷ་བྱར་ སྤྱོད་ །
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་དུ་ ཆགས་པར་གྱུར་ ॥ ३३२

तनुमप्यं पृथुधोनि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हस्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

མྱེད་པ་ ལྷ་ རིང་ རོ་སྤྱད་ སྤྱོད་ །
 མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་པ་ མིན་ །
 རྩ་བ་ དམར་ རིང་ ལྷ་མ་ མཐོ་ །
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྤྱ་ མ་ བཅོམ་ ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་ཅའི་ ལག་པ་ རྩ་ཤིང་ བརྒྱ །
 བརྒྱའི་གདོང་ དང་ ཡུལ་ལ་ མིག་ །



ཁྱེད་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་ནམས་ ।
གདུང་ནས་ མིན་ནས་ ལུས་ཅན་ས་ । ३३८

उद्यममाकृतोद्धृताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
उदभ्रयन्ति पाम्पानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३५॥

ཁྱེད་ཆེ་ལ་ རྒྱུང་གིས་ རབ་བཞུད་པ་ ।
རྒྱ་དུ་ཚས་ཀ་ཡི་དུལ་ ।
རིག་པ་མིན་ ཡང་ འཁོར་བ་ཡི་ ।
མིག་ལ་ མཆི་ས་ཟག་པར་བྱེད་ ॥ ३३४

रुणार्जुनानुरक्तपि दृष्टिः कर्णा(34b)वलम्बिनी ।
यानि विश्वसनीयस्य कस्य त कलभाणि ॥३३६॥

སྐར་པར་སྒྲོགས་ས་ ཁྱེད་ཀྱི་མིག་ ।
ནག་དཀར་ཆེས་སུ་དམར་པ་ ཡང་ ।
ན་བ་དག་ལ་ བདེན་པ་ བློ་ ।
སུ་ཡི་ ཡིད་བདན་ཉིད་དུ་འགྱུར་ ॥ ३३७



इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।

अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रकान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'भृ'र'क्रु'र'अ'ई'क्ष'स'य' ई ।

दु'स'ई'द'दु' र'व'ई'ण'स'पु ।

ल्ल'व'स' सी'र' अ'ई'द'य'स' व'ई'द'य' ई ।

ल्ल'व'स'सु' स'व'व' व'ई'द'य' य'ई' ॥ ३३८॥

सुखं जीवन्ति हरिणा धनेष्वपरसेविनः ।

अर्थैर्यत्नसुलभैर्जलदमाङ्गुलिभिः ॥३३८॥

ग'ल'र'सी'व'ई'द'य' ई'दु'ण'स'क्ष'स'स' ।

अ'व'द'सी'द' ई'द'य'र'सु'व'ई'ई'र' ।

तु'द'द'तु'य'सु'ग'स'ण'स'गु'स' ।

क्ष'ण'स'क्ष'स'स'सु' ई' व'ई'व'र' अ'ई' ॥ ३३९॥

सैयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।

राजानुवर्त्तनकृतानिर्विण्णेन मनस्विना ॥३३९॥



ཀྱུལ་པོའི་ཆེས་འབྲངས་ ཉམ་མོངས་པ།

ཤིན་དུ་སྒྲིབ་པའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།

སྐབས་སུ་ མ་བཟ་ཉིད་དུ་ འདིར།

རི་དྲགས་ སྒྲིད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱགས། ॥ ३३०

यदि नित्वन्निव स्तौति न्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।

द्वोयाभासा गुणा एव लभन्ते एतत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གལ་ཏེ་ སྒྲིད་པ་ བཞིན་ བསྒྲིད་ནས།

སྒྲིན་ ལྷར་ སྒྲུང་བའི་ ཡིན་དན་ཉིད།

གང་དུ་ ཉེ་བར་སྒོབ་གྱུར་པ།

འདི་ནི་ རྩལ་གྱིས་བསྒྲིད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।

त्यया राक्षापि सैवेयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རྒྱ་མ་དགའ་ཐུབ་པ་ཡིས་ ཀྱང་།

འབྲུང་པོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་ཀྱུལ།



དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ ཁྱེད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །

འདི་ལ་ ཁྱེད་ནི་ རྒྱགས་ ས་ མཇེད་ ॥ ༢༠༡

पुंसः पुराणादाप्तिं प भीस्त्वया परिभुज्यते ।

राजभिस्त्वाकुशंरास्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

ཁྱེད་ཀྱི་སྤྱེས་བུ་ ལས་ བཅད་ནས་ །

དཔལ་འདི་ཁྱེད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྤྱོད་ །

རྒྱལ་པོ་ བུ་ར་མ་ཤིང་པའི་རྒྱད་ །

ཁྱེད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སལ་ཅི་ ॥ ༢༠༢

भुजंगयोगसंज्ञका कलत्रं तव मेदिनी ।

अहंकारः पराङ्मोदिमामोहनि कुलस्तव ॥३४३॥

ཁྱེད་ཀྱི་ བཅད་མེས་ བའི་དེ་ །

ལག་འཁྱེད་སྤྱོད་ག་དག་ལ་རྒྱས་ །

ཅི་སྤྱད་ ཁྱེད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི་ །

སེམས་གྱི་སྤྱེད་ཅུ་ འཇོགས་བར་གྱུར་ ॥ ༢༠༣



इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां शोफलक्ष्यताम् ।
स्याज्जन्तुनिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविम्बरः ॥३४४॥

दे'ङ्ग'र' ठे'व'र' स'के'ङ्ग'व'र'स्य ।
सु'र'व'र'उ'र'द'र'व'र'र'द'र'की ।
वे'र'व'र'स'व'र'र'द'र'र'द'र'र'द'र'स्य ।
र'व'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' ॥ ३००

अर्धान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्त्वदृशं फलं ।
सदसद्वा निवर्त्येत यदि स्यात्तत्त्वदर्शनं ॥३४५॥

व'र'र'र' र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' ।
दे'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' ।
स'के'र'र'र'र' स'के'र'र'र'र' र'र'र'र' ।
दे'र'र' र'र'र'र'र'र'र'र'र'र' ॥ ३००

उदयान्तेव सविता ऋषेःपुत्रयति धियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥



ཉི་མ་ འཆར་བ་ཆེད་ཀྱིས་ བྱི །

པདྨ་རྣམས་ལ་ དཔལ་ཕྱིར་བྱེད །

པདྨ་ཆོགས་རྣམས་ཀྱི་ འབྲས་བྱ་དག །

གྲོགས་པོ་རྗེས་འཇོན་ བལྟན་པའི་ཕྱིར ༥ ༢༧༥

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्यान्तराजी पगभवं ।

सद्योराजविरुद्धानां सूचयन्ती दुरन्तता ॥३४७॥

ལྷ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །

སྤྲ་བའི་ཕྱིར་བ་ རྟལ་པར་འགྱུར །

འབྲས་ལ་ལྟལ་པོ་ དང་ འགལ་རྣམས །

ངན་པའི་སྤྲར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ༥ ༢༧༦

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणा ।

अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་དན་ལས་རྣམས་ ལྷན་ཅིག་གི །

དངོས་པོ་ བརྗོད་བ་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད །



དེ་ན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ་ ।

ཡོངས་མཁྲིས་ཡིན་དེ་ དེ་དག་ དཔེར ॥ ༣༧

सह वीर्या मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।

पाण्डुराश्च ममैवाङ्गैः सह ताम्रान्द्रभूषणाः ॥३४६॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས་ ।

བདག་གི་དབྱགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ ।

ཆེ་བའི་ཁྱེད་ལྷན་མ་རྣམས་ ཀྱང་ ।

བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལྷ ॥ ༣༧

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।

एतन्ति च समन्तेवामधुभिर्मलयानिलाः ॥३४७॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མྱོངས་པ་ དང་ ।

ལྷན་ཅིག་ ཁྱེད་འདི་དག་པ་ཀྱས་ ।

དེ་དག་ མཆི་ས་ དང་ མཉམ་དུ་ ।

ས་པ་ཡ་ཡི་རྒྱུང་དག་ འབབ ॥ ༣༨



कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिचनवायवः ।
यान्ति साधं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरमिवासराः ॥३५१॥

लु'गुण' श्लो'गस'प'रि'क्ष'य'व'च'द' ५८' ।
क'ग'स'गु'ह'द' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
र'गु'द' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ॥ ३५१

इत्युदाहृतयो वस्ताः सहोक्तेरत्र काव्यन ।
क्रियते परिवृत्तेष्व किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

दे' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ॥ ३५२

शस्त्रप्रहारन्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हृतं तेषां यशः कुमुदपाण्डुरं ॥३५३॥

स' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।
६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ६' ।



དེ་དག་ གྲགས་པ་ ཀྱ་མུང་ དཀར་ །

ཡུན་རིང་དག་དུ་ བསྐྱབས་པ་ རྩོགས་ ༥ ༣༥༢

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।

पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་ལ།

སྨོན་པ་ གིས་བརྗོད་ ཅེས་བྱ་ དཔེར་ །

ངག་ཡིད་ སྨོད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི་ །

སྐང་བ་ དམ་པས་ བྲིད་ལ་ སྐངས་ ༥ ༣༥༣

अनव्ययसस्त्रिहावुपमास्वेव दर्शितौ ।

उपमा रूपकं [36a] चापि रूपकेऽप्येव कीर्तितम् ॥३५५॥

རྗེས་འགྲོ་མེད་དང་གེ་ཚེས་ཅན་ །

དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བཞུན་ །

དཔེ་ཡི་གཟུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདིར་ །

གཟུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ཇེས་པར་བསྐྱགས་ ༥ ༣༥༤



उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयोपि च ।
नानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

रवर्हेण'ऊ'अस' ररे' अर' रे ।
रवर्हेण'दण'नी'दण'व'रिद ।
घ'दद'क्रु'र'दयस'व'श्लेस'घ'रि ।
श्ले'अ'स'दण'दु' व'रि'द'घ'श्ले ॥ ३५६

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

अर'अण'अर'अण'उर'दरे'स'रि ।
श्ले'अ'स' दद' घ'अस'उद' श्ले'अ'स'रु'द'स'रिद ।
उस'घ'रि'अण'स' व'रि'स' श्ले'अ'स'अ ।
क्रु'र'दण'अ' रि' अ'रि'र'घ'र'दु ॥ ३५७

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तत्र मुग्धे मुखश्रियं ।
कोपदण्डसमप्राणां किमेवामस्ति दुःकरं ॥३५८॥



མཛེས་མ་ ཁྱིད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ།

པདྨ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད།

མཛེད་དང་ ཡུ་བ་ སྤྲ་ཚྭགས་པ།

འདི་ལ་ བྱ་ དཀར་ ཅི་ ཉིག་ ཡོད། ॥ ༢༥༤

शेषः सर्वासु पुष्पाति प्रायो वक्रोक्तिषु धियः ।

भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्यक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयं ॥३५६॥

རང་བཞིན་ བཛེད་དང་ འགོག་ བཛེད་ཅེས།

ངག་གི་ རང་བཞིན་ བ་དད་ གཉིས།

འགོག་པོར་ བཛེད་པ་ ཐམས་ཅད་ལ།

པལ་ཆེར་ སྤྲ་བས་ དབལ་ཁྱས་བྱེད། ॥ ༢༥༥

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।

भावः कवेरभिप्रायः काल्येवासिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

སྤྲ་ངག་མཁའ་ ཐམས་པོར་གོངས་པ་ ལྟེ།

སྤྲ་ངག་ གྲུབ་པར་ གང་ གནས་པ།



རབ་སྦྱོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན་ །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བརྗོད་ ༥ ༣༥༠

परस्पररोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] इथानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་བོ་ཡེ་ ནི་ ཚིགས་ནམས་ཀྱན་ །

པན་ཚུན་ པན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད་ །

དེ་དང་ བྱལ་བའི་ ཁྱད་པར་ ནམས་ །

ས་བྱས་ གནས་སུ་ བསྐྱགས་པ་ དང་ ༥ ༣༥༡

व्यक्तिक्रियाक्रमबलाद्गभीरस्यापि वस्तुनः ।

आघातसमिद्धं सर्वमिति तं भाषिकं विदुः । ३६२

བརྗོད་རིས་ རྟོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི་ །

ཟབ་སོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ་ །

དེ་ཀྱན་ དགོངས་པ་འི་དབང་གྱུར་ སྦྱོར་ །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག་ ༥ ༣༥༢



यच्च सन्ध्यकृत्यङ्गलक्षणाधामान्तरे ।
व्याचर्णितमिदं खेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚས་ས་ སྟེར་ ཡན་ལག་ ནང་ ।
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ སྟགས་ ।
ལུང་ གནས་ ནག་དུ་ བཟློད་ འདི་ ཡང་ ।
ཀྱན་ཉིད་དུ་ རི་ བདག་ཅག་ འདོད་ ॥ ३६३

पन्था स एव विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
व्याचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

ཀྱ་ཆེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྐྱས་ཚད་དུ་ བྱར་བ་ཡི་ ।
ཀྱན་ནས་ས་ ནག་གི་ཡས་ འདི་ཉིད་ རི་ནས་བར་ཕྱེ་ ।
བཟློད་པའི་ཡུལ་ཡས་ འདས་བར་ ཡོངས་སུ་གནས་བ་ཡི་ ।
ཁྱད་བར་ནས་ས་ནི་ གོས་ས་བ་ཉིད་གྱིས་ ནུའི་བར་ནས་ ॥ ३६४

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ कान्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སྟོབ་དཔོན་ ནུབ་ག་བ་ཅན་གྱིས་ མཇོད་བ་ སྟན་ངག་ མེ་
ཡོང་ཡས་ དོན་གྱི་ཀྱན་ ཅས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་བ་ གཉིས་པའོ་ ॥



CHAPTER III

अव्यपेक्षव्यपेक्षाद्या व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཚེད་དང་ བར་ཚེད་ བདག །
ཡི་གེ་ ཚེགས་པ་ བསྐྱར་བ་ནི །
ཟུང་ལྟ་ དེ་ཡང་ ཀྱང་བ་ཡི །
དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྟོད་ཡུལ་ཅན ། १

एकद्वित्रिचतुष्याद्यमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसंज्ञतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ ཀྱང་བ་ཡི །
ཟུང་ལྟ་རྣམས་ཀྱི་ རྣམ་རྟོག་ནི །
ཐོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ་ །
བར་དང་ ཐོག་མ་ ཐོག་མཐའ་ ཀུན ། २



[37a] अत्यन्तबहवस्तेषां भेदाः संभेदयोनयः ।
सुकरा दुष्कराश्चैव दृश्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणः ५ द्रष्टुः ५ अक्षः श्लेषः ५ ।
देः ५ द्रष्टुः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ।
देः ५ द्रष्टुः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ।
द्रष्टुः ५ द्रष्टुः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये अने ।
अलिङ्गता कण्ठमान्निष्ठस्य तमेव कुरु सत्रयम् ॥४॥

प्रणयः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ।
अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ।
अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ।
अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ अक्षः ५ ॥ ४

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिना ।
नुव्रमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहने ॥५॥



ངང་པ་ནམས་གྱི་ རྟེན་ས་ འཛེམས་པ་ །

སྒྲིན་གྱི་ ལྷ་ ཡིས་ ལྷོས་བྱེད་ནི་ །

དགའ་མ་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་གྱི་ །

ཁངས་བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད་ ॥ ༥

राजन्यतयः प्रजा जाता भवन्तं प्राप्य साम्प्रतं ।

चतुरं चतुरंभोधिरसनोर्धोकरग्रहे ॥६॥

ཏུ་གདེར་བཞི་ཡི་ ལྷ་རགས་ཅན་ །

ས་ཡི་ལག་ དབྱ་འཛིན་ལ་ གཤམས་ །

བྱིད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ནི་ །

སྒྲི་དགུ་ ཏུ་ལ་པོ་ བཟང་ལྟ་གུར་ ॥ ༦

अरण्यं कैश्चिदाकालमन्यैः सद्य दिवौकसां ।

पदातिरथनागाश्चरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀྱང་ཐང་ ཤིང་ད་ སྒྲང་པོ་དང་ །

ད་དང་ བྲལ་བ་ བྱིད་གྱི་ དགུ་ །



འགྲུ་ཞིག་ རྒྱལ་ས་དང་ གནས་དག་ནི །
ལྷ་ རྒྱལ་ས་དག་གི་ གནས་སུ་ སོང་ ॥ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
विभ्रमम्भ्रमरघान्तया विदम्बयति किञ्चिद् ॥८॥

ཐུ་སྤྱེས་གཤོང་ལྷན་ སྤྱིག་དག་གི་ །
རྒྱལ་འབྲུལ་ ཡིད་ཤོང་ འདི་ལ་ ནི །
དཀྱིད་ཀྱི་ བྱང་བར་རྒྱལ་འབྲུལ་གྱིས། །
ཙྰ་འདྲི་བྱེད་པ་ ཙྰ་ ཡིན་ སྤྱིས་ ॥ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धरः ।
न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདྲོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི། །
སྤང་པོའམ་ གཙུང་དགར་ ན་སེད་གྱིས། །
གང་ཕྱིར་ བདག་ཅག་ མཐར་བྱས་པ། །
དེ་ཕྱིར་ བྱིད་ཀྱི་ རྒྱལ་གནོན་ མཚར་ ॥ ༩



राजितैराजितैरुण्येन जीयते त्वाद्दशैर्नृपैः ।
नोयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

गङ्गायाम् नृपैः सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव सैव ॥ १०

करोति सहकारस्य कलिकोरकलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मन्मनोमन्मनो ॥११॥

सैव सैव सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव ।
सैव सैव सैव सैव सैव ॥ ११

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशी ।
अवस्था नालमारोढुमङ्गनामङ्गनाशिनो ॥१२॥



ཁྱིེ་ལ་ དམིགས་ བའི་རི་བ་ དང་ །

མ་བྲལ་ འདི་ལ་ རི་འདྲ་ ཡི །

གནས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཛིག་བྱེད་པས །

བྱད་མེད་ འཛིགས་ ལས་ ཅི་ལྟར་མིན ༥ २१

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।

तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡ་ལ་འདབ་ གསར་བས་ མཛོས་བ་ཡི །

ལྗོན་པས་ ཏུངས་བའི་ གནོན་ལྷ་རྣམས །

པ་རྒྱར་ མཛོན་ ཏུགས་ ཏུང་བ་ཡིས །

མིག་ནས་ བརྒྱུ་མྱེ་ འགྲགས་པར་བྱེད ༥ २२

विशदा विशदामससारसे सारसे जले ।

कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामियं ॥१४॥

ཁྱེས་བའི་ བཞུད་ནི་ རབ་འཇུག་པ །

རྒྱུ་གྱི་ཁུ་ལ་ དཀར་བ་ཡི །



ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅ་ ཡིས།

བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟས་སུ་བྱེད། ॥ ੨੮

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनम्दनः ।

सहेन्दुकलयापोढमलया मलयानिलः ॥१६॥

དི་བྱལ་ ལྷ་བའི་ཆ་དག་ དང་།

ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་དུག་གི་ རྗེས་སུ་འགྲོ། ॥ ੨੯

मानिनी मानिनीपुस्ते नियङ्गत्वमनङ्ग मे ।

हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ ལྷན་མི་འདོད་ ཁྱེད་པ་ཅན།

དོ་གཡ་དང་ལྷན་ འཕྲོག་བྱེད་མ།

ལུས་མེད་ བྱེད་ཀྱི་ དང་པ་ ནིད།

སྤྱ་གྲུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་ལྷས་ མཛོད། ॥ ੩੦



जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।
कमलं कमलं कुर्वदलिमहलिमलिप्रये ॥१७॥

सुदं॒ग्री॒ नदं॒द॒गी॒श॒ नद॒गा॒ न॒श॒ क्रु॒थ ।
हृ॒यि॒क्रु॒थ॒ गुरु॒ सु॒द॒वा॒ठ॒न ।
नद॒वा॒ठ॒न॒ द॒हृ॒ नद॒श॒ नद॒न॒श॒ ।
उ॒ध॒र॒ न॒क्रु॒थ॒ नद॒गा॒ नद॒न॒श॒ ॥ १७ ॥

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।
धारणीधारणीभूतसौग्धा सौरभास्पदं ॥१८॥

हृ॒यि॒न॒द॒ग्री॒श॒ नद॒गा॒ गुरु॒न॒द॒ ।
हृ॒यि॒न॒द॒ग्री॒श॒ न॒द॒गा॒ ।
नद॒गा॒ नद॒गा॒ न॒द॒गा॒ न॒द॒गा॒ न॒द॒गा॒ ।
नद॒गा॒ न॒द॒गा॒ न॒द॒गा॒ न॒द॒गा॒ न॒द॒गा॒ ॥ १८ ॥

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।
व्यपेतस्यापि वण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥



རེ་ལྟར་ ཀང་པ་རི་ རྟོག་ས་ཡི།
 རྩང་ལྟར་ བར་ཆོད་མེད་ རྣམ་རྟོག།
 ད་ནི་ བར་རྟུ་ཆོད་པ་ ཡི།
 རྣམ་རྟོག་ རྟག་ལང་ བལྟར་པར་བྱ། ॥ १७

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनेव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

ས་ཏྲ་ཀུ་ར་ ལས་ རྒྱུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ རྟི་བཟངས་ལྟར་པ་ ཡིས།
 དབྱེད་གྱི་ མེ་ཏེ་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁིངས་པ་ རྒྱ་ཡི་ ལྟག་སར་བྱེད། ॥ १०

करोऽनिताग्नौ रामाणान्तन्म्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेष्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་སར་ ལག་པ་ ཡིད་དུ་ དཔར།
 རྟེན་མངས་ལ་ བལྟར་ རྣམ་འགྲུལ་ལ།



ལྷག་དོག་ ལྷན་ནས་ མཇེའ་བོ་ལ་འང་ །
ན་བའི་ཡུལ་གྱིས་ བསྐྱར་བྱེད་ ॥ ४१

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।
मेघाली नर्त्तिता घातेः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

ལྷུང་གྱིས་ ལྷན་ བསྐྱར་ ལྷན་གྱི་བྱེད་ །
མཐའ་དག་ རྩ་ནི་ འཕྲོང་བར་བྱེད་ །
དེ་ཆེས་ མཐུག་ ས་རབ་བསྐྱར་བའི་ །
མཐུག་ལྷོ་ལྷན་པ་ ལྷན་དག་བྱེད་ ॥ ४२

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।
कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेशं ॥२३॥

འདོད་ལྷན་ས་ དག་ རྩོད་གྱི་ ཡིད་ །
ཁྲིངས་ཚོད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་ནི་ །
ནི་བའི་ཀ་ལི་ཀྱ་ མཐོང་ན་ །
གནས་སྐབས་ ཅི་ལ་ དེག་འགྱུར་རས་ ॥ ४३



आरुह्याकीर्णशैलस्य चन्द्रकान्तललीमिमां ।

नृत्यत्येष लसच्चारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

छे'दण'रि' री'यि'त्त'रि'द'गु' ।

घट'रि'द'य'रि' र'ह'ण'स' गु'र' र'स' ।

स'रि'द'स'स'घ'र' स'ह'ण'द' र'व'स'ह'स'घ'रि' ।

ग'ह'ण'घ'द'उ'र' र'रि' ग'र'गु'द'रि' ॥ २७

उद्धृता राजकावुषीं ध्रियतेष भुजेन ते ।

वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

ग'र'रि'ण' गु'य' स'ह'ण' घ'ट' ग'र'स'यि'द' ।

घ'ण'घ'स' ग'ह'ट'घ'रि' स' र'रि'रि' ।

गु'य'घ'रि' र'ह'ण'स' य'स' र'व'गु'द'स' र'स' ।

द'घ' ग'रि'द'गु' य'ण'घ'स' घ'ह'ट' ॥ २८

करेण ते रणेप्यन्तकरेण द्विषतां हताः ।

करेणवः क्षरद्रुक्ता भान्ति सन्ध्याश्रया इव ॥२६॥



གཡུ་ཡ་དུ་དག་ཡི་རྒྱང་པོ་རྣམས་ ।

ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་མཐར་བྱེད་ཀྱིས་ ।

བསྐྱར་པའི་ཁྲག་ནི་རབ་ཟག་པ་ ।

བྱར་མཚམས་དག་གི་སྤྱིར་བཞིན་མཛེས་ ॥ २५

परागतकराजीव धातैर्ध्वस्ता भटेभ्यम् ।

परागतमिष कापि परागततमम्बर ॥२७॥

རྒྱང་གིས་རི་ཡི་ཤིང་བྱིང་བཞིན་ ।

གཞན་གྱི་ཕྱི་ནི་དཔར་བོས་བཅོམ་ ।

མཐར་ནི་ག་ཤེད་སང་བ་བཞིན་ ।

རྒྱལ་གྱིས་ནམ་མཁའ་བྱབ་པར་གྱུར་ ॥ २७

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।

स दानवकुलध्वंसी सदानवरवन्तिहा ॥२८॥

ལེགས་ལྡན་རྒྱ་འཛིན་གསར་པའི་འོད་ ।

ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད་ ।



ཆད་ཡན་ སྤང་པོ་ མཆོག་ བཅོམ་པ།

བྱབ་འཇུག་དེས་ བྱིད་ ཉག་དུ་ སྤངས། ॥ ༢༤

कमलेस्समकेशान्तो कमलेष्व्याकरं मुखा ।

कमलेष्वं करोषि त्वं कमले[39a]षोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

བྱིད་ཀྱི་སྐོ་སྤྱ་བྱང་བ་འདྲ།

གཤོང་ནི་ བརྒྱར་ སྤྱག་དོག་བྱིད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་དུ་ རབ་སྤྱོས་པ།

བྱིད་ཀྱིས་ སྤྱ་ཞིག་ ཅི་མི་བྱིད། ॥ ༢༥

मुद्रा रमणमन्वीतमुद्रारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

ཀྱ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ ཀྱན་དང་ཡན།

ཀྱགས་པས་ མིག་ འཁོར་ ཇོ་གླ་ན།

ཚུང་བ་ མིན་པས་ མཇོའ་པོ་ བློ།

དགའ་བ་ཡན་པ་ བྱ་བར་བཟོད། ॥ ༣༠



གསང་ འཕྲོང་ དགའ་བ་ རྒྱུགས་བྱེད་པ།

དུས་འདྲ་ སུ་ཡིས་ བཟ་བར་ནས། ॥ ३४

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।

यामयाम धि[39b]याऽस्वर्त्याया मया मयितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གུར་ རིང་བ་ཡི།

མཚན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་གི་ཅིག།

གང་ལ་ བདག་ སང་ སྲོག་ གཞིར་ འགྲོ།

དེ་ནི་ རྒྱུ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ། ॥ ३५

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।

एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराप्यपि ॥३७॥

ཅེས་ཀྱང་ དང་པོ་ ཟུང་ལྡན་གྱི།

ནས་དྲོག་ ལྷགས་ནི་ འདི་འདྲ་ ལྟེ།

འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ ཟུང་ལྡན་གྱི།

ནས་དྲོག་ གཞན་པ་ རྣམས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ३४



न प्रपञ्चभयाद्धेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

ལྷོས་པས་ འཛིགས་ ལྷིང་ དབྱེ་བ་ནི །
མཐའ་དག་ བརྗོད་པར་ མི་འདོད་དེ །
དེ་ལ་ བྱ་དགར་ མཛོད་འདོད་ གང་ །
འགའ་ཞིག་དག་ནི་ བཟུན་པར་བྱ ༥ ३८

स्विरायते यतेन्द्रियो न ह्रीयते यतेर्भयान् ।
भामायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

བདེན་ཡན་ དབང་པོ་ རབ་བཟུ་སས་པ །
ཁྱེད་ནི་སྒོས་བརྗོད་པས་མི་ཉམས །
སྒྲི་མེད་ ཁྱེད་ཀྱི་ བདེ་ འཛིགས་པར །
མི་འགྱུར་ འདི་སྒྲིད་ ཆེད་དུ་འང་ འགྱུར ༥ ३९

सभासु राज्ञसुराहतसु क्षीर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।
न भासुरा यान्ति सुरात्र तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥



ཀྱལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱེ་ཞལ །
 ཆང་གིས་ས་བཅའ་ཤོར་གྱིས་ མཛེས་པས་རབ་བཞུད་བའི །
 བྱིད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྤྱེ་དགུ་ལ །
 སུང་བོ་ཉིད་གྱུར་ ལྷ་རྣམས་སུ་ རི་སི་འགྲོ་སིད ༥ ༧༠

तव प्रियासचरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དས་བའི་སྤྱིད་ལ་བག་སེད་བྱིད་ཀྱི་དགའ་ས་ གང་ །
 དགའ་བའི་དགའ་སྤྱོད་དགའ་བས་ བྱད་བར་དུ་སྤྱོས་ས །
 དེ་ཡིས་ འདིར་ནི་འདི་ལྷན་ ཀྱུར་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྷན་ཉིད་ཀྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་ཆེད ༥ ༧༡

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे क्षत्रु[40a]सञ्जनेन ते ।
 य एष क्षीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མཁོན་པོ་བྱིད་ལྷས་དུད་པའི་རོ་ནི་སི་མཁེན་དེ །
 དམན་པ་ཉིད་ དང་ མཆོག་ཉིད་ དག་ནི་ དེས་བར་འགལ །



གང་ཞིག་ རམན་པ་རྣམས་ རི་ ཁྱིད་ལ་མགོས་ འདུད་ཅིང་ །
 དེ་དག་ ཁྱིད་རམན་པ་འི་རོ་ དེས་ མཆོག་དུ་ གྱུ་ ॥ ༧༤

लीलास्मिनेन शुचिना मृदुनोद्विनेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।
 व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

མོལ་པ་འི་འཇུ་མ་ རྟཀར་ རང་ རི་ འཇམ་པོར་སྤྱོ་བ་ རང་ །
 ཁུང་ཁུའི་ལ་བ་ རང་རི་ སྤྱི་བའི་འགྲོ་བ་ རང་ །
 ཀྱུན་དུ་སྤྲུལ་ རང་ རོ་ སྒྱ་ན་དག་ སྤྱིན་པ་ དེས་ །
 བསྐྱུན་པ་ དེས་ ན་ བདག་རི་ འཆོ་བས་ རམན་པ་རྣ་གྱུར་ ॥ ༧༥

श्रीमानमानमरत्यर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्यथमानमानं ।
 भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमनमप्रतिमानमानं ॥४४॥

• १
 དགལ་ལྷན་ མི་ཤོང་ བདན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་ནི་ །
 འཆི་མེད་ལས་དང་ མཉམ་པ་འི་ཚད་ལྷན་ རབ་དུད་པ་འི་ །
 འགྲོ་བ་ཀྱས་བྱེད་ མཆོད་ལྷན་ ཚད་མེད་ མིང་ཅན་ནི་ །
 འཇམ་བྱེད་ ཚད་མེད་ མང་པོ་ བཞེད་ལ་ ཕྱག་དག་མཛོད་ ། ༧༦



सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुक्तसारधरा त ।
सारसानुकूलसारमकाञ्ची सा रसायनमसारमयैति ॥४५॥

वतुन'य' वृण'स'दे' सुद'वी'स' दण'र'प्रे'द'ठि'द' ।
स्त्रि'द'धे'द'पु'र'य'रि' वतुन'स'द' रव'दु'अ'ई'न' ।
ण'व'न'प्री'हे'स'स'कु'द'स' सु'द'न' द्वि'य'कु'द'उ'न' ।
दे'स' कि' वतुन'ये'न' स्त्रि'द'धे'द'पु'र'य'रि' ॥ ८१

नयानयालोचनयानयानया नयानयाभ्यान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाधितान् ॥४६॥

वद'न'कु'स'कु'य'द'द' कु'य'सि'न' वद'न'य' अ'दि'यि'स'कि' ।
कु'य'सि'न' द'णो'व'रि'स'व'स'य' अ'द'द'स'स' कु'स'य'द'पु'य' ।
ण'व'न'य'स'सि'अ'ग्रे' कु'य'व'रि'स'व'न'अ'ग्रे'द'ण'वी'स' न'द' ।
कु'य'स'स'व'रि'द'स'स' स'व'य' द'ण'य' वद'न'य'स'प्रे'द' ॥ ८७

[40b]रवेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीरवेरवेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
रवेरिवोमस्य पुरो हरेरवेरवेत तुल्यं रिपुमस्य भैरवे ॥४७॥



མཚུངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྟར་ གཡུལ་དུས་སྟེས་ནི།
 རྒྱལ་མཚན་ལ་ གནས་ དཔལ་བོ་ བྱ་ཡི་ ལྷ་ཡིས་ རྩོམ།
 ཅི་མ་ བཞིན་དུ་ བཟིན་བའི་ འབྲེག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཛིགས་རུང་ གཡུལ་ ལ་ དགྲ་ནི་ལུག་དང་མཚུངས་པར་རིག། ༥༦

मयामयालम्बकलामयामयामयामयातव्यधिरामयामया ।
 मयामयार्त्ति निराशऽमयामयामयामयामूं कलणामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ ཐུན་ལྟར་ དཔལ་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ནི་ བཞུད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་དད་ལ་ བཞིན་པ།
 ར་ཡི་ རང་བཞིན་ ནད་ཅད་ འབྲལ་བའི་ ནད་ཀྱིས་ གཟིར།
 ལྷལ་ལྟར་ལ་ འདི་ ལྷིང་ལྷིང་རང་བཞིན་ འབྲལ་མེད་ མཛོད། ༥༧

मतांधुनानारमतामकामतामतापलब्धामिमतानुलोमता ।
 मतावयम्युत्तमता खिलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ རྩིད་ཀྱི་ ལྷོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བཞུག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ ལྷ་མེད་ རྩེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།



གདུང་མེད་ཀྱིས་ བྲེ་ སུའོ་གེ་ རྒྱུ་ལྷ་ མཐུན་པ་ ཉིད་ ।

དགའ་མེད་ འདོད་མེད་རྣམས་ཀྱི་ འཕྲིད་པ་དག་ལས་ ཀྱལ་ ॥ ༥༠

कालकालगलकालकालमुखकालकाल

कालकालपनकालकालघनकालकाल ।

कालकालसितकालका ललनिकालकाल

कालकालगतु कालकाल कलिकालकाल ॥५०॥

དུས་ཀྱི་ དུས་ཅན་ མགྲིན་ནག་ལྷོ་ནག་ ནག་པོ་ ཉིད་ དག་ འཛིན་ ।

སྒྲིན་སྒྲིན་དག་གི་ སྒྲིན་དུས་ བུང་ཚོགས་ སྒྲིན་ནག་ ལྷ་བུར་ ནག་ ।

དུས་ཀྱིས་སི་གཙུང་ དུས་ཅན་ གཙོ་པོ་ མཛེས་པའི་ སྒྲིན་གྱི་མཚོ་ ।

དགའ་པས་འཚོ་བའི་གཡོ་ལྷན་ལན་བྱེང་ རིལ་ཅན་འགྲོགས་པར་ མཛོད་ ॥ ༥༠

संदृष्टयमकस्थानमन्तादि पा[4।a]दयोर्द्वयोः ।

उक्तान्तर्गतमप्येतन् स्वातन्त्र्येणात्र कीर्त्यते ॥५१॥

ཀྱང་པ་ གཞིས་ཀྱི་ མཐུར་བྲོག་ རི་ ।

རབ་སྒྱུར་ ཙུང་ལྷན་ གནས་སྒྲུབས་ འདི་ ।

བཙུང་པའི་ རིངས་སུ་ འདུས་ མེད་ཀྱང་ ।

རང་དབང་ཉིད་ཀྱིས་ འདིར་ བཤད་ལོ་ ॥ ༥༡



उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

མེས་པའི་ ཆགས་པ་ ཉི་པར་གནས་ཀྱང་ བུད་མེད་དེས །
བདག་ཉིད་ མ་སྦྱར་ བདག་གི་ སྤྲིག་པས་ ཁྲོ་བ་ཡི །
རོ་དང་ སྦྱར་དེ་ བུས་མེད་ དག་གིས་ གདུང་ བྱར་ ཀྱང་ །
བདག་ མི་ འདི་སྟེན་ གདུང་བཞི་སྦྱད་དུ་ མ་བཤམ་དོ ॥ ༥༢

अर्थाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य मेवाश्रयो मताः ।
पादाभ्यासोप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

བུད་མེས་ ཡང་དག་སྦྱར་བ་ཡིན །
འདི་ལ་ དབྱེ་བ་ གསུམ་དུ་ འདོད །
ཀང་པ་ བརྒྱས་པ་ དང་ ཏུ་ས་ ཡི །
བདག་ ཉིད་ དེ་དག་ དབྱེས་གསལ་བུ ॥ ༥༣

नास्थेयः सत्त्वया वज्र्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वज्र्यः परमायतमानया ॥५४॥



སྒྲིམ་བྱ་ བདྟན་ གང་ སྒྲིང་སྒྲོབས་ཅན།
 ཁིངས་པ་ རབ་སྒྲུངས་ སྒྲུང་བྱ་ རེ།
 ཁྱིད་ཀྱིས་ མཆོག་དུ་ འབད་པ་ ཡིས།
 ཡིད་བདྟན་བྱུང་ མི་བདྟན་མ། ॥ ༥༠

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५१॥

ཁྱིད་ཀྱི་ བཟོད་པ་ འབ་བདག་ གཞི་བྱིད་ཀྱིས།
 ཡང་ཡང་ རབ་སྒྲུང་ མཛེས་པ་ མེད་པ་ཡི།
 མི་རྣམས་ རྩལ་དང་ ང་ཀྱལ་ ཉམས་བྱས་ནས།
 གདུང་ རྒྱིང་ ཀྱི་མ་ བྱས་ཆོས་ རྣམ་པར་བཅོས། ॥ ༥༡

कलापिनां चास्तयोपयान्ति वृन्दानि लापोदघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोदघनागमानां कलापिनां चास्तयोऽप[4।b]यान्ति ॥५२॥

སྒྲིན་བཟོད་ དབྱར་སྒྲིམ་ མི་བྱུང་ཆོགས་རྣམས་ རེ།
 དགའ་བའི་སྒྲུ་ཡིས་ མཛེས་པ་ ཐོབ་པར་གྱུར།



རྒྱུང་གི་ཚོགས་ ལྷག་ རྣམ་བཤ་ རྒྱུང་ལྷོགས་ཀྱི །
ཚོགས་རྣམས་ ལྷ་དང་རྣམ་བ་ ཉིད་དུ་ གྱུར ༥ ༡༩

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
उरस्युपास्तीर्णपयोधरद्वयं मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ॥५७॥

འཚོ་བའི་དབང་ཕྱག་ འདུད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ ཁོ་སོ་ནི །
དཔར་ནིང་ ཁེངས་པ་ ཇིས་པར་བསྐྱབས་པའི་དབང་གྱུར་ས །
བརྟེ་བ་ ལྷངས་པས་ བདག་ཅིད་ རྒྱུང་གི་འོ་ས་འཛིན །
གཞིས་པོ་ ཉེ་བར་གདད་ནས་ གྱུར་དུ་ས་འཁྱུད་པོ ༥ ༡༨

सभा सुराणामबला विभूयिना गुणैस्तबारोहि मृणालनिर्मलेः ।
स मासुराणामबला विभूयिना विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८॥

ལྷ་རྣམས་ འདུད་ས་ ལྷོགས་མེད་ཁྱབ་བདག་གཤས་པ་ན །
ཁྱོད་ཀྱི་ཡིད་དཔར་ བད་ཅ་ ཇི་ས་མེད་པས་ འཛོགས །
དེ་ནི་ འོད་འབར་ ལྷོང་བཟང་རྣམས་ཀྱི་ ཡུན་སྐུས་ཚོགས །
བརྟེན་པའི་ ཕྱད་མེད་རྣམས་ དང་ རྣམ་པར་ཅི་ནིང་ལྷོད ༥ ༡༩

कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च महने न हन्त्यतः ।
न याति भूतकृणने भवन्मुखे कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

སྒྲུབ་པར་སྒྲུབ་པ་ ལུས་སྒྲིབ་དྲུབ་དང་ རྒྱ་གཞིས་མམས།
 ཁྱེད་ལས་ གནས་པ་ རྒྱ་ཞིག་ མ་བཅོམ་ དེ་ཡི་ཕྱིར།
 འབྲུང་པོ་ ལུས་སྒྲིབ་ ཁྱེད་ལས་གྲོལ་པ་ ཁྱེད་ལ་སྐབས།
 འབྲུང་པ་ ལ་ རི་ སྒྲིབ་སྒྲིབ་ རི་བར་འབྲུག་པ་ཡིན། ॥ ༡༠

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपमं दंशिता युधा ।
विनन्वतेऽजोपमं दंशिता युधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

ཁམ་འཇུག་ རྩ་བུ་ ཁྱིའི་དཔག་དཔྱད་ བོ་པགོས་པ།
 མཆོད་རྗེ་ལྟ་བུ་ དཔུང་པོ་དག་གིས་ ཕྱོགས་ནམས་སུ།
 གྲགས་པ་ དང་རི་རྒྱལ་དག་ ལྷས་ཕྱིན་ གཙུ་པ་ལྷིས་རི།
 དབྱ་རིགས་ ལྷས་བྲལ་ གཞི་མེད་ ལྷགས་པ་ ཉམས་པར་བྱིན། ༥

चिभर्शि भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमो मा स्मरतो मदञ्चितं ।
भृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भुध्रं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चितं ॥६१॥



རྩན་ལྡན་ བདག་ལ་ བན་པའི་ཆོག་ གཅིག་ བསན་པར་སྟེན །
 ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ རྩན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས །
 ས་ཡི་དགྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛེན་ དེ་ཕྱིར་ ས་གནི་འཛེན །
 རང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་པ་ རྒྱས་པར་ ཡོངས་ས་བྱེད ༥ ༤༡

स्मरानलोमानविबर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འཛེན་པའི་ སེ་གང་ ཁེངས་པས་ རབ་བརྒྱབས་པ །
 རྩན་ཅིག་དང་སྒྲུབ་རྒྱས་དེས་ བརྒྱའི་སྟེན །
 རོ་སྟེན་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ རི །
 ཀྱན་ནས་ རྣམས་པ་ རྩན་ཏུ་ ཅིས་སྟེན ༥ ༤༢

प्रभाषतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवामवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासोत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

ས་དུད་ ཁྱོད་ནི་ འཛིག་དེས་ བདག་གྱུར་ ཆོ །
 སུ་ཡེས་ སུ་ལྡན་ རོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་པ །



དེ་ལྟེང་གསར་པའི་བདུང་ལྔ་མཆོད་སྤྱོད་ནི།
 ཇིས་པ་ཉིད་དུ་ཆད་པར་མ་གྱུར་ཇོ༥༥

परम्पराया बलवा रणानां धूलीषिलीष्योस्त्रि विधाय रुधन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དབུང་གི་གྲང་པོ་རྣམས་ནི་གཞན་དང་གཞན།
 སྤྱོད་ས་ལྔ་སྤྱོད་གས་རབ་དུ་བརྒྱད་པ་ཡིས།
 བང་ལ་རྩལ་བསྐྱབས་ནས་མཁའ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུ་ལ་གྱི་སྤྱོད་ས་བརྒྱུག་མཆོག་དུ་གཞན་ལ་ཁྱུག༥༥

न अदधे वाचमलज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

ཁྱོད་ལྟ་མཉམ་པར་མ་བཞག་སྤྱིད་པར་ནི།
 རྣམ་གཉིས་མི་མཉམ་པར་པ་མེད་རྣམས་ཆོག།
 འོག་པར་གྱུར་པ་སྐྱབ་བྱེད་མི་མཉམ་པ།
 སྐྱལ་བཟོད་མཆོངས་ལ་མི་དད་ངོ་ཆ་མེད༥༥



सञ्ज्ञाहितोमानमराजसे[42b]न सञ्ज्ञाहितोमानम राजसे न ।
सञ्ज्ञाहितो मानम राजसेन सञ्ज्ञा हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དགྲ་ཡི་ མཛེས་ འཛེས་ས་ རྒྱལ་པོ་འི་སྡེ་ཡིས་བདད་ །
ཡུ་མས་ བད་པ་ དབལ་རྒྱ་ མེད་མིར་སྡེ་ །
མི་འདུད་ གོ་བགོས་ མཆོད་ཐོབ་ རྒྱལ་མེད་པ་ །
སྤྱེས་མཆོག་ རྗེ་བོ་དཔ་པ་ མི་མཛེས་མིར་ ॥ ५५

सकृद्विस्त्रिंश योऽध्यासः पादस्यैव प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाध्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཞིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་པ་ བཟུན་ །
ཆོགས་བཅད་ གཞིས་དང་ལྟན་པའི་དོན་ །
ཆོགས་བཅད་ བརྒྱས་པ་ ཡིན་དེ་ དཔེར་ ॥ ५७

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता वृथ्वायमनुलाभिता ॥६८॥



རྒྱུ་ཤིང་ རྒྱུ་པའི་ ལག་པ་ཅན་ ।
 རྒྱུ་མ་མིན་ རབ་ད་འཛོམས་བྱེད་པ་ ।
 རྒྱུ་འདྲན་ ཁྱེད་ཀྱི་ བཞུན་པ་ཡི་ ।
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་པ་མེད་ ॥ ༤-

विनायकेन भवता वृत्तोपचितश्रावुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमनुलाभिता ॥६६॥

འདྲན་པ་ དག་ དང་ བྲལ་གྱར་ཅིང་ ।
 ལག་པ་ རྒྱུ་ཁང་ རི་གྱར་པ་ ।
 རབ་ཀྱེད་མ་ཀྱིས་ བདང་ དག་ཡིས་ནི་ ।
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ མཛོན་པར་བཞུན་ ॥ ༤༦

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाङ्क्ष्यं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀླང་བཞི་ རྒྱུ་པ་ གཅིག་པ་ གང་ ।
 རྒྱུ་ལྷན་ རིན་པོར་ བཞུད་པ་ ཡིན་ ।



དེ་ལ་འང་ བརྒྱས་པ་ མཐོང་སྟེ་ དེ།

ཆེང་ལྡན་ བྱ་བ་ གནས་ ཡིན་ནོ། ॥ ८०

समानयास मानया समानयासमानया ।

समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དཔལ་ལྡན་ མཆོངས་མེད་མ།

ཁིངས་ལྡན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི།

ཁིངས་པ་མཉམ་ལྡན་ རྩལ་མིན་དག།

དོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སྤྱུ་རྒྱ། ॥ ८१

घराघराकारघरा घराभुजा भुजा महीं पा[43a]नुमहीनविक्रमाः ।

क्रमात्सहस्रो सहस्रा हतारयो रयोऽदुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འཛིན་མ་ འཛིན་པའི་རྣམ་འཛིན་ འཛིན་མ་སྟོན་རྣམས་ཀྱི།

ལག་པ་རྣམ་གཞོན་ མི་དཔལ་ན་ འབྲལ་པ་ དག་འཛིམས་པ།

སྤྱར་བ་དང་ལྡན་ མཚོན་པའི་ ཁྱར་ནི་ བསྟེན་པ་ ཡིས།

ས་གཞི་ དག་ནི་རིས་པས་ བསྐྱང་བར་ བཟོད་ བ་ཡིན། ॥ ८२



आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

नदंशुदं कौमल्यं वउदं शुद्धं युधुदं ।
पुण्यं ययं वल्लोचनं वल्लोचनं ३ ।
कुदं दूदं पुण्यं ययं वल्लोचनं वल्लोचनं ।
पुण्यं ययं वल्लोचनं वल्लोचनं वल्लोचनं ॥ ७३ ॥

या मताशा हतायासा सायाना कुशता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

नदं ययं वउदं पुण्यं वल्लोचनं ३ ।
दं ३ वदं वल्लोचनं वल्लोचनं वल्लोचनं ।
दं वदं वल्लोचनं वल्लोचनं वल्लोचनं ।
वल्लोचनं वल्लोचनं वल्लोचनं वल्लोचनं ॥ ७४ ॥

नादिनोऽमदनाथो स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिता ॥७५॥



རྒྱ་ད་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ རྩོམ་ རྩོམ་
 རྩོམ་མིན་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་ ཡང་མེད་ རྩོམ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་ རྩོམ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་ རྩོམ་ ॥ १४

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགྲོ་ བདུད་ལྷོང་ ལྷན་མི་དཔལ་ རྩོམ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ ॥ १५

सा दिनाययमायामा नाधीना शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

རྩོམ་ རྩོམ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་
 རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་ རྩོམ་པ་



ཉིན་མེད་ཅི་ རང་དག་ མ་ཐོབ་ མེན །

མུ་རན་ འབྲེལ་ ལྷན་ ཁེངས་མ་བྱེད ༥ ༥༠

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གཡ་དེ་ བྱེད་ ཀྱི་ཡི་གེ་ རྣམས །

གཞིག་གིས་ བར་ཆོད་ གཟུགས་གཞིག་ཉིད །

དེ་ནི་ བྱ་དགར་ དེ་ཉིད་ རིག །

བ་ཡང་ གཞིན་ ཞེས་ ལྷ་ ལྷེ་ དཔེར ༥ ༥༡

मदनो मदिराक्षोणामपाङ्गालोजये दयं ।

मदेनो यदि तन् क्षोणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲེ་ མིག་ལྡན་ ལུང་སྲིག་གི །

མཆོན་ གྱིས་ འདོད་པ་ འདི་རྒྱལ་ ཏི །

གཡ་དེ་ བདག་ཀྱང་ རྒྱིག་ཟད་ ན །

འདོད་པ་ ལ་ནི་ ཐལ་མོ་ ལྷོར ༥ ༥༢



आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

གཡ་པེ་ རྒྱུ་མ་བཅད་ བྱིད་ འཁོར་ན།
བྱིད་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བརྗེད།
གཡ་པེ་ ཀྱན་དུ་ འཁོར་བ་ན།
ཀྱན་དུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད། ॥ ८०

मनोभव तथानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

མ་དུད་ ཡིད་བྱུང་ ཁྱིད་ དར་ བྱིར།
མྱེ་ནི་ ཁྱིའས་ལྡན་ མ་ཡིད་ མིར།
ཡང་ན་ ཚད་ དངག་མེད་ ནད་ཀྱི།
འཛིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ མྱིག་པའི་དངོས། ॥ ८१

सामायामामायामासामारानायायानारामा ।
थानावारारावनायामायाराममारयाया ॥८२॥



ནད་རིང་ སྒྲིན་པའི་ དགའ་ས་ གང་ ।
 བདུད་ བརྒྱར་ མ་ལྟུང་ བཞུད་བརྒྱུག་ས ।
 སྒྲུ་མེད་ ལྷོ་བས་ལྡན་ སྒྲུ་གནས་དེ ।
 སྒྲུ་དང་ལྡན་ ཅིག་ འཆི་ སྒྲུ་དུ་འོ ॥ ༤༡

यः स्वरस्यानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टश्चतुःप्रभृत्येव दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་ གནས་དང་ ཡི་གེ་རྣམས་ ।
 ཇིས་པ་ གང་ འདི་ བྱ་དགའ་ལ།
 བརྒྱེ་ལ་ སོགས་པ་ རབ་བརྒྱན་ འདི།
 གཞན་ནི་ བྱ་སྒྲུ་ དག་ཏ་ འདོད་ ॥ ༤༢

आस्त्रायानामाहान्त्या वाग्मीतीरोतीभोतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे वेरो क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་ མཐར་ སྒྲུས་པའི་ཆོག་ ।
 སྒྲུ་དང་ ཡམས་ནད་ འཇིགས་ དགའ་ ཡིས་ ।



ལོངས་སྤྱོད་ རྟ་དང་ དགའ་དང་ རྟོངས་ ।
 དག་པའི་ ཡུལ་དུ་ སེམས་ འདོད་བྱུང་ ॥ ༥༭

क्षितिर्विजितिस्थितिर्विहिति [44a] अतरन्तयः परगतयः ।
 उरु कुरुगुरुं कुरुधुवुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྟ་ལ་ བདེན་པ་ རྒྱབ་བྱེད་པའི་ ।
 བདུལ་བྱས་ལ་དགའ་ སེམས་ རྟོགས་ ཀྱང་བས་ ।
 གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྟམས་ནི་ ।
 ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ རྩི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ༥༥

श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
 एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དཔལ་གཞི་ ཇོ་ཆ་ གྲགས་ དང་ ।
 རྩོལ་གས་ རྟོག་ དང་ དགའ་དག་ ।
 རྟོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ ।
 འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ༥༩



सामायामामाया मासा मारतायायानरामा ।

यानायारराचानाया माया रामा मारायामा ॥८७॥

३८३८ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ॥ ८८ ॥

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।

अघने मगने दृष्टिगगने दीयतां सकृत् ॥८८॥

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ।

३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३ ॥ ८९ ॥

अलिनीलालकलतं कञ्ज हन्ति घनस्तनि ।

आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥



རྩ་ལྷག་ ཁྱོད་ གདོང་ལན་བྱ་ཡི།
 འབྲི་ཤིང་ བྱང་བ་ ལྷར་ སྤྱོ་ནིང་།
 འདྲན་བྱེད་ བསྐྱེ་གཟུགས་ བརྟན་ཅན།
 སྤྱི་ལྷར་ མཛེས་པས་ སྤུ་ མ་བཅོམ། ॥ ༥༦

अनङ्गलङ्घनालङ्घनानातङ्का सदङ्गना ।
 सदानथ सदानन्दनताक्कासङ्गसङ्गतः ॥६०॥

དག་དྲུ་ སྤྱིག་མེད་ ཀྱུན་དགའ་ མཛོག།
 ལུས་ དྲུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས།
 བརྟན་མོ་ ལུས་མེད་ཀྱིས་ འགོངས་དེ།
 འཛིགས་པ་ དུ་མས་ རིག་པར་གྱུར། ॥ ༥༧

अया गांगारुकाकाकगाहकाऽधककाकहा ।
 अहा[44b]हांग स्वगाङ्गागकंकागखगकाकक ॥६१॥

ཏུ་ཏུ་མི་ སྤྱོགས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཛོན།
 རི་འགྲོ་ དབང་ འབྲོག་ལྷན་ མ་ཆགས།



འཕྲོག་ རྒྱུགས་ གདུག་ ཅེ་འཇུག་ སྟིག་ ।
བྱ་རྟག་ འཇོམས་པ་ མཐོ་རིས་ འགྲོ་ ॥ ༣༡

३ ३ रोक्कुरोक्कागोगोऽगांगगोऽगगुः ।
किङ्केकाकाकुक्कः काको मामा मामम मामम ॥६२॥

ཀྱེ་ཀྱེ་ ལྷ་ལྷོགས་ ཏུ་བུའི་ བུང་།
 འཛེམས་ སྒྲིག་པ་ རི་ རི་ ཅེར་ འབྲོ།
 ང་ཅན་མ་ རེང་ བདག་གི་བ།
 བྱ་རོག་ མ་བུའི་ ལྷ་ ལྷོག་ཅི ॥ ༧༩

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनः ।
दिव्यं वृद्धाय नादेन दाने दामवनन्दिनः ॥६३॥

ལྷ་རྣམས་ དགའ་བར་བྱེད་པ་རི་ རྩ་ །
 རིག་བྱེད་པ་ རྩོད་ རྒྱག་པ་ལེས་ །
 ལྷ་མིན་ དགའ་བྱེད་ བཅོས་པ་ན་ །
 ལྷ་ཡིས་ མཐོ་རིས་ རྒྱགས་པར་གྱུར་ ॥ ༧༩



सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

सप्तस'प' ह्र' द्द' ह्र' षी'य ।
अग्रो' ह्र'वस'ह्र'य'द्वी' ह्र'य'वस'ठ' ।
ऊ'य'र'ह्र'य' व'य'य'अ'ह्र'य' र' ।
व'य'य'ह्र'य' स'ह्र'य' स'ह्र'य' ॥ ६७

नूनं नुभानि नानेन नाननेनानानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनेनेनानानिनो निनीः ॥६५॥

अ'य'य' स'य'य'य'य'य'य'य'य'य' ।
व'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य' ।
व'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य' ।
ह्र'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य'य' ॥ ६४

इति दुष्करमार्गेऽपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥



རེ་ཕྱར་ བྱ་ དཀའི་ལས་ལ་ ཡང་ །

རིས་པ་ ཅུང་ཟད་ ཀུན་དུ་ བཟུན་ །

གབ་ཚིག་དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །

ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་དུ་བཟུན་པར་བྱ་ ॥ ༢༩

क्रीडागोष्ठोविनोदेषु तज्जीराकीर्णमन्त्रणे ।

परव्यामोहने चापि सोपयोगाः प्रहेलिकाः ॥६७॥

ཆེད་མེདི་ འདུན་ སར་ བཞད་གང་དང་ །

རེ་ཤེས་ ཚོགས་སུ་ གསང་ སྤྱ་ དང་ །

པ་རེ་ལ་ ཀུན་དུ་ མོངས་བྱེད་ལ་ །

གབ་ཚིག་དག་ རི་ ཉར་སའི་ལྔན་ ॥ ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।

वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रुढेन यत्र शब्देन वञ्चिता ॥६८॥

ཚིག་མཚསས་ སྤྱར་བས་ རོན་སྤྱས་པ་ །

ཀུན་དུ་ ཚོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཟོད་ །



གནད་ལ་ གྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས །

གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྤྱ་བྱེད་ཉིད ༥ ༩༥

अनुक्तान्तानिद्वयवद्वितप्रयोगान्मोहकारिणी ।

सा स्यात्प्रमुग्धिता यस्यां दुर्वोधार्था पदावली ॥६६॥

སྤྱོར་བ་ གིན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས །

སྤྱངས་བྱེད་ རིས་བ་ བྲལ་བ་ ལྟེ །

གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀར་བ་ ཡི །

ཆོག་གྱེང་ དེ་ནི་ རབ་བཙུག་ཡིན ༥ ༩༦

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।

पठया लक्षणासित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བདགས་པའི་རོན་ བཞེད་ ཆོག་དག་གིས །

བརྩེབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཞུགས །

མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཙམ་ ཇིས་ཆོག་ དང་ །

ལྟན་པའི་ཆོག་ ནི་ ཅུབ་མེའོ ༥ ༡༠༠



संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासने यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

गद'दु' गदस'गु'स' गुर'खे'दस'वर ।
ग्रे'द'व' गदस'ते'द' तेस'गु'द्वे ।
गद'दु' दग'दे'द' दस'व' ग'द'द' ।
खे'द'व' दे'दे' दव'वद'गस'ते'द' ॥ १०१

सा नामान्तरिता यस्यां नास्ति नामार्थकल्पना ।
निवृत्ता निवृत्तान्यार्था तुल्यधर्मस्पृहा गिरा ॥ १०२॥

गद'दु' खे'द'व' खे'दे'गस' दे'द' ।
वद'गस' दे' खे'द'दु' ददु'स'व'ते'द' ।
खे'द'दे' खे'स' स'दु'दस'व' दे'ग'द'स' ।
दे'द' ग'द'द' व'दु'दस'व' व'दु'दस'व'दे' ॥ १०२

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥



རྣམ་གྲངས་ ལྷ་ནི་ བཞེད་པ་ ཡིས། །
 བསྐྱབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་ལྷ། །
 གང་ནི་ག་ མངོན་སུ་མ་ དོན་ བཟུན་ ཡང་། །
 མོངས་ ལྷིར་ དེ་ནི་ མོངས་ ཉེས་བྱ། ॥ ༡༠༢

योगमालात्मकग्राम यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छात्राश्रितं व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

གང་ལ་ ལྷིར་གྱིང་ བདག་ཉིད་ཅན། །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འབྲིག་ ཅས་ བྱ། །
 གང་དུ་ ཉེན་ནི་ ལྷས་བྱས་ཏེ། །
 བཞེད་པ་ གསལ་པ་ གཞིག་ བསྐྱབས་པའོ། ॥ ༡༠༣

[45b] सा भवेदुभयच्छात्रा यस्यामुभयगोपनं ।
 संकीर्णा नाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

གང་དུ་ གཞི་ག་ ལྷས་གྱུར་པ། །
 དེ་ནི་ གཞི་ག་ བསྐྱབས་པ་འོ། །



གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ ལྷ་ཚོགས་ འདེས་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདེས་ ཉེས་བྱུ ༥ ༡༠༥

एताः षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
 दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्विंश ॥१०६॥

འདི་དག་ གཤམ་ཚོག་ བཅུ་དྲུག་ལྟེ །
 རྩོད་གྱི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ བསྟན་ །
 གཤམ་ཚོག་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
 བཅུ་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད་ ॥ ༡༠༦

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।
 साध्वीरेवाभिप्रास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །
 རྩོད་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བྱ་མིན་པར་ །
 རིག་ནས་ སྤར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས་ །
 ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བྱུ ༥ ༡༠༧



न मयागोरसाभिज्ञ चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानर्तुदितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

བདག་གིས་ བ་ལང་ རོ་སེམས་ཀྱིས་ །
ལེས་ བ་ མེད་ལ་ ཅི་སྤྲད་ ཁྱོེ།
གནས་མེད་དུ་བ་ འདི་ཡིས་ རི།
ཅི་སྤྲད་ ཀུན་དུ་ མེག་དམར་ས ॥ १०८

कृत्वा मासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
मेवं निर्धिशतो नारीममरत्नीत्रिडम्बिनीः ॥१०९॥

ཀུའ་བཤེན་པ་ ཁྱིད་ཀྱི་ རི།
དགའ་བ་ ཇི་ལྟར་ འཕེལ་གྱུར་པ།
འཆི་མེད་བུ་མོར་ ཅི་འདྲི་ས།
མི་མོ་ སྤྲོད་པས་ དེ་ལྟ་མེད ॥ १०९

वण्डे क्षुभ्यति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्ठके ।
मुखं बलगुरवं कुब्जं मनुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥



ཡུ་བར་ འོ་བྱེད་ བད་ཅན་ གྱི །
 ཇཇ་པ་ ཆོར་མ་ རུབ་པ་ཅན །
 བཞིན་ལ་ རྒྱ་རྩ་ན་ རྒྱེགས་བྱེད་ཅིང་ །
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ སར་ལྟེན ། ॥ ११०

व्यातयः कनि काले तौ रुकातयः स्फीतवल्गवः ।
 खन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायघो मम धारिणः ॥१११॥

ལུ་མོ་ མཆོས་མ་ ཁྱེད་ ཀང་བར །
 ཀང་གདུབ་ རྒྱས་པ་ རྒྱ་རྩ་ན་ རྒྱེགས་ །
 མཇོན་སུས་ཉིད་དུ་གར་བ་ འདིར །
 བདག་གི་རྒྱེག་ནི་ བདན་ མ་ཡིན ། ॥ १११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

ཀང་གི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ །
 མེ་དོག་ རྒྱས་པ་འི་ དོག་པ་ཅན །



འབྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལྷ་བ་ རྟི །

སྤྱིད་པེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐེང་ ॥ ११४

सुगः सुगलये स्वैरं भ्रमन्ति दशनार्चिर्वा ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि सप्रति ॥११३॥

རང་ས་རྟམས་ རྟི་ རང་ཁང་དུ །

སྤ་ཡི་འདྲ་གིས་ ཅེ་ དགར་ འབྲམས །

ད་ནི་ སྤོས་པར་བྱས་ དེ་རྟམས །

རང་གི་རྫིང་བུར་ བྱིང་བ་ བཞིན ། ११३

नासिक्यमज्या परिलभ्यतुर्वर्णाविभूषिता ।

अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྤ་ལྷན་དབྲས་གནས་ གསལ་བྱིད་ བཞིས །

ཡོངས་སུ་རྟམ་པར་བརྒྱན་བ་ཡི །

གྲོང་བྱིར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན །

སི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱན་མིང་ཅན་ ཡོད ॥ ११ॣ



गिरा स्त्रलल्लत्या नम्रेण शिरसा क्षीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्य वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

कृणुमस्य स्वदुःखसुखं च ।
सर्वेषां दुःखं क्षीयन् नमस्कृत्य ।
अपि तु मया नमस्कृत्य च ।
क्षीयन् नमस्कृत्य च ॥ ११५ ॥

आदौ राजेन्यधीराक्षि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

क्षीयन् नमस्कृत्य च ।
दुःखं च नमस्कृत्य च ।
क्षीयन् नमस्कृत्य च ।
क्षीयन् नमस्कृत्य च ॥ ११६ ॥

हनद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं प्रजन्ति काः ।
[46b]नानाभङ्गिशतकृष्टलोका घृष्टा न दुर्धराः ॥११७॥

हृत्प्रथं सीरैः चन्दप्रसन्नस्य ।

रैरुद्भूतस्यस्यैः चन्द्रैः च ।

सुहृत्प्रसन्नैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ॥ ११७ ॥

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वयः ।

स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभायिणि ॥११८॥

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ॥ ११९ ॥

शयनीये परावृत्त्य शयितौ कामिनौ रुषा ।

तथैव शयितौ रागान् स्वैरं मुलमचुम्बताम् ॥१२०॥

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।

चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः चन्द्रैः ।



ཆགས་པས་ རེ་བཞིན་ཉིད་ ཉམ་དེ །

དཔ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ ཟུང་ ॥ ११७

विजितास्रभवद्वेषिगुरुयादहतो जनः ।

हिमापहामिश्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་ཀྱལ་ ཟས་སྤྱེས་ དག་ཡི་ནི །

སྒྲ་སའི་འདྲ་གྱིས་ བཅས་ ཟུ་བོ །

ཁ་འཇོསས་ གྲོགས་སེར་ འཇོན་པ་ཡིས །

ཁྱབ་བའི་སྒྲ་པ་ མའོན་པར་དགའ་ ॥ ११८

न स्पृशत्यायुधं जानु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।

अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोऽयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནས་ཡང་ མཆོན་ དང་ བུད་མེད་གྱི །

ན་སའི་ དྲླེལ་འཁོར་པ་ མ་རེག །

སྒྲི་ས་ཡིན་པ་ འགའ་ནིག་གི །

ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མེན་ནོ་ ལོ། ११९



केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।
लब्ध्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

सु'बि'ग' ग'द' द'द' र'ग्रे'ग'स'य' य'स ।
सु'व' व'स'स'उ'द' उ'व'र'कि ।
सु'व' उ'द' उ'स'गु' द'स'द'ग'दु ।
ग'य'दे' स'सु'द'र' र'दे'द'य'र'ग्रे'द ॥१२२॥

सहया सगजा सेना सभट्टेयश्च चेज्जिता ।
अमात्रिको[47a]यं मूढः स्यादक्षरज्ञश्च नः सुतः ॥१२३॥

क'य'य'ग'ह' ह'र'उ'क ।
सु' र'दे' ग'य'दे' स'सु'य'र' ।
सु'द'ग'स'द' दे'द'गु'उ ।
र'दे'कि' य'ग' स'स' ग'द' ह'र' ॥१२३॥

सा नामान्तरितामित्रा वञ्छितारूपयोगिनी ।
एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरकर्मः ॥१२४॥



རེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ གཟུགས་དང་ལྡན།
 རེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གནས་ གྱི་ ཡང་།
 འདུས་པ་ནི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ ༡༨༭

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं सस्वशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥१२४॥

རེ་ན་ཉམས་ས་ རེ་ན་འགལ་ རེ་ན་གཅིག་པ།
 གྱི་ཚེས་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས་ས།
 སྒྲི་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 སྒྲི་བ་སྒྲི་ར་ཉམས་ས་ དང་ མཚམས་སྒྲི་ར་བྲལ། ॥ ༡༨༥

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः ॥१२६॥

ཡུལ་དུས་སྒྲི་ཅལ་ འཛིག་དེན་ དང་།
 ལུང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྒྲི།



ལྷོན་ བཅུ་ དེ་དག་ ལྷོན་ལག་ལ།

ལྷོན་ལག་སྐྱེས་ ལྷོན་བར་བྱ། ॥ १४५

प्रतिष्ठाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न *चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लोढेन किं फलं ॥१२७॥

དམ་བཅུན་ གདན་ཆིག་ དགེ་ ཉམས་པ།

ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ ལྷོན་མིན་ནས།

མཁ་ཆེར་ དབྱད་པ་ དཀར་བ་ཆིང་།

ལྷོན་པ་ དེ་ཡིས་ བཟུང་བྱ་ ཅི། ॥ १४॥

समुदायार्थशून्यं यत्तद्वपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཆོགས་པ་འདི་དོན་ ལྷོན་ ལྷོན་པ་ གང་།

དེ་ནི་ དོན་ ཉམས་ ཞེས་པར་ འདོད།

ལྷོན་པ་ ལྷོན་པ་ ལྷོན་པ་ཡིས།

བཟོད་ ཡས་ གཞན་ལ་ དེ་ ལྷོན་ནི། ॥ १४८



समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।

अमी गजंति जी[47b]मूता हरेरैराघतः प्रियः ॥१२६॥

ॐ ईं कृष्णं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

वदन् ॐ ईं ईं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ १२७ ॥

इदमस्यचित्तानामभिधानमनिन्दितं ।

इतरत्र कविः को वा प्रयुञ्जतेवमादिकं ॥१२८॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ १२९ ॥

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहतं ।

विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३०॥



རྒྱ་གཞི་ག་གས་ནི་རྒྱ་ལ་ཡང་།
 ལྷ་མ་ལྷི་མ་གཞན་འཛེམས་པ་།
 འགལ་བའི་རོད་ཅན་ཆིང་གྱི་སྟོན་།
 དོན་འགལ་ཞེས་པར་རབ་དུ་བརྩོད་༥ ॥ १३१ ॥

जहि शत्रुकुलं हृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न ख ते कोपि विद्येष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དགྲ་རིགས་མཐའ་དག་འཛེམས་པ་དང་།
 ལྷ་ཆོགས་ཁུར་འདི་རྒྱ་གུར་ཆིག་།
 འབྲུང་པོ་ཀྱན་ལ་བརྩེ་བ་ཅན་།
 ཁྱིེ་ལ་དགྲ་ནི་སུ་ཡང་མེད་༥ ॥ १३२ ॥

अस्ति काचिद्वयस्या सा साभिपंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदभिमतता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མཛོན་པར་ཆགས་ལྟན་སེམས་ལ་ནི་།
 སྐབས་དེ་འགར་ཞིག་ཡོད་པས་ན་།



གང་ལ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཆོག་ ཀྱང་ མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༥ ॥ १३३

परदाराभिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བུད་མེད་ལ་ མེད་པ།

འབགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས།

རེ་ཡི་ མོ་སྒྲིབ་ གཡོ་བ་ དག།

བདག་ནི་ ནམ་ནིག་ འཁྱུང་རྒྱུར་རམ ༥ ॥ १३४

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཅིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་།

ཁྱུང་པར་ མེད་པ་ ལྷར་ བརྗོད་པ།

གལ་ནི་ སྒྱུར་ཡང་ རབ་བསྒྲགས་པ།

རེ་ ནི་ རོན་ གཅིག་པར་ འདོད་ དཔེར ༥ ॥ १३५



उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्वियः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिजवः ॥१३६॥

श्रुद'घ' श्रुद'श्रुद' सु'अ'रुसस ।
दे'यी' अर'सुदे' अदे'अदे'उर ।
कु'अदे'र' श्रुगे'दद'अर'घ'दे ।
अव'अ' सु'अ'श्रुग'स' अदे'दग'मो ॥ १३६

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

हेस'सु'अदे' श्रुग'स' अद'अर' अर ।
ग'अ'दे' अग'अ'श्रुग' अदे'र' अदे'र' अ ।
अद' अदे'र' अ'अ'श्रुग'स' श्रुदे'अदे'दे ।
अदे'दे' अर'अ' अ'अ'श्रुग'स' अ'अ'अ ॥ १३७

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत आरुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुमाणिणी ॥१३८॥



འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁར་པ་ཡིས།
 བྱད་མེད་ མཆོག་ དེ་ བཅོས་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་གྱུར་མཛོས་ བཅོས་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྒྲིགས་ས་ བཅོས་པར་གྱུར། ॥ १३९

निर्णयार्थम्युक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 यथांसि दोष एवास्मै ससंशय इति स्मृतः ॥१३९॥

ཇིས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱར་བའི།
 ཆོག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གཡ་དེ་ན།
 ཐེ་ཆོས་ བྱད་པར་བྱེད་ ན་ འདི།
 ཐེ་ཆོས་ཅན་ ཞིས་ རབ་དུ་བཤད། ॥ १४०

मनोरथप्रियालोकरमलोलेक्षणे सखि ।
 आराद्धृत्तिरसौ माता न क्षमा द्विष्टुमीदृश ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དགའ་བ་ རྩ་བ་ ཡི།
 རེ་ལ་ མིག་གཡོ་ གྲོགས་མོ་དང་།



ཀྱང་ན་ འདུག་པ་ནི་ ས་ས་ འདིས།

འདི་འདྲ་ བཟ་བར་ བཟེད་ས་ཡིན། ॥ १८०

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।

स्थादलकार पद्यासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१॥

འདི་འདྲ་ གེ་ཚེས་ སྤྱད་ ཉིད་དུ།

གཡ་ནི་ འགའ་ནིག་ རབ་སྤྱར་ན།

འདི་ནི་ ཀྱང་ ཉིད་དུ་ འགྱར་གྱི།

དེ་ལ་ སྟོན་པེད་ འདི་ལྟ་སྟེ། ॥ १८१

पश्चादभ्यनङ्गजातकूलङ्घिनां तामनिन्दिताम् ।

कालेनत्र क[48b]ठोरेण प्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལུས་སྤྱིས་ སིན་ངའི་ གདུང་བ་ཡི།

རྩིས་གྱིས་ སནན་ཅིང་ ལུས་ ཅུབ་པེས།

ཟེས་པ་ནི་ ས་སྤྱད་ས་ དེ་སྟེང་།

ཁྱིད་ལ་ བདག་གི་ དེ་བས་ ཅི། ॥ १८२



कामार्ता घर्मसन्नज्योतिश्चयकरं वचः ।
युवानमाकुलीकर्तुमिति वृत्त्याह नम्रणा ॥१४३॥

अदेरे'वस' णादेर'रस' ङ'वस'णदु' ।
विस'व'देस'सेद' सुद'व'रे'केण ।
हृद'रुदे'स' सुस'व' अह्णस'व'र'दे ।
सु'सु'र' व'रु'से'स' सु'स'स' ॥ १०३

उद्देशानुगुणोऽर्थानामनुदेशो न चेत्कृतः ।
अपकमाभिधानन्तं दोषमाचक्षते बुधाः ॥१४४॥

सदेर'वसु'र' हिस'सु'सु'र'व'र'दे ।
णय'दे' हिस'वसु'र' स'सु'र' ।
दिस'व' रु'स'स'व'र' सदे'र'वदे'र'व'दे ।
सु'र'दु' दे'दे' व'ण'दे' दे'दे' ॥ १००

स्थितिनिर्माणसंहारहेतवो जगतामजाः ।
शम्भुनारायणाम्भोजयोनयः पालयन्तु वः ॥१४५॥



འགོ་བ་ན་མས་ཀྱི་ གནས་པ་ དང་ །

སྒྲུལ་དང་ འཛིག་ཀྱི་ མ་སྒྲིམ་པ་ །

བདེ་འབྱུང་ སྒྲིང་མེད་ ཅུ་སྒྲིམ་ཀྱི་ །

སྒྲི་གནས་ཅན་ གྱིས་ ཁྱེད་ན་མས་ སྒྲངས་ ॥ ༡༩༡

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।

कमलकुनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ཇིས་བར་ཤིས་བའི་ ཀྱང་ །

གང་ཡང་ གལ་ནི་ འབད་ སྒྲིམ་ན་ །

རིས་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྒྲིང་མེད་བར་ །

སྒྲིམ་པ་ན་མས་ རི་ སྒྲི་སྒྲི་ དབེར་ ॥ ༡༩༢

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।

आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः श्रणिकज्वरः ॥१४७॥

གཉིས་གདོང་པ་ དང་ ལུས་གདོང་དང་ །

ལུས་གདོང་ བློས་པ་ གསུམ་པོ་ ལ་ །



དང་པོ་སྤྲུལ་པ་མཛད་པའི་རིང་།
བར་པ་སྤྲུལ་ཅིག་གཏུང་བ་ལོ། ༡༩༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

སངས་ཀྱི་མཛད་པའི་ལམ་སྤྲུལ་པ་
མཛད་པའི་སྤྲུལ་པའི་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་
སྤྲུལ་པའི་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་
ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་ ༡༩༨

[49a] भवते भवते बाहुर्महीमणर्वशकरी ।
महाराजप्रजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་ལོ་
སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་
སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་
སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་སྤྲུལ་པའི་ ༡༩༩



दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।

कुरुते ललिताधूनप्रबालांकुरुशोभिनः ॥१५०॥

ह्रीं यीं दीं व्यसं ह्रीं चन्द्रं च दीं ।

ह्रीं चोसं ह्रीं च दीं चन्द्रं च दीं ।

दीं च चन्द्रं ह्रीं च दीं च दीं च दीं ।

सुं सुं सहेसं दं दं चन्द्रं च दीं ॥ १५० ॥

इत्यादिशास्त्रमाहारम्यदर्शनालसचेतसां ।

अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुष्कनि ॥१५१॥

हेसं ह्रीं चोसं चन्द्रं च दीं च दीं च दीं ।

ह्रीं चोसं ह्रीं च दीं चन्द्रं च दीं च दीं ।

ह्रीं चोसं ह्रीं च दीं चन्द्रं च दीं च दीं ।

ह्रीं चोसं ह्रीं च दीं चन्द्रं च दीं च दीं ॥ १५१ ॥

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।

तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्धेजनं यथा ॥१५२॥



ཚེགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་པའི་གནས།
 ཚེག་གི་གཅོད་སུམས་ ཇལ་བཅོ་ རིག།
 རེ་ཉམས་ གཅོད་སུམས་ ཉམས་པ་ ལྟེ།
 ཉན་པ་ དགའ་མིན་ ལྟེད་དེ་ དཔེར། ॥ ༡༥༤

स्त्रोणां संगतविधिमयमादित्यवंशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यक्लिष्टसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वी वहति नृप हत्यस्ति वीर प्रयोगः ॥१५३॥

བུད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བཅོད་པའི་ཚེག་ རེ་ཉམས་
 མེད་པ་འདིར།
 སུམས་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ སི་དབང་ ཉི་མའི་རིགས་
 འདིས་ ལྟ་བུད་ ལ་མེགས་ ལྟེན།
 བུ་དང་ བུ་མིན་ ས་ཚང་མེད་ལ་ ལུང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
 ལྟ་བུད་ཅིང་།
 མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གུར་ ས་འཛིན་
 ཅེས་པ་ དེ་ལྟར་ ལྟེན་བ་ཡོད། ॥ ༡༥༣



लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

है'ङ्'र' लै'ग'स'घ'र' ह्रै'स'च'य ।
झ'ग'स' रै'ग'है'र'दु' ऐ'स'च ।
दे'च'है'र' स'क'स'स'ह्रै'र' क'स'र'गु'र' स'घ'र ।
है'ग'है'र' ऐ'स'र' च'है'र'च'है'र' ॥ ४०८

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुज्यते ।
ध्वजिनी तस्य राक्षः केनूदस्तजलदेत्यदः ॥१५५॥

दे'ङ्'र' य'र' क'च'र' तु'व ।
ह्रै'र'च'ग'स'र'र' क'स'स' सै'ह्रै'र'दे ।
कृ'य'र' दे'य' कृ'य'स'क'र'र'र ।
दे'ग'गो'स' ह्रै'र'है'र' च'ह्रै'र' ऐ'स' र'है'र' ॥ ४०९

वर्णानां मूनानाधिक्ये गुरुलम्बयथास्थितिः ।
यत्र तद्विभक्तं स्यादेव दोषः मुनिन्दिनः ॥१५६॥



གང་དུ་ ཡི་གེ་ཅན་ལྷག་དང་ ।
 ལྷི་ཡང་ ཇི་ལྟ་བཞིན་ མི་གཤམ་ ।
 དེ་ནི་ སྤེབ་སྤྱོད་ ཉམས་པ་ ལྟེ་ ।
 ལྟོན་ འདི་ ཤིན་དུ་ སྤྲོད་བཤོམ་ ॥ २४५

हनुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीन्मूनवर्णता ।
 सहकारस्य किसलयान्पार्श्वानीत्यधिकाक्षरम् ॥ १५७॥

ལྷི་བཤོམ་འདི་ཟེར་ བསིལ་བསམ་ ।
 རིག་ཅེས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ ।
 ས་ཏ་ཀུ་རའི་ལོ་འདབ་ གསམ་པ་ནམས་ ।
 ལྷུ་མ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་བཤོམ་ ॥ २४६

कामेन याणा निशिता विमुक्ता मृगेश्वणास्त्रित्ययथागुक्तं ।
 मदनयाणा निशिताः पतन्नि मृगेश्वणास्त्रित्ययथागुक्तं ॥ १५८॥

འདོད་བསམ་ སདའ་རྩོན་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ།
 རྣམ་པར་འབངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན་ ।



མཛེས་པའི་མིག་ཅན་ དག་ལ་ ཟློས་བྱེད་ཀྱི་ ।

མདའ་སྒྲུན་ རྒྱང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན་ ॥ ༡༣༤

न संहितां धिवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।

तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྐྱུས་པ་ བཛྲེན་པར་ སྤི་འདྲོད་ཅེས་ ।

རྟོག་ལ་ མཚམས་སྦྱོར་མེད་པ་ གང་ ।

ཡ་ཟློས་ ལ་ཟེགས་ རྒྱ་མེད་པ་ ।

དེ་ནི་ མཚམས་སྦྱོར་བྲལ་ ཞེས་ བཞུན་ ॥ ༡༣༥

मन्दानिलेन चरता भङ्गनागएडमएडले ।

लुप्तमुद्ग्रेदि [50a]धर्माभ्यो नभस्यस्मन्मनस्यपि ॥१५६॥

སཁའ་ དང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ ।

རྒྱང་ནི་ དལ་བྱ་ རྒྱ་བ་ ཡིས་ ।

བྱད་མེད་ འགྲམ་པའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ ।

རྒྱ་གྱི་རྒྱ་རྒྱས་ སེལ་བར་བྱེད་ ॥ ༡༣༦



[मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिमञ्जनौ प्रिये ।]
आसु रात्रिष्विनि प्राज्ञैरज्ञातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

. |
. |

अर्हन्ते अद्वैत उत अद्वैतः ।
आप्तव्यं भवत्यस्य वदन्ति गच्छन्ति ॥ १६२ ॥

देशोऽद्विषनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्निवर्त्तवः ।
नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६३॥

द्विषन्ते अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं ।
द्विषन्ते अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं ।
अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं ।
अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं अद्वैतं ॥ १६४ ॥

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिलोकसंज्ञिता ।
हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६५॥



འབྲུང་པོ་ རྒྱ་ དང་ མི་རྒྱ་བའི།
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནོ།
 རིགས་པ་ བཅུན་རིགས་ རིག་ བཅུག་ཉིད།
 སྒྲིམ་ བཅས་ ལ་སྤྱངས་པ་ ལྷང་ ཉིད་ དེ། ॥ १६१

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ བྲགས་པ་ བའིན།
 མིན་པར་ བལ་དེ་ རབ་ལྷགས་ན།
 སྒྲིམ་པ་མཁའ་པོ་ བཟ་མིད་ ལས།
 འདི་ནི་ ལྷལ་ མིགས་ འབལ་ཉིས་ བཟོད། ॥ १६२

कपूरपादपास्पर्शी सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमतंगजा ॥१६५॥

ལ་ལྷར་ ཀང་འབྲུང་ལ་ རིག་བའི།
 མ་ལ་ལ་ ལྷང་ སྤྱི་བཟང་ཅན།



ཀ་ཡི་རྒྱ་ ཡི་ རྒྱ་ས་སྤྱེས་པའི།

སྤྱེས་པོ་ རྒྱ་རི་ རི་རྒྱ་ས་ སང་ ॥ १६४

चोलाः कालागुह्याम. कावेरीनीरभूमयः ।

इति देशविरोधिन्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཅོ་ཡ་ཀྱ་བེ་རི་ རོ་གས་སའི།

ཨ་ཀ་རུ་ རི་རྒྱ་པོ་ལྟོ། ॥

ཞེས་པ་ ལུལ་ རང་ རྒྱ་པ་བ་ཡི།

ཆོག་གི་ རྒྱུག་པ་ རི་རྒྱ་ ལྟོ། ॥ १६५

पद्मिनी नक्तमुषिद्रा स्फुटत्यहि कुमुदती ।

मधुहत्फुल्लनिबुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥१६७॥

པདྨ་ཅན་རི་ སུ་རྒྱ་པོ་ ལྟོས།

ཉིན་པར་ ཀྱ་སྤྱད་ལྷན་པ་ གསལ།

དབྱིན་རི་ རི་རྒྱ་པ་ རང་ལྟོས།

སེས་ཀ་ རྒྱ་རི་ ལྟོན་ ལྟོས་ བཞིབས། ॥ १६१



श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः स्नाध्यचन्दनः ॥१६८॥

८८'वर्षे' श्रु'र्' द्रु'र' सङ्ग'रेष ।

श्रु'र' र्' स'गु'सु'ष'व' श्रु ।

द्रु'र'श्रु'र' श्रु'ष' र्'स'स'र ।

द्रु'र'र्' र'र' व'सु'ष'व'र'रेष ॥ १६८

इति कालाधिरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलाधिरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

शेष'व' र'र'र'र' द्रु'र' द्रु'र' ।

र'ग'व'व'र'र'ग'र' व'सु'र'व'र' ।

श्रु'र'र' द्रु'र' द्रु'र' र'ग'व'व'र'र' ।

र'र'र' व'सु'र'v'र'ग'र' द्रु'र' ॥ १६९

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूष्णसप्तस्वरः सोऽयं मिश्रमार्गः प्रवर्त्तते ॥१७०॥



དཔལ་ རང་ གླིང་པའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི།
 གནས་ཅན་ ཁྱོད་ ཡ་མཚན་ནོ།
 དབྱངས་ བདུན་ རྫོགས་པ་ འདི་དག་ནི།
 ག་དད་ ལས་དུ་ རབ་དུ་འཇུག ॥ १०

इत्थं कलाचतुःषष्टौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिल्लेहे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྐྱུ་རྩ་ལ་དུག་ཅུ་བཞིར།
 འགལ་བ་ ཡིགས་པར་ རྫོགས་པར་བྱ།
 སྐྱུ་རྩ་ལ་ ཡིངས་སུ་བཅད་པ་ལས།
 དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྲུར ॥ १०१

आधूनकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोथमेरुण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

སྤང་པོ་དག་ནི་ རལ་བ་ གཡོ།
 ཉ་ཡི་རྩ་ནི་ རོ་བ་ ཡིན།



ཨེ་རུ་འདི་ སྤྲིང་པོ་ ལྟེ།

སྤྲིང་པོ་ ལྟེ་པོ་ སྤྲིང་པོ་མེད ༥ ॥ ११२

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगहितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཨེ་པོ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པོ།

ཉིད་ ནང་ འགལ་པོ་ ཀུན་གྱིས་སྤྲོད།

རིགས་པོ་ ཞིས་བྱ་ གཏན་ཆོགས་ཀྱི།

རིག་པོ་དང་འགལ་ བཤད་པར་བྱ། ॥ ११३

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।

तथापि सा चकोगक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི།

གསུངས་པོ་ བདེན་མོད་ དེ་ལྟ་ནའང་།

ཅ་གོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ།

བདག་གི་ སྤྲིང་པོ་ ན་དྲུང་ གནས། ॥ ११४



कापिलैरसदुद्धतिः [51a] स्थान एवोपवर्ण्यते
असनामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिर्दृष्टाः ॥१७५॥

स्येद'सु'व'दसस'स्येद'दसस'गु ।
सु'व' दसस'व'द'द'द' व'द'द' ।
उ'सु'द' व'द'व'उ'द'द'सस'गु'द'स' ३ ।
स्येद'दसस' व'द'द' सु'व' व'द'द' ॥ १७५ ॥

मतिर्न्यायविरोधस्य संगे सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

दे'व'स'द'व'द'द' ३० ३० ३० ३० ३० ।
सु'व'स' ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
दे'द'स' सु'द' ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमहिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥



མེ་ནི་ བཞག་པ་ མ་ཡིན་ ཡང་།
 བྱ་སྤྱེས་ བྱས་ཟེ་ མ་ཉམས་པ་འི་
 སྤྱོད་པས་ བཞག་པ་ འདི་དག་ནི་
 བེ་ལུ་ན་རྩེ་ མཚོད་ སྤྱིན་བྱེད་ ॥ १११

असाधनुपनीतोपि वेदानधिजगो गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ ཚོ་ག་ མ་བྱས་ ཀྱང་།
 སྤྱ་མ་དག་ལས་ རིག་བྱེད་ བཏུགས་
 རང་བཞིན་ དག་པའི་ཤིལ་དག་ནི་
 འདྲ་བྱེད་ གནས་ལ་ རྩིས་པ་མེད་ ॥ ११२

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषमणानां गुणवीर्यं विगाहते ॥१७९॥

སྤྱོད་ནི་ མཐའ་དག་འདི་ལ་ ཡང་།
 དེས་ འགའ་ སྤྱན་ངག་མཁན་མཁས་པས་



སྒྲིན་གྱི་ གྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས
 ཡོན་དར་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛིན་ ॥ ༡༡༠

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जम्बिरे ।
 आर्द्रांशुकप्रवालानामास्पर्शं सुरशासिनां ॥१८०॥

ཀྲུ་ལ་ཐོ་ རི་ཡི་ ས་གུ་ཡིས་ རི་ ।
 རི་ཡི་ སྒྲིང་རྩ་ རྩ་རྣམས་ཀྱི་ ।
 སྒྲིན་པ་ ཡ་པ་འདབ་ གོས་སྒྲུབ་ དང་ ।
 རྩ་པ་དག་གི་ གནས་སྤྱ་གྱུར་ ॥ ༡༡༠

राज्ञां विनाशपिशुनव्यचारं खरमारुतः ।
 धुन्धन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

ཀྲུ་ལ་ཐོ་ འཛིག་པ་ གསལ་སྒྲིང་པ་ ।
 དག་པ་ཡི་ རི་ རྩང་དག་རྩ་ ।
 འདབ་ བདུན་ལས་ འགྲངས་ སྒྲིང་སྒྲིང་ཅིང་ ।
 ཀ་དཔྱ་ཡི་ རྩ་པ་དང་ འཕྲོགས་ ॥ ༡༡༡



दोलातिग्रेरणवस्त[5।b]वधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवेषम्याद्रेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

सुनिषा'गुिषा' र'व'सु'य' सु'ग'य'यि ।
सु'व' सु'द'सि'द' र'स' व'ह'द' सु ।
सु'व'स' स'स'स'स'य'स' र'द'द'स'र'गुि ।
र'ग'स'य'द'ग' र' र'स'य'य'स'सु'द' ॥ १८२ ॥

ऐन्दवादर्चिर्नयः कामी शिशिरं हव्यवाहनं ।
अथलाविरहलेशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

सु'व'र' र'द'स'र' य'स' य'स'य'य' ।
य'स'य'सु' र'ह'द'य'र' र'd'd's'r' र' ।
सु'द'सि'द'द'स'y'y' s'd's'c'c'g'g'g' ।
r'g'g'g'g'g' r'd'c'c'c'g'g' s'v'v'v'v'v' ॥ १८३ ॥

प्रमेयोप्यप्रमेयोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूक्तये ॥१८४॥



གནམ་བྱ་ ཡན་ ཡང་ གནམ་བྱ་མིན།

ར་ལྔ་ཡིན་ ཡང་ ར་ལྔ་ མིན།

གཅིག་ཉིད་ཡིན་ ཡང་ གཅིག་ཉིད་མིན།

སྒྲ་ཆོགས་ གཞུགས་ བྱིད་ལ་ བྱག་འཛམ་ ॥ ༡༤༥

पञ्चानां पाण्डुपुत्रानां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।

सतीनामग्रणीश्चासीद्देवो हि विधिरीदृशः ॥१८५॥

སྒྲ་བསེང་བྱ་ལྔ་ དག་ གི་ནི།

རྒྱང་ས་ ལྔ་ཡིན་ བྱ་མོ་སྒྲེ།

དག་ག་རྣམས་ཀྱི་ སུ་ཆོག་དུ་ བྱུང་།

འདི་འདྲ་ ལྔ་ཡི་ ལྔ་བ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༤༦

शब्दार्थालंक्रियाश्चिन्ना मार्याः सुकरदुष्कराः ।

गुणा दोषाश्च काव्यानामिति संक्षिप्य दर्शिताः ॥१८६॥

སྒྲ་དོན་ ལྱིན་ ཅི་ བྱ་བ་ དང་།

བྱ་སྒྲ་ བྱ་དགའ་ དག་གི་ལས།



སྒྲུབ་ངག་རྒྱལ་མ་གྱི་ ཡོན་ཏན་ ལྷོན་ ।

རི་ལྗང་ སངོར་བརྒྱལ་ རབ་དུ་བརྒྱན་ ॥ ༡༤༩

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्धशवर्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरक्षणाभि

धन्यो युषेव रमते लभते च कीर्तिम् ॥ १८७

སྒྲུབ་བྱིན་ བརྒྱན་བའི་ལས་འདིས་ ལྷོན་ དང་ ཡོན་ཏན་དག་ ।

རབ་དུ་རྒྱལ་མ་བའི་ལྷོ་ཅན་ ལྷལ་བཟང་དབང་གྱུར་བའི་ ।

རྒྱལ་ དང་ སངོར་བར་འགྲོགས་བྱས་ རང་སྒྲིག་ས་ དག་དང་ ।

ལང་རྒྱུ་ཅན་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་བར་འགྱུར་ ॥ ༡༥༠

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞིས་པ་སྒྲོབ་དཔེན་དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ སངོར་བ་ སྒྲུབ་ངག་གི་ཀྱན་ལས་

བྱ་དགའི་རྒྱལ་བར་བཅད་པ་ལྷེ་ ཡེ་བུ་ གསུམ་པ་ རྒྱལ་ས་ ॥



CORRIGENDA

Chap. I. 17° *बलुनेः for ब*लुनेः ; 27° ལ་གྲ་སེལ་ for ལ་གྲ་སེལ་ ;
 39° साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85° विद्यते for *क्षुट् ;
 86° भवाहरा for भवादरा ; 98° स्तनन्त्यो for स्तनव्यो.

Chap. II. 14° དེ for དེ ; 37° གཤོང་ for གཤོང་ ; 40° स्पर्श for
 स्पर्श ; 45° मौक्ष for मौक्ष ; 66° नलाचिषः for नलाचिषः ; 77° इदमार्द्र for इद-
 मद्र ; 9° नतिते for नतिते ; 86° राजहंसो for राजहंसा ; 86° बह्ना for बह्ना ;
 86° སྤྲོད་ for སྤྲོད་ ; 91° निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ;
 125° འཛིན་ for འཛིན་ ; 142° གཡ་ for གཡ་ ; 182° མཁུ་སྤྱུ་
 for མཁུ་སྤྱུ་ ; 206° मोयं for मायं ; 207° རྩེད་ for རྩེད་ ; 233° འཛུ་ for
 འཛུ་ ; 234° *द्विष्टं for द्विष्टं ; 237° विकार्ये for विकार्य ; 279° སྤྲོ་ for
 སྤྲོ་ ; 282° रमवत्त for रमवत्त ; 287° གུར་ for གུར་ ; 306° दशिता
 for दशिता ; 312° དཔེར་བརྗོད་ for དཔེར་བརྗོད་ ; 313° གསལ་བར་སྤྲོད་ for
 གསལ་བར་སྤྲོད་.

Chap. III. 17° རྩོད་ for རྩོད་ ; 19° वग्यन्ते for वग्यन्ते ; 13° स्प्रुशेहता
 for स्प्रुशेहता ; 31° རྩོད་ for རྩོད་ ; 39° སྤྲོ་ for སྤྲོ་ ; 54° वज्यः for वज्यः ;
 68° རབ་ for རབ་ ; 69° གུར་ for གུར་ ; 80° གུན་ for
 གུན་ ; 83° དབ་ for དབ་ ; 156° बाणा for कारण ; 184° विश्वमूतये
 for विश्वमूतये ; 185° पाण्डुपुत्राणां for पाण्डुपुत्राणां.